वैद्यरत्नकी भूमिका।

इस संसारमें शरीरका आरोग्य रहना भी धर्मअर्थका साधन कहा है "यतः–धर्मार्थकाममोक्षाणां शरीरं साधनं स्मृतम्" कारण कि, शरीरमें व्याधिके होनेसे मनुष्य किसी कार्यके करनेको समर्थ नहीं रहता है. इसीसे शरीरको आरोग्य रखना परम पुरुषार्थ है लोकमें प्रसिद्ध है कि, 'एक तन्दुरुस्ती हजार न्यामत' इस शरीरको नीरोग रखनेकेही निमित्त भगवान् धन्वन्तरिने प्रगट होकर आयुर्वेदका प्रचार किया इनके ग्रंथकी अवलम्बनकर ऋषिमुनियोंने अनेक ग्रंथ रचे जिनकी चिकित्सासे आरोग्यहो प्राणी सुखसे कालयापन करनेलगे आयुर्वेदके प्राचीन ग्रंथोंमें चरक, सुश्रुत और वाग्भट हैं। यह ग्रंथ परिश्रमसाध्य और दीर्घकालमें पाठमें आतेहैं इसकारण ऋषिमुनि और महात्माओंने सुखसे बोध होनेके निमित्त सबके संक्षेपमें सार लेकर छोटे छोटे ग्रंथ निर्माण किये जिनके पठन पाठन कर थोडेही कालमें मनुष्य सुबोध हो सके हैं इस प्रकारके ग्रंथ संख्यामें थोडे नहीं हैं परन्तु कालक्रमसे ऐसा समय आनकर प्राप्त हुआ कि, जिसके पास जो पुस्तक थी उसने अपने जीते जी उस ग्रंथका प्रकाश न किया बहुत क्या? दूसरोंको दर्शनतक भी न कराया। उनके उपरान्त वह पुस्तक यातो पानीमें गलगई या कहीं पसारीकी दुकानकी पुडिया बाँधनेके काममें आई इस प्रकारसे अच्छी २ विद्याओंकी सहस्रों पुस्तकें नष्ट हुईं जिनका नाममात्र ग्रन्थान्तरोंमें पाया जाता है, होसकी और भी लोप होजाती परन्तु जबसे यन्त्रालयप्रचार हुआ तबसे जो पुस्तक जहां मिलीगई यत्न व्ययद्वारा लाकर यन्त्राधीशोंने ग्रंथोंका छापना

आरंभ किया और लोप होतेहुये ग्रंथोंको बचाया अभी थोडे दिनकी बात है कि, वैद्यकके तीनचारही ग्रन्थ लभ्य होतेथे परन्तु यन्त्राधिपतियोंके परिश्रमसे विशेषकर "श्रीवेंकटेश्वर" यंत्रालयाधीशका ध्यान इस ओर अधिक होनेसे उनके यंत्रालयमें बहुतसे ग्रंथ वैद्यकके प्रकाश होचुके हैं और होते जाते हैं उनकी प्रतिज्ञा है कि, जहांतक मिले मूल या भाषाटीका कराकर हम वैद्यकके उपकारी ग्रंथोंको प्रकाश करेंगे और चरक सुश्रुत वाग्भट आदि बडेग्रंथ प्रकाशित भी होचुके हैं शेष होते जाते हैं वैद्यकके छोटे ग्रंथोंमें श्रीयुत केदारभट्टसंगृहीत "वैद्यरत्न" भी एक बडा उपयोगी सिद्ध योगोंसे युक्त है इसमें संक्षेपसे सब रोगोंका निदान, चिकित्सा आदि लिखी है जिसकी एकप्रति प्रत्येक गृहस्थ अपने पास रखनेसे बहुतलाभ उठा सकता है बहुत क्या! सिद्ध औषधी संक्षेपसे सबही लिख दी हैं यह पुस्तक लिखी सौवर्षसे अधिककी हमको प्राप्तहुई जिसको देखकर परोपकारी समझकर इसका भाषाटीका निर्माण किया और जगद्विख्यात परमोदार सेठजी श्रीयुत खेमराज श्रीकृष्णदासजीको सर्वस्वत्वसहित समर्पण करदिया शेषमें पाठक महाशयोंसे प्रार्थना है कि, जहां कहीं कुछ दृष्टिदोष हो उसे अपनी उदारतासे क्षमा कर गुणग्राही बनें। शेषमें ताराचन्द पुजारीको धन्यवाद देना उचित है कि, उनके द्वारा इस ग्रंथकी एक हस्तलिखित पोथी हमको प्राप्त हुई।

आपका-
पं० ज्वालाप्रसाद मिश्र,
दीनदारपुरा-मुरादाबाद.

सप्तम प्रकाश ७.

विषय.	पृष्ठांक.

पंचम प्रकाश ५.

षष्ठ प्रकाश ६.

सप्तम प्रकाश ७.

वैद्यरत्नकी अनुक्रमणिका।

इत्यनुक्रमणिका समाप्ता ॥

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ वैद्यरत्न भाषाटीका समेत ।

योगेश्वरंशिवंनत्वापार्वतीवल्लभंहरम् ।
सज्जनानांविनोदायवैद्यरत्नंकरोम्यहम् ॥ १ ॥

नाडीपरीक्षा ।

रोगाक्रान्तशरीरस्यस्थानान्यष्टौपरीक्षयेत् ।
नाडीमूत्रंमलंजिह्वांशब्दस्पर्शदृगाकृतिम् ॥ १ ॥

अर्थ-वैद्य रोगीमनुष्योंके आठ स्थानोंकी परीक्षाकरे. नाडीपरीक्षा, मूत्रपरीक्षा, मलपरीक्षा, जिह्वापरीक्षा, शब्दपरीक्षा, स्पर्शपरीक्षा, नेत्रपरीक्षा और आकृतिकी परीक्षा करे ॥ १ ॥

नाडीज्ञानंविनावैद्योनलोकेपूज्यतांव्रजेत् ।
अतश्चातिप्रयत्नेनशिक्षयेन्मतिमान्नरः ॥ २ ॥

अर्थ-नाडीज्ञानके बिना वैद्य लोकमें पूजित नहीं होता है इसकारण बुद्धिमान प्रयत्नसे नाडीशिक्षा करे ॥ २ ॥

त्यक्तमूत्रपुरीषस्यसुखासीनस्यरोगिणः ।
अन्तर्जानुकरस्यापिसम्यङ्नाडीप्रबुध्यते ॥ ३ ॥

अर्थ-मूत्रपुरीषत्यागे हुए, सुखसे बैठे हुए, भीतर घुटनों के हाथ किये, रोगीकी नाडी सुखसे जानी जाती है ॥ ३ ॥

सव्येनरोगधृतिकूर्परभागभाजा ।
पीड्यायदक्षिणकरांगुलिकात्रयेण ॥

वैद्यरत्नकी अनुक्रमणिका ।

इत्यनुक्रमणिका समाप्ता ॥

लीमें मध्यस्पर्श होनेसे वातकी, बीचकी अंगुलीमें तीक्ष्ण स्पर्शसे पित्तकी, अन्तकी अंगुलीमें मन्दस्पर्श होनेसे कफकी नाडी जान्नी ॥ ७ ॥

पित्तनाडीभवेदुष्णाकफनाडीतुशीतला ।
वातनाडीभवेन्मध्याएवंस्पर्शविनिर्णयः ॥ ८ ॥

अर्थ-पित्तकी नाडी स्पर्शकरनेसे गरम, कफकी शीतल वातकी नाडीका स्पर्श मध्यम होता है यह स्पर्शका निर्णय है ॥ ८ ॥

वाताद्वक्रगतानाडीचपलापित्तवाहिनी ।
स्थिराश्लेष्मवतीज्ञेयामिश्रितेमिश्रिताभवेत् ॥ ९ ॥

अर्थ-वात तिरछी बहती है इसकारण उसकी नाडी टेढी चलती है अग्नि चंचल होनेसे ऊपरको चलती है इस कारण पित्तकी नाडी ऊपर चलती है तथा चंचल होती है जल नीचेको जाता है प्रबल नहीं है इसकारण कफकी नाडी स्थिर है और दोषोंके मिलनेसे नाडी मिश्रित चलती है॥९॥

सर्पजलौकादिगतिंवदन्तिविबुधाःप्रभञ्जनेनाडीम् ।
पित्तेचकाकलावकभेकादिगतिंविदुःसुधियः॥१०॥

अर्थ-सर्प जोककी गतिसे वातकी तथा बिच्छूकी गतिसे भी वातकी नाडीको जान्नी, पित्तकी नाडी कौए, लवा और मेंडककी गतिसे चलती है ॥ १० ॥

राजहंसमयूराणांपारावतकपोतयोः ।
कुक्कुटस्यगतिंधत्तेधमनीकफसंगिनी ॥ ११ ॥

अर्थ-राजहंस,मोर, पारावत, कबूतर और कुक्कुटकी गतिसे यदि नाडी चले तो कफके विकारवाली जाननी ॥११॥

मुहुःसर्पगतिंनाडींमुहुर्भेकगतिंतथा ।
वातपित्तसमुद्भूतांतांवदन्तिविचक्षणाः ॥ १२ ॥

अर्थ-यदि नाडी वारंवार सर्पगति और वारंवार मेंडककी गतिसे चले तो बुद्धिमानोंने उसको वातपित्तसे उत्पन्न हुई नाडी कहाहे ॥ १२ ॥

सर्पहंसगतिंतद्वद्वातश्लेष्मगतांवदेत् ।
हरिहंसगतिंधत्तेपित्तश्लेष्मान्विताधरा ॥ १३ ॥

अर्थ-सर्प, हंसकी गतिसे चलनेवाली नाडी वात और कफकी कहनी और हंसकी गतिसे चले तो पित्त और कफकी जाननी ॥ १३ ॥

काष्ठकुट्टोयथाकाष्ठंकुट्टतेचातिवेगतः ।
स्थित्वास्थित्वातथानाडीसन्निपातेभवेद्ध्रुवे १४ ॥

अर्थ-जिस प्रकार काठको कूटनेवाला काष्ठकुट्टनाम पक्षी बडे वेगसे काठको कूटताहै इसप्रकार ठहर ठहरकर नाडी भयंकर सन्निपातमें चलती है ॥ १४ ॥

वाताधिक्येभवेन्नाडीप्रव्यक्तातर्जनीतले ।
पित्तव्यक्तामध्यमायांतृतीयांगुलिगाकफे ॥ १५ ॥

अर्थ-वातकी अधिकतामें नाडी तर्जनी अंगुलीके नीचे चलती है, पित्तमें मध्यमाअंगुलीके नीचे और कफमें तीसरी अंगुलीके नीचे चलती है.तीन अंगुली धरकर नाडी देखी जाती है इसमें यह क्रम जाना ॥ १५ ॥

तर्जनीमध्यमामध्येवातपित्ताधिकेस्फुटा ।
अनामिकायांतर्जन्यांव्यक्तावातकफेभवेत ॥१६॥

अर्थ-तर्जनी और मध्यमाके नीचे चलेतो-वातपि

त्तकी अधिकता कहनी अनामिका और तर्जनीके मध्यमें वात और कफकी नाड़ी जाननी ॥ १६ ॥

मध्यमानामिकामध्येस्फुटापित्तकफेधिके ।
अंगुलित्रितयेपिस्यात्प्रव्यक्तासन्निपातिनः॥१७॥

अर्थ-मध्यमा और अनामिका अंगुलीके मध्यमें पित्त और कफकी नाड़ी जाननी तीसरी अंगुलीके मध्यमें सन्निपातकी नाड़ी जाननी ॥ १७ ॥

वाताद्वक्रगतिर्नाडीपित्तादुत्प्लुत्यगामिनी ।
कफान्मन्दगतिर्ज्ञेयासन्निपातादतिद्रुता ॥ १८ ॥

अर्थ-वातकी अधिकतामें नाड़ी वक्रगतिसे चलती है, पित्तकी अधिकतामें कूदतीहुई चलती है, कफसे मंदगति और सन्निपातमें बड़ी शीघ्रतासे चलती है ॥ १८ ॥

वक्रमुत्प्लुत्यचलतिधमनीवातपित्ततः ।
वहेद्वक्रंचमंदंचवातश्लेष्माधिकत्वतः ॥ १९ ॥

अर्थ-वात और पित्तकी अधिकतामें टेढ़ी और कूदती हुई चलती है, वात और कफकी अधिकतामें टेढ़ी और मंदगतिसे चलती है ॥ १९ ॥

उत्प्लुत्यमंदंचलतिनाडीपित्तकफेधिके ।
स्पन्दनेनैकमानेनात्रिंशद्वारंयदाधरा ॥ २० ॥

अर्थ-पित्तकी और कफकी अधिकतामें नाड़ी कूदती हुई मन्द २ चलती है जब कि नाड़ी एकही मानसे बराबर [illegible] ॥

[illegible] ...नान्यथा ।
[illegible] ...॥२१॥

अर्थ-और अपने स्थानपर स्थितरहै तो रोगीका जीवन जाना, अन्यथा नहीं और जो नाडी रुक रुक कर चलै वह प्राणघातिनी जानो ॥ २१ ॥

जिह्मंजिह्मंकुटिलकुटिलंव्याकुलंव्याकुलंवा ।
स्थित्वास्थित्वावहतिधमनीयातिनाशंचसूक्ष्मा ॥
नित्यंकंठेस्फुरतिपुनरप्यंगुलीनांस्पृशेद्वा ।
भावैरेवंबहुविधितरैःसन्निपातादसाध्या ॥ २२ ॥

अर्थ-टेढी टेढी कुटिल वारंवार व्याकुलतासे युक्त ठहर ठहरकर चलै फिर सूक्ष्म रूपसे लय होजाय नित्य कंठमें स्फुरायमाणहो फिर कुछ कालमें अंगुलीको स्पर्शकरे इसप्रकारके अनेक भावोंसे चलनेवाली नाडी सन्निपातकी जानो यह असाध्य है ॥ २२ ॥

पूर्वंपित्तगतिंप्रभंजनगतिंश्लेष्माणमाबिभ्रती ।
स्वस्थानाद्भ्रमणंमुहुर्विदधतीचक्राधिरूढेवया ॥
भीमत्वंदधतीकलापिगतिकासूक्ष्मत्वमातन्वती ।
निःसाध्यांधमनींवदन्तिमुनयोनाडीगतिज्ञानिनः२३

अर्थ-पहले पित्तकी गति फिर पवनकी गति फिर कफकी गति को धारण करै अपने स्थानसे वारंवार भ्रमती हुई चक्रकी समान भयंकरपना धारण करती हुई मोरकी चाल चलती हुई कभी अत्यन्त सूक्ष्म होती हुई नाडीके ज्ञानवाले वैद्य मुनि असाध्य कहतेहैं ॥ २३ ॥

गंभीरायाभवेन्नाडीसाभवेन्मांसवाहिनी ।
ज्वरवेगेनधमनीसोष्णाकोपवतीभवे- ॥ -- ॥

अर्थ-गंभीरा नाडी मांसवाहिनी जाननी और ज्वरके वेगसे नाडी उष्णता लिये कोपवाली होतीहै ॥ २४ ॥

कामक्रोधाद्वेगवहाक्षीणाचिन्ताभयप्लुता ।
मन्दाग्नेः क्षीणधातोश्चनाडीमन्दतराभवेत् ॥२५॥

अर्थ-कामक्रोधसे वेगवाली, चिन्तासे क्षीण और भयसे कूदतीहुई चलती है मन्दाग्नि और क्षीण धातुवालेकी नाडी अत्यन्त मन्द चलती है ॥ २५ ॥

असृक्पूर्णाभवेत्कोष्णागुर्वीसामागरीयसी ।
लघ्वीवहतिदीप्ताग्नेस्तथावेगवतीमता ॥ २६ ॥

अर्थ-रुधिरसे पूर्ण कुछ गरम होती है आमयुक्त होनेसे भारी चलती है प्रदीप्त अग्नि होनेसे हलकी और वेगवाली होती है ॥ २६ ॥

चपलाक्षुधितस्यापितृप्तस्यवहतिस्थिरा ।
शीघ्रानाडीमलापातेमध्याह्नेऽग्निसमोज्वरः ॥२७॥

अर्थ-भूंखेकी चपल और तृप्तहुएकी स्थिर चलती है मलपातमें शीघ्रगतिसे मध्याह्नमें जिसको अग्निकी समान प्रबल ज्वरहो ॥ २७ ॥

दिनैकंजीवितंतस्यद्वितीयेम्रियतेध्रुवम् ।
मरणेडमरूकाराभवेदेकदिनेनच ॥ २८ ॥

अर्थ-वह एक दिन जीता है, दूसरे दिन अवश्य मरजाता है. डमरूके आकारवाली नाडी होनेसे प्राणीका दिनमें मरण होजाता है ॥ २८ ॥

अथ जिह्वापरीक्षा ।

पीताजिह्वाखरस्पर्शास्फुटितामारुताधिके ।
रक्ता॰ [illegible] ॥२९॥

अर्थ-द्वन्द्वदोषमें नेत्रोंका रंगभी मिलाहोता है, श्याम-
वर्ण टेढे तन्द्रा और मोहसे युक्त ॥ ३३ ॥

रौद्रंचरक्तवर्णंचभवेच्चक्षुस्त्रिदोषतः ।
एकंचक्षुर्यदाभीमंद्वितीयंमीलितंभवेत् ॥ ३४ ॥

अर्थ-रौद्र लालवर्णके नेत्र त्रिदोषसे होते हैं जब एक
नेत्र भयंकर और दूसरा मुंदाहुआ हो मिचारहे ॥ ३४ ॥

त्रिभिर्दिनैस्तथारोगीसयातियममन्दिरम् ।
ज्योतिर्विहीनंसहसारोगिणोयस्यलोचनम् ॥३५॥

अर्थ-ऐसा रोगी तीन दिनमें मरजाता है, जिस रोगी
के नेत्र सहसा प्रकाशहीन होजाँय ॥ ३५ ॥

ईषत्कृष्णंसनियतंप्रयातियमशासनम् ।
सरक्तंकृष्णवर्णंश्चरौद्रंश्चप्रेक्षतेयदा ॥ ३६ ॥

अर्थ-कुछएक श्यामवर्ण हो वह अवश्य मरजाताहै जब
रक्तवर्ण कृष्णवर्ण और रौद्र दृष्ट होने लगे अर्थात् लाल,
काला और रौद्रवर्णके रूप वस्तुओंका दीखने लगे ॥३६॥

एतैर्लिंगैर्विजानीयान्मृत्युमेवनसंशयः ।
एकदृष्टिश्चैतन्योभ्रमत्स्फुरिततारकः ॥ ३७ ॥

अर्थ-तो इन चिन्होंसे रोगीकी मृत्यु जाननी इसमें
संदेह नहीं जिसकी एक दृष्टि होजाय अर्थात् टकटकी
बांधकर देखनेलगे, भ्रमहो, नेत्रकी तारका स्फुरायमान
होजाय (अचेतनता प्राप्त होजाय) ॥ ३७ ॥

- एकरात्रेणनियतंपरलोकंप्रपद्यते ॥ ३८ ॥

अर्थ-सो ऐसा रोगी एकही रात्रिमें मरजाता है ॥ ३८॥

[illegible]।

निद्रानाशोनिशायांप्रभवतिचतथाकंठकूपेनलासो।
देहेदाहोतिसूक्ष्मोलघुतरधमनीप्रस्खलंतीचाजिह्वा॥
हीयंतेयस्यशीघ्रंनलदहनमनःशक्तिध्वंसेन्द्रियांगा-
स्तद्भेपज्यंवदन्तिस्मरणमिहबुधाः केवलंरामना-
म्नाम्॥ ३९॥

अर्थ-रातमें नींद न आवे कंठमें घरघर शब्द श्वास रुके देहमें दाह हो नाडीकी गति सूक्ष्म और मन्दतर हो जाय जिह्वा स्खलित होजाय जिसका बलसे रहित मन हीन होजाय व्याकुलहो इन्द्रियोंकी शक्ति ध्वंस होजाय विद्वानों और वैद्योंने ऐसे रोगीकी औषधि केवल रामनामका स्मरणही कहीहै अर्थात् ऐसा रोगी चिकित्साके योग्य नहींहै॥ ३९॥

अथ ज्वराधिकारः।

यतस्समस्तरोगाणांज्वरोराजेतिविश्रुतः।
अतोज्वराधिकारोत्रप्रथमंपरिलिख्यते॥ ४०॥

अर्थ-सम्पूर्ण रोगोंका राजा ज्वर कहा है इस कारण सब रोगोंसे पहले ज्वरका अधिकार लिखतेहैं॥ ४०॥

अथ वातज्वरः।

वेपथुर्विषमोवेगःकंठोष्ठमुखशोषणम्।
निद्रानाशःक्षवस्तम्भोगात्राणांरौक्ष्यमेवच॥ ४१॥

अर्थ-कंप विषमवेग कंठ ओष्ठ और मुखका सूखना निद्राका नाश छींकका रुकना शरीरमें रूखापन॥ ४१॥

शिरोरुग्गात्ररुग्वक्त्रवैरस्यंगाढविट्कता।
भवन्तिविविधावातवेदनावातसुत्तता॥ ४२॥

अर्थ-शिरपीडा, शरीरमें हडफूटन, विरसता, मलका गाढा होना, नींद, तथा औरभी अनेक प्रकारकी वेदना वातसे होतीहैं ॥ ४२ ॥

पिडिकोद्गमनंकर्णस्वनोवक्त्रकषायता ।
ऊरुसादोहनुस्तम्भोविश्लेषःसंधिजानुनोः ॥४३ ॥

अर्थ-फुनसी निकलना, कानोंमें गुन गुन शब्द सुनाई आना, मुख कसैला होना, हृदयमें पीडा, ठोडीका रहजाना, जंघाकी संधियोंका विश्लेषहोना ॥ ४३ ॥

शुष्ककासोवमिर्लोमदन्तहर्षौश्रमभ्रमौ ।
अरुणंनेत्रमूत्रादितृट्प्रलापोष्णकामिता ॥ ४४ ॥

अर्थ-सूखी खांसी, वमन, रुयेंखडे होजाना, दंतहर्ष, श्रम, भ्रम, नेत्र और मूत्रादिका लाल वर्ण होजाना, प्यास लगना, घेरमझे बक उठना ॥ ४४ ॥

शूलाध्मानौजृम्भणंचभवत्यनिलजेज्वरे ॥ ४५ ॥

अर्थ-शूल, अफारा, जंभाईका आना, यह लक्षण वात-ज्वरमें होतेहैं ॥ ४५ ॥

अथ पित्तज्वरः।

वेगस्तीक्ष्णोतिसारश्चनिद्राल्पत्वंतथावमिः ।
कण्ठोष्ठमुखनासानांपाकःस्वेदश्चजायते ॥ ४६ ॥
प्रलापोवक्त्रकटुतामूर्छादाहोमदस्तृषा ।
पीतविण्मूत्रनेत्रत्वंपैत्तिकेभ्रमएवच ॥ ४७ ॥

अर्थ-तीक्ष्णवेग, अतिसार, निद्रा, थोडा वमन, कण्ठ, ओंठ, मुख, नासिका इनका पकना और पसेवका होना,

प्रलाप, मुखका स्वाद कटु होना, मूर्छा, दाह, मद, तृषा, विष्ठा, मूत्र, नेत्र, त्वचाका पीलाहोना, भ्रम यह लक्षणपित्त-ज्वरमें होते हैं ॥ ४६ ॥ ४७ ॥

अथ श्लेष्मज्वरः ।

स्तैमित्यंस्तिमितेवेगआलस्यंमधुरास्यता ।
शुक्लमूत्रपुरीषत्वंस्तम्भस्तृप्तिरथापिवा ॥ ४८ ॥
गौरवंशीतमुत्क्लेदोरोमहर्षोतिनिद्रता ।
अंगेषुपिडकाःशीताःप्रसेकश्छर्दितंद्रिके ॥ ४९ ॥
कण्डूःप्रलापउष्णाभिलाषितावह्निमार्दवम् ।
प्रतिश्यायोरुचिःकासःकफजेऽक्ष्णोश्चशुक्लता॥५०॥

अर्थ–स्तम्भपन, थमताहुआ वेग, आलस्य, मुखका स्वाद मधुर, मूत्र पुरीष श्वेतवर्ण, शरीरका जकडना तृप्ति-सीहोनी॥४८॥शरीरमें भारीपन, शीत लगना, उत्क्लेद(सचलई), रुँएका खड़ा होजाना, बहुत नींदका आना, अंगोंमें छोटी २ पिडिकाओंका उत्पन्न होना, शीत, प्रसेक, वमन और तन्द्राका होना ॥४९॥ खुजली, प्रलाप (बेसमझे बक उठना), गरम वस्तुकी अभिलाषा होनी अग्निका द्रव होना (मन्दाग्नि), श्वास, अरुचि, खांसी, नेत्रोंमें श्वेतता यह लक्षण कफ ज्वरके हैं ॥ ५० ॥

अथ वातपित्तज्वर ।

तृष्णामूर्च्छाभ्रमोदाहःस्वप्ननाशःशिरोरुजा ।
कंठास्यशोषोवमथूरोमहर्षोरुचिस्तमः ॥ ५१ ॥
पर्वभेदश्चजृम्भाचवातपित्तज्वराकृतिः ॥

अर्थ–तृष्णा, मूर्च्छा, भ्रम, दाह, निद्राका नाश, शिरमें

पीडा, कंठ सूखना, वमन होना, रुएँका खडा होना, अरुचि,तम॥ ५१॥ ग्रंथियोंमें पीडा, जँभाईका आना यह वात पित्तज्वरके लक्षण हैं॥

अथ वातश्लेष्मज्वरः।

स्तैमित्यंपर्वणांभेदोनिद्रागौरवमेवच ॥५२॥
शिरोग्रहःप्रतिश्यायःकासःस्वेदाप्रवर्त्तनम्।
सन्तापोमध्यवेगश्चवातश्लेष्मज्वराकृतिः॥५३॥

अर्थ-स्तंभपना, हडफूटन, निद्रा, भारीपन, ॥ ५२॥ शिरमें पीडा, जुकाम (पीनस), खांसी, पसीनेका न आना, सन्ताप और मध्यवेगका होना, वातकफज्वरके लक्षण हैं॥ ५३॥

अथ पित्तश्लेष्मज्वरः।

लिप्ततिक्तास्यतातन्द्रामोहःकासोरुचिस्तृपा।
मुहुर्दाहोमुहुःशीतंपित्तश्लेष्मज्वराकृतिः॥५४॥

अर्थ-लिप्त और तीखा मुख, तन्द्रा, मोह, खांसी, अरुचि, तृषा, वारंवार गरमी और वारंवार सरदी लगे यह पित्तकफज्वरके लक्षण हैं॥ ५४॥

अथ सन्निपातज्वरः।

क्षणेदाहःक्षणेशीतमस्थिसन्धिशिरोरुजा।
सस्रावेकलुषेरक्तेनिर्भुग्नेचापिलोचने॥५५॥

अर्थ-क्षणमें दाह, क्षणमें शीत, हड्डीसंधि और शिरमें पीडा,आंसुसहित काले लाल भीतरको घुसे नेत्र होने५५॥

सस्वनौसरुजौकर्णौकण्ठःशूकैरिवावृतः॥
तन्द्रामोहप्रलापश्चकासःश्वासोरुचिर्भ्रमः॥५६॥

अर्थ-कानोंमें पीडा, और गुन २ शब्द सुनाई आना

तथा कंठके भीतर सीकरोमरेकी समान घिरजानें, तन्द्रा, मोह, प्रलाप, कास, श्वास, अरुचि, भ्रम, होने ॥ ५६ ॥

परिदग्धाखरस्पर्शाजिह्वास्रस्तांगतापरम् ।
ष्ठीवनंरक्तपित्तस्यकफेनोन्मिश्रितस्यच ॥ ५७ ॥

अर्थ-सब ओरसे दग्धरूप और खरखरे स्पर्शवाली जीभका होना तथा अंगोंका स्खलित होना, कफसे मिलेहुए रक्त पित्तका थूकना ॥ ५७ ॥

शिरसोलोठनंतृष्णानिद्रानाशोहृदिव्यथा ।
स्वेदमूत्रपुरीषाणांचिरादर्शनमल्पशः ॥ ५८ ॥

अर्थ-शिरका डुलाना, तृष्णा, निद्राका नाश, हृदयमें पीडा, स्वेद, मूत्र, पुरीषका बहुतकालमें, किञ्चित् दर्शन ५८

कृशत्वंनातिगात्राणांसततंकण्ठकूजनम् ।
कोठानांश्यावरक्तानांमण्डलानांचदर्शनम् ॥ ५९

अर्थ-शरीरक अतिकृश न होना, कण्ठमें निरन्तर शब्द होना, कोठोंके काले लाल मण्डलोंका दीखना (अर्थात शरीरमें मंडलाकार काले लाल मण्डलोंका होजाना) ५९

मूकत्वंस्रोतसांपाकोगुरुत्वमुदरस्यच ।
तद्वच्छीतंमहानिद्रादिवाजागरणंनिशि ॥ ६० ॥

अर्थ-मूकपन, स्रोतोंका पकना, पेटमें भारीपन, इसी प्रकार शीतका लगना, दिनमें महानिद्रा और रात्रिमें जागना ॥ ६० ॥

सदावानैववानिद्रामहास्वेदोतिनैववा ।
गीतनर्त्तनहास्यादिविकृतेहाप्रवर्त्तनम् ॥ ६१ ॥
चिरात्पाकश्चदोषाणांसन्निपातज्वराकृतिः ॥ ६२ ॥

अर्थ–सदा सोना, अथवा निद्राका किंचित् भी न होना महापसीनेकाआना अथवा नहीं आना, गीत, नाच, हास्यादिमें, बुरी चेष्टा करलेना॥६१॥दोषोंके चिरकालमें पाक हो जानेसे ज्वरकी आकृतिवाला सन्निपात होता है ॥६२॥

अथ ज्वरे लंघनकारणम्।

ज्वरेलंघनमेवादावुपदिष्टमृतेज्वरात्।
क्षयानिलभयक्रोधकामशोकश्रमादिजात्॥ ६३ ॥

अर्थ–क्षय, पवनविकार, भय, क्रोध, काम, शोक, श्रम इन कारणोंसे जो ज्वर न हुआहो तो और ज्वरोंमें प्रथम लंघन कराना चाहिये ॥ ६३ ॥

नलंघयेन्मारुतजेज्वरेचक्षयोद्भवेतिक्षुधिमानसेच।
नगुर्विणीदुर्बलबालवृद्धभीरूंस्तृषार्त्तानपिसोर्द्ध्ववातान्

अर्थ–वातज्वर, क्षय, बुभुक्षित, गर्भवती, दुर्बल, बालक, वृद्ध, भीरु, तृषासे आर्त तथा ऊर्ध्ववातवाले पुरुषोंको लंघन न करावे ॥ ६४ ॥

दोषाणामेवसाशक्तिर्लंघनेयासहिष्णुता।
नहिदोषक्षयेकश्चित्सहतेलंघनंक्वचित्॥ ६५ ॥

अर्थ–जो मनुष्य लंघनको सहन करलेताहै यह शक्ति दोषोंहीकी है दोषक्षय होनेपर कोईभी कभी लंघनको नहीं सहसक्ता है ॥ ६५ ॥

वातिकःसप्तरात्रेणदशरात्रेणपैत्तिकः।
[illegible] गाहेनज्वरःपाकंप्रपद्यते ॥ ६६ ॥

अर्थ-सातरातमें वातज्वर, दशरातमें पित्तज्वर और बारहदिनमें कफज्वरका पाक होजाताहै ॥ ६६ ॥

आसप्तरात्रंतरुणंज्वरमाहुर्मनीषिणः ।
मध्यंद्वादशरात्रंतुपुराणमतउत्तरम् ॥ ६७॥

अर्थ-बुद्धिमानोंने ज्वरको सातरात्रितक तरुण कहाहै बारहदिनतक मध्य और इसके उपरान्त पुराना (जीर्ण) कहाहै ॥ ६७ ॥

तृष्णागरीयसीघोरासद्यःप्राणहरीयतः ।
तस्माद्देयंतृषार्त्तायपानीयंप्राणधारणम् ॥ ६८ ॥

अर्थ-प्यास सबसे अधिक महाघोर होके शीघ्रही प्राणोंको हरतीहै इसकारण प्यासेको प्राणधारणके निमित्त अवश्य पानी देना चाहिये ॥ ६८ ॥

तृषितोमोहमायातिमोहात्प्राणान्विमुंचति ।
अतःसर्वास्ववस्थासुनकचिद्वारिवारयेत् ॥ ६९ ॥

अर्थ-प्यासा मोहको प्राप्त होताहै और मोहित होनेसे प्राण छोडदेताहै इसकारण सबही अवस्थाओंमें जल देना निषेध करना नहीं ॥ ६९ ॥

क्षीणेचमधुमेहेचपानीयंमंदमाचरेत् ।
मूर्च्छापित्तोष्मदाहेषुविषोत्थेचमदात्यये ॥ ७० ॥

अर्थ-क्षीण और मधुप्रमेहवालेको थोडा पानीपीना उचितहै मूर्छा, पित्तोष्ण, दाह, विषके उपद्रव, मदात्यय (उन्माद) ॥ ७० ॥

श्रमक्लमपरीतेषुमार्गोत्थेवमथौतथा ।
ऊर्द्धगेरक्तपित्तेचशीतमंभःप्रशस्यते ॥७१ ॥

अर्थ--श्रम और क्लेदसे व्याप्त मार्गचलनेसे उत्पन्नहुए वमनमें रक्त पित्तके ऊर्ध्व प्राप्त होनेमें शीतलजल देना उचित है ॥ ७१ ॥

उष्णजलाधिकारः।

नवज्वरेप्रतिश्यायेपार्श्वशूलेगलग्रहे ।
सद्यःशुद्धौतथाध्मानेव्याधौवातकफोद्भवे ॥ ७२ ॥

अर्थ-नवीन ज्वर, जुखाम, पार्श्वशूल, गलग्रहरोग, शीघ्रशुद्धि, अफारा, वातकफसे उत्पन्न हुई व्याधिमें ॥७२॥

अरुचिग्रहणीगुल्मश्वासकासेपुविद्रधौ ।
हिक्कायांस्नेहपानेचपिबेदुष्णजलंनरः ॥ ७३ ॥

अर्थ-अरुचि, संग्रहणी, गुल्म, श्वास, कास, विद्रधि (वद) हिचकी और स्नेहपानमें मनुष्यको गरम जल पीना चाहिये ॥ ७३ ॥

यत्क्वाथ्यमानंनिर्वेगंनिःफेनंनिर्मलंजलम् ।
अर्द्धावशिष्टंभवतितदुष्णोदकमुच्यते ॥ ७४ ॥

अर्थ-जो औटाया हुआ वेगरहित फेनरहित निर्मल-जल है और औटते २ आधा रहगया है वह उष्णोदक कहाता है ॥ ७४ ॥

कफमेदोनिलाममंदीपनंवस्तिशोधनम् ।
कासश्वासज्वरहरंपथ्यमुष्णोदकंसदा ॥ ७५ ॥

अर्थ-उष्णोदक कफ, मेद और वातरोगका हरनेवाला दीपन, वस्तिशोधक, कास, श्वास, ज्वरका हरनेवाला सदा पथ्य है ॥ ७५ ॥

अष्टमेनांशशेषेणचतुर्थेनार्द्धकेनवा ।
अथवाक्वथनेनैवसिद्धमुष्णोदकंवदेत् ॥ ७६ ॥

अर्थ-आठवाँअंश शेषरखनेसे चौथा अंश अथवा आधा शेष रखनेसे अथवा औटानेसे ही उष्णोदक सिद्ध होताहै ७६

तत्पादहीनंवातघ्नमर्द्धहीनंतुपित्तजित् ।
त्रिपादहीनंश्लेष्मघ्नंपाचनंदीपनंलघु ॥ ७७ ॥

अर्थ-चौथाई कम होजानेसे वातको दूर करता है आधा रहनेसे पित्तको जीतता है त्रिपाद हीन होनेसे कफनाशक, पाचन, दीपन और लघु होजाता है ॥ ७७ ॥

द्वन्द्वजेसन्निपातेचज्वरेपथ्यंतदार्त्तिजित् ॥
शारदंचार्द्धपादोनंपादहीनंतुहैमनम् ॥ ७८ ॥

अर्थ-द्वन्द्वज और सन्निपातज्वरमें उष्णोदक पथ्य और रोगनाशक है शरदऋतुमें अर्द्धपादहीन हिमऋतुमें चौथाई कम ॥ ७८ ॥

शिशिरेचवसन्तेचग्रीष्मेचार्द्धावशेषितम् ।
विपरीतेऋतौतद्वत्प्रावृष्यष्टावशेषितम् ॥ ७९ ॥

अर्थ-शिशिरवसन्त और ग्रीष्ममें आधारहाहुआ पथ्य है ऋतुके बदलनेमें और वर्षाऋतुमें अष्टमांश शेष रहा जल देना चाहिये ॥ ७९ ॥

ज्वरादौलंघनंप्रोक्तंज्वरमध्येतुपाचनम् ।
ज्वरान्तेरेचनंदद्यादेतज्ज्वरचिकित्सितम् ॥ ८० ॥

अर्थ-ज्वरकी आदिमें लंघन करावे, मध्यमें पाचन दे, ज्वरान्तमें रेचनदे यह ज्वरकी चिकित्सा है ॥ ८० ॥

नागरंदेवकाष्ठंचधान्याकंबृहतीद्वयम् ।
दद्यात्पाचनकंपूर्वंज्वरितानांज्वरापहम् ॥ ८१ ॥

अर्थ-सोंठ देवदारु धनियां दोनों कटेरी यह बराबर भाग छदामरभर लेकर ज्वरपाचनको ज्वरवालोंको इसका पाचन देना चाहिये यह ज्वर दूरकरताहै ॥ ८१ ॥

किराताब्दामृतोदीच्यबृहतीद्वयगोक्षुरैः।
सस्थिराकलसीविश्वैःक्वाथोवातज्वरापहः ॥ ८२ ॥

अर्थ-चिरायता, नागरमोथा, गुरच, नेत्रवाला, दोनों कटेरी, गोखरू, शालपर्णी, पिठवन, सोंठ यह सब बराबरले इनका काढा देनेसे वातज्वर दूर होता है ॥ ८२ ॥

कट्फलेन्द्रयवारिष्टतिक्तामुस्तैः शृतंजलम्।
पाचनंदशमेह्निस्यात्तीव्रेपित्तज्वरेनृणाम् ॥ ८३ ॥

अर्थ-कायफल, इन्द्रजौ, नीमकी छाल, कुटकी, नागरमोथा यह जलमें औटाकर देनेसे दशमें दिन तीव्र पित्तज्वर भी शान्त होजाता है ॥ ८३ ॥

गुडूचीनिंबधान्याकंपद्मकंचन्दनान्वितम्।
एपसर्वज्वरंहन्तिगुडूच्यादिस्तुपाचनः ॥ ८४ ॥

अर्थ-गिलोय, नीमकी छाल, धनिया, पद्माख, लालचन्दन यह गुडूची आदिका पाचन देनेसे सम्पूर्णज्वरको दूर करता है ॥ ८४ ॥

हृल्लासारोचकच्छर्दिपिपासादाहनाशनः।
बीजपूरशिफापथ्यानागरग्रन्थिकैःशृतम् ॥ ८५ ॥
सक्षारंपाचनंश्लेष्मज्वरेद्वादशवासरे ॥ ८६ ॥

अर्थ-बिजौरेकी जड, मोरू, छोटीहरड, सोंठ, पीपलामूल [illegible] बारह दिनमें [illegible] रचना है ॥ ८५ ॥ ८६ ॥

दुरालभापर्प्पटकाप्रियंगु-
भूनिम्बवासाकटुरोहिणीनाम् ॥
क्वाथंपिबेच्छर्करयासमेतम्।
तृष्णान्वितेपित्तभवज्वरेऽपि ॥ ८७ ॥

अर्थ-जवासा, पित्तपापडा, फूलप्रियंगु, भूनिम्ब, अडूसा, कुटकी इनका काढा मिश्री डालकर पिये तो तृष्णा और पित्तज्वरकी शान्ति होतीहै ॥ ८७ ॥

पटोलपत्रनिःक्वाथोमधुनामधुरीकृतः।
तीव्रपित्तज्वरामर्दीपित्ततृड्दाहनाशनः ॥ ८८ ॥

अर्थ-पटोलपत्रके काढेमें शहद डालकर पीनेसे तीव्र पित्तज्वर, पित्त, तृषा, दाहका नाश करताहै ॥ ८८ ॥

गुडूच्यामलकैर्युक्तःकेवलोवापिपर्प्पटः।
पित्तज्वरंहरेत्तूर्णंदाहशोषंभ्रमान्वितम् ॥ ८९ ॥

अर्थ-गिलोय आमलेके साथ केवल पित्तपापडा पान करनेसे शीघ्रही पित्तज्वर, दाह शोष और भ्रम नष्ट हो जाता है ॥ ८९ ॥

लोध्रामृतोत्पलापद्मसारिवानांसशर्करः।
क्वाथःपित्तज्वरंहन्यादथवापर्प्पटोद्भवः ॥ ९० ॥

अर्थ--लोध, गिलोय, नीलोफर, पुहकरमूल, सारिवा इनका क्वाथ कर मिश्रीडालकर पानकरनेसे पित्तज्वर नष्ट होताहै अथवा पित्तपापडेके साथ मिश्री पान करे ॥९०॥

पर्प्पटामृतधात्रीणांक्वाथः पित्तज्वरंजयेत्।
भ्रमारग्वधयोश्चापिकाश्मर्यस्याथवापुनः ॥ ९१ ॥

अर्थ-पित्तपापडा, गिलोय आमला इनका काढा कर पीनेसे पित्तज्वर नष्ट होताहै । दाख अमलतास अथवा खंभारीके काढेसे पित्तज्वरका नाश होता है ॥ ९१ ॥

एषपर्प्पटकःश्रेष्ठःपित्तज्वरविनाशनः ।
किंपुनर्यदियुंजीतचंदनोदीच्यनागरैः ॥ ९२ ॥

अर्थ-एक पित्तपापडाही पित्तज्वरको नाश करताहै । यदि लाल चंदन नेत्रवाला और सोंठ इनके साथ दीया जाय तो क्या कहना है ॥ ९२ ॥

विश्वपर्पटकोशीरधायचंदनसाधितम् ।
दद्यात्सुशीतलंवारितृट्छर्दिज्वरदाहनुत् ॥ ९३ ॥

सोंठ, पित्तपापडा, उशीर (खस), धनियां, लाल चंदनसे सिद्ध किया काढा शीतलकर देनेसे प्यास, छर्दि, ज्वर, दाह दूर होताहै ॥ ९३ ॥

पर्प्पटाब्दामृतोदीच्यकिरातैस्साधितंजलम् ।
पंचभद्रमिदंप्रोक्तंवातपित्तज्वरापहम् ॥ ९४ ॥

अर्थ-पित्तपापडा, नागरमोथा, गिलोय, नेत्रबाला भनिंबसे साधित किया जल पंचभद्र कहलाता है यह वातपित्तज्वरका दूर करनेवाला है ॥ ९४ ॥

त्रिफलाशाल्मलीरास्नाराजवृक्षाटरूषकैः ।
शृतमंबुहरेत्तूर्णंवातपित्तोद्भवंज्वरम् ॥ ९५ ॥

अर्थ-त्रिफला, सेमल, रायसन, अमलतास, अडूसा इनको बराबर ले काढा कर पिलानेसे वातपित्तज्वर दूर होता है ॥ ९५ ॥

क्षुद्राशुण्ठीगुडूचीनांकषायःपौष्करस्यच ।
कफवातादिकेपेयोज्वरेवापित्रिदोषजे ॥ ९६ ॥

अर्थ-भटकटैया, सोंठ, गिलोय तथा पुहकरमूलका काढा कफवातकी अधिकतामें तथा, त्रिदोषज्वरमें देना चाहिये ॥ ९६ ॥

आरग्वधकणामूलमुस्तातिक्ताभयाकृतः ।
क्वाथःशमयतिक्षिप्रंज्वरंवातकफोद्भवम् ॥ ९७ ॥

अर्थ-अमलतासका गूदा, पीपलामूल, नागरमोथा, कुटकी, बडी हरड, इनका काढा पान करनेसे शीघ्रही वातकफज्वर दूर होता है ॥ ९७ ॥

अमृतारिष्टकटुकामुस्तेन्द्रयवनागरैः ।
पटोलचंदनाभ्यांचशृतंपिप्पलिचूर्णयुक् ॥ ९८ ॥

अर्थ-गिलोय, नीमकी छाल, कुटकी, नागरमोथा, इन्द्रजौ, सोंठ, पटोलपात, लाल चन्दन इनका काढा पीपलके चूर्ण सहित पीनेसे ॥ ९८ ॥

अमृताष्टकमेतच्चपित्तश्लेष्मज्वरापहम् ।
पटोलंचंदनंमूर्वापाठातिक्तामृतागणः ॥ ९९ ॥

अर्थ-यह अमृताष्टक पित्त कफ ज्वरका दूर करनेवाला है। पटोलपात, लालचन्दन, मूर्वा, पाठा, कुटकी, गिलोय यह लेकर ॥ ९९ ॥

पित्तश्लेष्मज्वरच्छर्दिदाहकंडूविषापहः ।
पटोलंपिचुमर्दंचत्रिफलामधुकंबला ॥ १०० ॥

अर्थ-इन औषधोंका काढा पित्तश्लेष्मज्वर, छर्दि, दाह, खुजली और विषका दूर करनेवाला है पटोलपात, नीम की छाल, त्रिफला, मुलेटी, खरैटी ॥ १०० ॥

साधितोयंकषायःस्यात्पित्तश्लेष्मोद्भवेज्वरे ॥ १०१ ॥

अर्थ-इनका काढा पित्तश्लेष्मज्वरमें देना चाहिये॥१०१॥

अर्थ-कूठ, असगंध, सौंफ, सरसोंका उद्धूलन (अर्थात इनका चूर्णकर शरीरमें मलना) वातपित्तज्वर नाशकरने में श्रेष्ठ है ॥ १२० ॥

कट्फलंपौष्करंकृष्णाशृंगीचमधुनासह ।
श्वासकासज्वरहरःश्रेष्ठोलेहःकफांतकृत् ॥ २१ ॥

अर्थ-कायफल, पुष्करमूल, पीपल, काकडासींगी इनका चूर्ण बनाकर शहदके साथ चाटनेसे श्वास, खाँसी, ज्वर और कफ दूर होता है ॥ २१ ॥

शृतशीतमथितपेषितमदनफलालेपनंसद्यः ।
अपनयतिदाहमुग्रंज्वरजंहस्तांघ्रिमूर्द्धतले ॥ २२ ॥

अर्थ-मैनफलको पीसकर औटावे फिर उसे ठंडाकरके लेप करे तो ज्वरका अतिदाह, नष्टहोता है इसका मालिस हथेली तलुए और शिरमें करना चाहिये ॥ २२ ॥

उत्तानसुतस्यगभीरमध्यं
कांस्यादिपात्रंविनिधायनाभौ ॥
तत्रांबुधाराबहुलापतन्ती
निहन्तिदाहंत्वरितंसुशीता ॥ २३ ॥
बदरीपल्लवोत्थेनफेनेनारिष्टकेनवा ॥ २४ ॥

अर्थ-पुरुषको सीधा लिटाकर उसकी नाभीपर बीचमें गहरा इसप्रकारका एक कांसीका पात्र रखकर उसके ऊपर शीतलजलकी धारा छोडे तो बहुत शीघ्र दाह दूर होकर शीतलता होती है ॥ २३ ॥ तथा बेरीके पत्ते पानीमें डालकर मथे उससे उठे फेनको अंगमें लगावे तो दाह शान्तहो ॥ २४ ॥

अथ चूर्णानि ।

धात्रीशिवासैन्धवचित्रकानां
कणायुतानांसमभागिचूर्णम् ॥
जीर्णज्वरारोचकवह्निमान्द्ये
सविड्ग्रहेशस्तमितिप्रतिज्ञा ॥ २५ ॥

अर्थ-(चूर्ण) आमला, हरड, सेंधानमक, चीता, पीपल यह सब औषधि बराबर भागलेकर इनका चूर्ण बना ले यह, जीर्णज्वर, अरुचि, मन्दाग्नि, दस्तका न होना इतने रोगोंको दूर करता है यह प्रतिज्ञा है ॥ २५ ॥

तालीसोपणविश्वपिप्पलितुगाः कर्पाभिवृद्धात्रुटिः ।
कर्पार्द्धात्त्वगपिप्रकामधवलाद्द्वात्रिंशकर्पासिता ॥
तालीसाद्यमिदंसुचूर्णमरुचावाध्मानमन्दानलः ।
श्वासच्छर्द्यतिसारशोपणसरप्लीहज्वरेशस्यते २६॥

अर्थ-तालीसपत्र १ तोला कालीमिर्च २ तोले सोंठ ३ तोले, पीपल ४ तोले वंशलोचन ५ तोले दालचीनी छोटी इलाची छः छः मासे मिश्री ३२ तोले इन सबको कूट पीस चूर्णकरे यह तालीसादि चूर्ण है यह अरुचि, अफारा, मन्दाग्नि, श्वास, छर्दि, अतिसार, शोष, संग्रहणी, प्लीहा और ज्वरको शान्त करता है ॥ २६ ॥

अथ तैलम् ।

लाक्षाहरिद्रामंजिष्टाकल्कैस्तैलंविपाचयेत् ।
षड्गुणेनारनालेनदाहशीतज्वरापहम् ॥ २७ ॥

अर्थ–लाख, हल्दी, मँजीठ इनकी लुगदीकर औषधियोंसे चौगुना तेल ले छः गुनी कांजीमें सिद्ध करे यह मलनेसे दाह और शीतज्वरका नाश करता है ॥ २७ ॥

लाक्षामूर्वाहरिद्रेद्रेमंजिष्ठाचेन्द्रवारुणी ।
बृहतीसैन्धवंकुष्ठंरास्नामांसीशतावरी ॥ २८ ॥
आरनालाढकेनात्रतैलप्रस्थंविपाचयेत् ।
तैलमंगारकंनामसर्वज्वरविनाशनम् ॥ २९ ॥

अर्थ–लाख, मूर्वा, हल्दी, दारुहल्दी, मंजीठ, इन्द्रायन, भटकटैया, सैंधा, कूठ, रास्ना, जटामांसी, शतावरि यह औषध कूट२५६तोले कांजीमें६४तोले तेल सिद्ध करले यह अंगारक नाम तेल सब ज्वरोंका नाश करता है२८॥२९॥

अथ रस।

शुद्धसूतंविषंगंधंधूर्त्तबीजंत्रिभिःसमम् ।
चतुर्णांद्विगुणंव्योषंहेमक्षीरीविभावितम् ॥ १३० ॥
चतुर्वारंवमंशुष्कंचूर्णगुंजाद्वयोन्मितम् ।
जम्बीरकस्यमज्जाभिरार्द्रकस्यरसेनवा ॥ ३१ ॥
महाज्वरांकुशोनामसमस्तज्वरनाशनः ।
एकाहिकंद्व्याहिकंवात्र्याहिकंवाचतुर्थकम् ।
विषमंचत्रिदोषंचहन्तिसद्योनसंशयः ॥ ३२ ॥

अर्थ-शुद्ध पारा ३मासे, शुद्ध कराहुआ विष तीन मासे, गंधक तीन मासे, धतूरेके बीज नौमासे इन चारोंसे दूना त्रिकुटा ले चूकेकी भावना दियाहुआ यह चार बार धूपमें सुखावे इन सबको एकत्र कर चूर्ण करे जम्बीरी अथवा अदरखके

अथ चूर्णानि।

धात्रीशिवासैन्धवचित्रकाणां
कणायुतानांसमभागिचूर्णम् ॥
जीर्णज्वरारोचकवह्निमान्द्ये
सविड्ग्रहेशस्तमितिप्रतिज्ञा ॥ २५ ॥

अर्थ-(चूर्ण) आमला, हरड, सेंधानमक, चीता, पीपल यह सब औषधि बराबर भागलेकर इनका चूर्ण बना ले यह, जीर्णज्वर, अरुचि, मन्दाग्नि, दस्तका न होना इतने रोगोंको दूर करता है यह प्रतिज्ञा है ॥ २५ ॥

तालीसोपणविश्वपिप्पलितुगाः कर्षाभिवृद्धास्त्रुटिः।
कर्षार्द्धात्वगपिप्रकामधनलाद्वात्रिंशकर्षासिता ॥
तालीसाद्यमिदंसुचूर्णमरुचावाध्मानमन्दानलः।
श्वासच्छर्द्यतिसारशोषणसरप्लीहज्वरेशस्यते २६॥

अर्थ-तालीसपत्र १ तोला कालीमिर्च २ तोले सोंठ ३ तोले, पीपल ४ तोले वंशलोचन ५ तोले दालचीनी छोटी इलाची छः छः मासे मिश्री ३२ तोले इन सबको कूट पीस चूर्णकरे यह तालीसादि चूर्ण है यह अरुचि, अफारा, मन्दाग्नि, श्वास, छर्दि, अतिसार, शोष, संग्रहणी, पीहा और ज्वरको शान्त करता है ॥ २६ ॥

अथ तैलम्।

लाक्षाहरिद्रामंजिष्ठाकल्कैः
षड्गुणेनारनालेनदाहशी

भार्ङ्गीभूनिम्बनिंबेजलदकटुवचान्योपवासाविशाला
रास्नानंतापटोलीसुरतरुरजनीपाटलाटिंटुकीभिः ॥
ब्राह्मीदार्वीगुडूचीत्रिवृदतिविषयापुष्करत्रायमाणैः
पाठाव्याघ्रीकलिंगैस्त्रिफलसठियुतैः कल्पितैस्तुल्यभागै

अर्थ-भारंगी, चिरायता, नीमकी छाल, नगरमोथा, कुटकी, वच, त्रिकुटा, (सोंठ, मिर्च, पीपल) अडूसा, इन्द्रायन, राम्ना, जवासा, पटोलपात, देवदारु, हलदी, पाढल, जलसिरस, ब्राह्मी, दारुहल्दी, गिलोय, श्वेत निशोथ अतीस, पुष्करमूल, त्रायमाण, पाठ, इन्द्रजौ, हरड, बहेडा, आमला और कचूर यह सब बराबर भागले काढाकरै॥३७॥

क्वाथोद्वात्रिंशकाख्यस्त्रिकदशकलितान्सन्निपातान्निहंति.
श्वासंशूलंचहिक्कांश्वसनगुदरुजाध्मानमन्यारुजश्च ॥
ऊरुस्तंभांत्रवृद्धीगलगदमरुतंसर्वसंधिग्रहार्त्ति
हन्यादेकोपिसिंहोगजनिवहमिवप्रस्फुरद्धारिधारम् ३८

अर्थ-यह द्वात्रिंशक नामवाला क्वाथ तेरह प्रकारके सन्निपातोंको दूर करता है, श्वास, शूल, हिचकी, गुदरोग, अफारा तथा दूसरे रोग, ऊरुस्तंभ, अंत्रवृद्धि, गल रोग, वातरोग, संधिपीडा इत्यादि रोगोंको यह एकही क्वाथ इसप्रकार दूर करता है जैसे एकही सिंह अनेक हाथियोंको नष्ट करता है ॥ ३८ ॥

[illegible]तिक्तफलत्रिकंच
[illegible]रजनीत्रिवृम् ॥
[illegible]
[illegible] ॥ ३९ ॥

अर्थ-देवदारु, नागरमोथा, कुटकी, त्रिफला, कचूरी, दारुहल्दी, नीमकी छाल, इनका काढा कर सन्निपातमें अंधे हुए पुरुषके मानके निमित्त देना चाहिये ॥ ३९ ॥

अथावलेहिका ।

कट्फलंपौष्करंशृंगीयवानीकाकनासिका ।
एषांचूर्णंकृतंश्लक्ष्णंमधुनासहलेहयेत ॥ १४० ॥
एषावलेहिकाहंतिसन्निपातंसुदारुणम् ।
हिक्कांश्वासंचकासंचकण्ठरोधंचघर्घरम् ॥ ४१ ॥
यद्ययंकफाद्रेकश्चूर्णमार्द्रकजरसैः ।
किराततंनागरंमुस्तंगुडूचीचेत्ययंगणः ॥ ४२ ॥

अर्थ-कायफल, पुष्करमूल, काकडासींगी, त्रिकटु (सोंठ मिर्च पीपल) अजवायन इनका चूर्णकर शहतके साथ चाटे।यह अवलेहिका दारुण सन्निपातको दूर करती है, हिचकी, श्वास, कास, कंठरोध, घर्घरको दूर करती है, जब कफकी अधिकता हो तो इन औषधियोंका चूर्ण कर अद्रखके रसमें चाटे अथवा चिरायता, सोंठ, नागरमोथा गिलोय यह औषधी सेवन करै ॥१४०॥ ४१ ॥ ४२ ॥

अथोद्धूलनम् ।

भूनिंबकारवीतिक्तावचाकट्फलजंरजः ।
उद्धूलनंत्रिदोषोत्थेस्वेदाभिष्यंदिनिज्वरे ॥ ४३ ॥

अर्थ-चिरायता, अजवायन, कुटकी, वच, कायफल इनका चूर्ण कर उद्धूलन करनेसे त्रिदोष, स्वेद, अभिष्यंदि ज्वरमें हितकारक है ॥ ४३ ॥

मरीचंपिप्पलीशुण्ठीपथ्यालोध्रंसपुष्करम्।
भूनिंबंकटुकाकुष्टंकारवीन्द्रयवाःसटी॥ ४४॥

अर्थ-काली मिर्च, पीपल, सोंठ, हरड, लोध, पुष्करमूल, चिरायता, कुटकी, कूठ, अजवायन, इन्द्रजौ, कचूर ४४

एतानिसमभागानिसूक्ष्मचूर्णानिकारयेत्॥
प्रस्वेदेकंठरोधेचसंधिमर्दनमिष्यते॥
एतदुद्धूलनंश्रेष्ठंसन्निपातहरंपरम्॥ ४५॥

अर्थ-यह बराबर भाग लेकर इनका बारीक चूर्ण करले प्रस्वेद, कंठरोध, संधिपीडामें हितकारी है यह उद्धूलन अत्यन्त श्रेष्ठ और सन्निपातका हरनेवाला है॥ ४५॥

स्वेदोद्गमेभ्रष्टकुलत्थचूर्णैरुद्धूलनंशस्तमितिब्रुवन्ति ४६

अर्थ-जब बहुत पसीना आवे तो भुनी कुलथीके चूर्णसे उद्धूलन करना परम श्रेष्ठ है॥ ४६॥

अथ नस्यम्।

मधूकसारसिन्धूत्थवचोपणसमंकृतम्।
श्लक्ष्णमपिचनस्यंहिकुर्यात्संज्ञाप्रबोधकम्॥ ४७॥

अर्थ-महुएका सार, सेंधानिमक, वच, मिर्चकाली इन सबको बराबर ले गरम पानीमें पीस नस्य देनेसे अचेतन मनुष्यको संज्ञा प्राप्त होती है॥ ४७॥

अथ कर्णिकसन्निपातः।

ज्वरस्यपूर्वंज्वरमध्यतोवा
ज्वरांततोवाश्रुतिमूलशोथः॥
क्रमादसाध्यःखलुकृच्छ्रसाध्यः
[illegible]नाम्नोमुनिभि[illegible]॥ ४८॥

अर्थ-कर्णिक सन्निपातका लक्षण-सन्निपात ज्वरसे पहले मध्यमें या अन्तमें कर्णके मूलमें सूजन होती है, वह क्रमसे असाध्य कष्टसाध्य और सुखसाध्य होती है ऐसा मुनिजन कहते हैं ॥ ४८ ॥

कुलत्थकट्फलंशुण्ठीकारवीचसमांशका।
सुखोष्णंलेपनंकार्यकर्णमूलेमुहुर्मुहुः ॥ ४९ ॥

अर्थ-कुल्थी, कायफल, सोंठ, अजवायन यह सब बराबर किंचित गरम जलके साथ कानकी जडमें वारंवार लेप करे ॥ ४९ ॥

बीजपूरकमूलानिअग्निमंथस्तथैवच।
नागरंदेवकाष्ठंचरास्नाचित्रकपेषितम् ॥ ५० ॥
प्रलेपनमिदंश्रेष्ठंकर्णशोथविनाशनम् ॥ ५१ ॥

अर्थ-बिजौरा नींबूकी जड, अरणी, सोंठ, देवदारु, रास्ना, चित्रक इन सबको पीसकर कर्णमूलपर लेप करे तौ सूजन दूरहो ॥ ५० ॥ ५१ ॥

अथ सन्निपातरसः।

त्र्यूपणंपंचलवणंशतपुष्पाद्विजीरकम्।
क्षारत्रयंसमांशेनचूर्णमेषांपलत्रयम् ॥ ५२ ॥

अर्थ-सोंठ, मिर्च, पीपल, पांचोंनोन, सौंफ, दोनों जीरे, तीनों क्षार यह सब बराबर भाग लेकर इनका चूर्ण तीन पल ले ॥ ५२ ॥

...तंचाभ्रंगंधकंचपलंपलम्।
...रसेखल्वेदिनमेकंविमर्दयेत् ॥ ५३ ॥

... अभ्रक ... गंधक ... करे
... रसकको ... बरा...

पित्तेधान्यचतुष्कंतुशुंठीत्यागाद्धदंतिहि।
ह्रीवेरातिविषामुस्तबिल्वनागरधान्यकम् ॥ ३ ॥
अर्थ-यदि पित्तसे अतिसार हो तो धनियां आदि चार औषधी लेनी सोंठ न डालनी ह्रीबेर, अतीस, नागरमोथा बेलकी गिरी, सोंठ, धनियाँ ॥ ३ ॥

पिबेतिपिच्छाविबंधघ्नंशूलदोषामपाचनम्।
सरक्तंहन्त्यतीसारंसज्वरंवाथविज्वरम् ॥ ४ ॥
अर्थ-इसके पान करनेसे विबंध, शूलदोष और अपाचन दूर होताहै रक्तातीसार ज्वरके सहित अथवा बिनाज्वरके हो वह दूर होताहै ॥ ४ ॥

कुटजोवह्निचूर्णश्चमधुनासहलेहितम्।
चिरोत्थितमतीसारंपक्कंपित्तास्रजंजयेत् ॥ ५ ॥
अर्थ-कुरैया चीतेका चूर्ण कर शहद के साथ चाटनेसे चिरकालसे हुए अतिसार और पक्क पित्तातिसार को दूर करता है ॥ ५ ॥

कुटजातिविषामुस्तंवालकंलोध्रचन्दनम्।
धातकीदाडिमंपाठाक्काथंक्षौद्रयुतंपिबेत् ॥ ६ ॥
अर्थ-कुरैया, अतीस, नागरमोथा, सुगंधवाला, लोध; लाल चन्दन, धवईके फूल, दाडमी, पाढ इनका काढा कर शहद के साथ पीनेसे ॥ ६ ॥

दाहेरक्तेसशूलेचआमरोगेचदुस्तरे।
कुटजाष्टमिदंख्यातंसर्वातीसारनाशनम् ॥ ७ ॥
अर्थ-दाह, रक्तशूल, दुस्तर आमरोग दूर होते हैं, यह कुटजाष्टक सब अतीसारोंका नाश करनेवाला है ॥ ७ ॥

स्निग्धंघनंकुटजवल्कमजंतुजग्ध-
मादायतत्क्षणमतीवचपोथयित्वा।

अर्थ-कर्णिक सन्निपातका लक्षण-सन्निपात ज्वरसे पहले मध्यमें वा अन्तमें कर्णके मूलमें सूजन होती है, वह क्रमसे असाध्य कष्टसाध्य और सुखसाध्य होती है ऐसा मुनिजन कहते हैं ॥ ४८ ॥

कुलत्थंकट्फलंशुण्ठीकारवीचसमांशका।
सुखोष्णंलेपनंकार्यंकर्णमूलेमुहुर्मुहुः ॥ ४९ ॥

अर्थ-कुलथी, कायफल, सोंठ, अजवायन यह सब बराबर किंचित् गरम जलके साथ कानकी जडमें वारंवार लेप करे ॥ ४९ ॥

वीजपूरकमूलानिअग्निमंथस्तथैवच।
नागरंदेवकाष्ठंचरास्नाचित्रकपेपितम् ॥ १५० ॥
प्रलेपनमिदंश्रेष्ठंकर्णशोथविनाशनम् ॥ ५१ ॥

अर्थ-विजौरा नींबूकी जड, अरणी, सोंठ, देवदारु, रास्ना, चित्रक इन सबको पीसकर कर्णमूलपर लेप करे तो सूजन दूर हो ॥ १५० ॥ ५१ ॥

अथ सन्निपातरसः।

त्र्यूपणंपंचलवणंशतपुष्पाद्विजीरकम्।
क्षारत्रयंसमांशेनचूर्णमेपांपलत्रयम् ॥ ५२ ॥

अर्थ-सोंठ, मिर्च, पीपल, पांचोंनोन, सोंफ, दोनों जीरे, तीनों क्षार यह सब बराबर भाग लेकर इनका चूर्णकर तीन पल ले ॥ ५२ ॥

शुद्धसूतंमृतंचाभ्रंगंधकंचपलंपलम् ॥
आर्द्रकस्यरसेखल्वेदिनमेकंविमर्दयेत् ॥ ५३ ॥

अर्थ-शुद्धपारा, अभ्रककी भस्म, गंधक यह एक २ पल लेकर एक दिन पर्यन्त अद्रखके रसमें खरल करे ॥ ५३ ॥

पित्तेधान्यचतुष्कंतुशुंठीत्यागाद्ददंतिहि।
ह्रीवेरातिविषामुस्तबिल्वनागरधान्यकम् ॥ ३ ॥
अर्थ-यदि पित्तसे अतिसार हो तो धनियां आदि चार औषधी लेनी सोंठ न डालनी ह्रीबेर, अतीस, नागरमोथा बेलकी गिरी, सोंठ, धनियाँ ॥ ३ ॥

पिबेत्पिच्छाविबंधघ्नंशूलदोषामपाचनम्।
सरक्तंहन्त्यतीसारंसज्वरंवाथविज्वरम् ॥ ४ ॥
अर्थ-इसके पान करनेसे विबंध, शूलदोष और अपाचन दूर होताहै रक्तातीसार ज्वरके सहित अथवा विनाज्वर-के हो वह दूर होताहै ॥ ४ ॥

कुटजोवह्निचूर्णश्चमधुनासहलेहितम्।
चिरोत्थितमतीसारंपक्वंपित्तास्रजंजयेत् ॥ ५ ॥
अर्थ-कुरैया चीतेका चूर्ण कर शहद के साथ चाटनेसे चिरकालसे हुए अतिसार और पक्व पित्तातिसार को दूर करता है ॥ ५ ॥

कुटजातिविषामुस्तंवालकंलोध्रचन्दनम्।
धातकीदाडिमंपाठाक्वाथंक्षौद्रयुतंपिबेत् ॥ ६ ॥
अर्थ-कुरैया, अतीस, नागरमोथा, सुगंधवाला, लोध, लाल चन्दन, धवईके फूल, दाडमी, पाढ इनका काढा कर शहद के साथ पीनेसे ॥ ६ ॥

दाहेरक्तेसशूलेचआमरोगेचदुस्तरे।
कुटजाष्टमिदंख्यातंसर्वातीसारनाशनम् ॥ ७ ॥
अर्थ-दाह, रक्तशूल, दुस्तर आमरोग दूर होते हैं, यह कुटजाष्टक सब अतीसारोंका नाश करनेवाला है ॥ ७ ॥

स्निग्धंघनंकुटजवल्कमजंतुजग्ध-
मादायतत्क्षणमतीवचपोथयित्वा।

अर्थ-कर्णिक सन्निपातका लक्षण-सन्निपात ज्वरसे पहले मध्यमें या अन्तमें कर्णके मूलमें सूजन होती है, यह क्रमसे असाध्य कष्टसाध्य और सुखसाध्य होती है ऐसा मुनिजन कहते हैं ॥ ४८ ॥

कुलत्थंकट्फलंशुण्ठीकारवीचसमांशका ।
सुखोष्णंलेपनंकार्यंकर्णमूलेमुहुर्मुहुः ॥ ४९ ॥

अर्थ-कुलथी, कायफल, सोंठ, अजवायन यह सब बराबर किंचित गरम जलके साथ कानकी जडमें वारंवार लेप करे ॥ ४९ ॥

बीजपूरकमूलानिअग्निमंथस्तथैवच ।
नागरंदेवकाष्ठंचरास्नाचित्रकपेषितम् ॥ १५० ॥
प्रलेपनमिदंश्रेष्ठंकर्णशोथविनाशनम् ॥ ५१ ॥

अर्थ-बिजौरा नींबूकी जड, अरणी, सोंठ, देवदारु, रास्ना, चित्रक इन सबको पीसकर कर्णमूलपर लेप करे सूजन दूर हो ॥ १५० ॥ ५१ ॥

अथ सन्निपातरसः।

त्र्यूषणंपंचलवणंशतपुष्पाद्विजीरकम् ।
क्षारत्रयंसमांशेनचूर्णमेषांपलत्रयम् ॥ ५२ ॥

अर्थ-सोंठ, मिर्च, पीपल, पांचोंनोन, सौंफ, दोनों जीरे, तीनों क्षार यह सब बराबर भाग लेकर इनका चूर्णकर तीन पल ले ॥ ५२ ॥

शुद्धसूतंमृतंचाभ्रंगंधकंचपलंपलम् ॥
आर्द्रकस्यरसेखल्वेदिनमेकंविमर्दयेत् ॥ ५३ ॥

अर्थ-शुद्धपारा, अभ्रककी भस्म, गंधक ——— २ पल लेकर एक दिन पर्यन्त अद्रखके रसमें

अर्थ-जितना औटाहुआ जलहो इसी प्रकार अतिसारका नाश होता है ॥ ११ ॥

अथ संग्रहणी।

अतीसारेनिवृत्तेपिमंदाग्नेरहिताशिनः।
भूयः संदूपितोवह्निर्ग्रहणीमपिदूपयेत् ॥ १२ ॥
सादुष्टावहुशोभुक्तमाममेवविमुंचति।
पक्वंवासरुजंपूतिमुहुर्बद्धंमुहुर्द्रवम् ॥ १३ ॥

अर्थ-अतीसार निवृत्त होनेपर अथवा मध्यहीमें जो मन्दाग्निवाला पुरुष अहित पदार्थोंका सेवन करलेता है तो इस आहारसे दूपितहो अग्नि ग्रहणीको दूपित करता है, (पक्वाशय और आमाशयके बीचमें एक अन्न ग्रहण करनेवाली आंतको ग्रहणी कहते हैं) वह वातादि दोपसे दुष्ट हुई ग्रहणी भोजन किये आहारको कच्चाही बहुत सा बाहर निकाल देती है, अथवा पीडा और दुर्गन्धि सहित पकेको भी कभी बँधा और कभी पतला गिरती है इसे ग्रहणी कहते हैं ॥ १२ ॥ १३ ॥

धान्यबिल्वबलाशुण्ठीशालिपर्णीशृतंजलम्।
स्याद्वातग्रहणीदोपेसानाहेसपरिग्रहे ॥ १४ ॥

अर्थ-धनियाँ बेलगिरी खरिआरी सोंठ शालपर्णी इनका काढाकर देनेसे वात अतिसार आनाह रोग दूर होते हैं १४॥

मुस्तावालकलोध्रवत्सकवृकीविश्वारलश्रीमदालज्जामोचरसाग्रकोटजविषान्यूर्णस्तुगंगाधरः।
पीतस्तंदुलवारिमाक्षिकयुतःकर्पोन्मितोवालिकासर्वांचग्रहणींनिहन्तिसहसासर्वातिसारामयान् १५

अर्थ-नागरमोथा, नेत्रबाला, लोध, कुरैयाकी छाल, पाठा

जंबूपलाशपुटतंडुलतोयसिक्तं
वद्धंकुशेनचबहिर्घनपंकलिप्तम् ॥ ८ ॥

अर्थ--कुरैयाकी छाल चिकनी मोटी कठिन कीडे आ-
दिकी खाई न होय वह ताजी लेकर कूटे फिर उसके गूदीको
जामुन के पत्तों में लपेटउसपर ढाक के पत्ते लपेटकर चावल-
के धोवनसे पत्ते और लुगदीको छिडकर फिर लपेट बाहर
कुश से लपेट ऊपर गाढीमट्टीका लपेट करे ॥ ८ ॥

सुस्विन्नमेतदवपीड्यरसंगृहीत्वा
क्षौद्रेणयुक्तमपिसारवतेप्रदद्यात् ।
कृष्णात्रिपुत्रमतिपूजितएषयोगः
सर्वातिसारहरणेस्वयमेवराजा ॥ ९ ॥

अर्थ--फिर उस गोलेको पुटपाकके अनुसार पकावे जब
पक जाय तब उसको निचोडकेरस निकाल लेऔर सहद
मिलाकर परिभाषामें कही मात्राके अनुसार अतिसारवाले
को देना यह कुटजपुटपाकका योग सब अतिसारोंके हर-
नेमें स्वयं राजा है यह कृष्णात्रिपुत्रका श्रेष्ठ मत है ॥ ९ ॥

एरण्डमूलस्वरसेनशुण्ठ्याः
कल्कंसुपिष्टंपुटपाकयोगे ।
क्षौद्रेणलीढंविनिहन्तिशीघ्र-
मामातिसारारुचिमूलमुग्रम् ॥ १० ॥

अर्थ--अण्डकी जडके स्वरसमें सोंठका कल्क पुटपाकके
योगसे पीसकर बनावे यह सहदके साथ चाटनेसे आमाति
सार अरुचि और शूलको दूर करता है ॥ १० ॥

यथाशृतंभवेद्वारितथातीसारनाशनम् ॥ ११ ॥

वल्लोस्यहन्तिमधुनासहजीरकेण।
भुक्तोतिसारमपिसंग्रहणीमुदग्राम् ॥
आमंविपाच्यसहसाजनयत्यवश्यं।
वैश्वानरंजठरवर्त्तिनमार्त्तिभाजः ॥ २० ॥

अर्थ-दोरत्ती रस शहद और जीरेके साथ सेवन करनेसे प्रबल संग्रहणी और अतिसारको दूरकर आमको पचाय अग्निको प्रज्वलित करता है ॥ २० ॥

भैपज्यमेकतःसर्वग्रहण्यांतक्रमेकतः।
पथ्यंमधुरपाकित्वान्नचपित्तप्रकोपनम् ॥ २१॥

अर्थ-संग्रहणीमें सब औषधि एक ओर और तक्र एक ओर है यह पथ्य पचनेमें मधुर और पित्तका कोप करनेवालाभी नहीं है ॥ २१ ॥

कपायोष्णविपाकित्वाद्विशद्याचकफेहितम्।
वातेस्वाद्वम्लसांद्रत्वात्सद्यःक्रमविदाहितत्॥२२ ॥

अर्थ-यह कषाय उष्णविपाकी होनेसे तथा विशद होनेसे कफमें हितकारक है वातमें स्वादु तथा अम्ल सान्द्र होनेसे तत्काल क्रम और दाहको दूर करता है ॥ २२ ॥

तावत्संवर्द्धयेत्तक्रंयावत्स्याद्बद्धविट्कता।
ततस्तद्ध्रासयित्वातदन्नंसंभोजयेत्क्रमात् ॥ २३ ॥

अर्थ-तबतक महेको बढाता रहे जबतक मल बन्धहो फिर उसे न्यून करताहुआ क्रमसे अन्नका सेवन करे ॥ २३ ॥

अथार्शः।

पृथग्दोपैःसमस्तैश्चशोणितात्सहजानिच।
अर्शांसिपट्प्रकाराणिविद्याद्गुदवलित्रये ॥ २४ ॥

सोंठ(अरलु)टेंट,बेलकी गिरी,लज्जालु,मोचरस,आमकी गुठली,इन्द्रजौ, अतीस, इनको बराबर ले गंगाधर चूर्ण बनावे यह चूर्ण चावलोंके धोवनके साथ शहद मिलाकर एककर्ष मात्र पान करनेसे तीक्ष्ण संग्रहणी और सब अती सारके रोगों को शान्त करता है ॥ १५ ॥

नागरातिविषामुस्तंधातकीसरसांजनम्।
वत्सकत्वक्फलंबिल्वंपाठाकटुकरोहिणीम् ॥ १६ ॥
पिबेत्समांशतश्चूर्णंसक्षौद्रंतंदुलांबुना।
पैत्तिकेग्रहणीदोषेरक्तंयच्चोपवेश्यते ॥ १७ ॥
अर्शांस्यथगुदेशूलंजयेच्चैवप्रवाहिकाम्।
नागराद्यमिदंचूर्णंकृष्णात्रेयेणपूजितम् ॥ १८ ॥

अर्थ-सोंठ,अतीस,नागरमोथा,धवईके फूल,रसोत,कुरैयाकी छाल, इन्द्रजौ, पाठ,बेलगिरी और कुटकी इनका चूर्ण चावलके धोवन और शहदके साथ पिये तो रक्तस्रहित पित्तग्रहणी नष्ट हो यह नागरादिचूर्ण कृष्णात्रेयने कहा है ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥

शुद्धाहिफेनबलिसूतकपर्दभस्म-
हालाहलोपणविशुद्धसुवर्णबीजैः ॥
अंभोधिपंक्तिकरशैलधराष्टविंश-
त्यंशैर्विचूर्णिततमेग्रहणीकपाटः ॥ १९ ॥

अर्थ-शुद्ध अफीम ४ भाग गंधक १० भाग पारा २ भाग कौडीकी भस्म ७ भाग हलाहल १ भाग शुद्ध धतूरेके बीज २० भागले सबका चूर्ण करे तो यह ग्रहणीकपाटरस सिद्ध है ॥ १९ ॥

यची छोटी ८ भाग इसप्रकार क्रमसे बढायेहुए इन औष-धोंका चूर्णकर उसकी बराबर मिश्री मिलाकर खाय तौ बवासीर, मन्दाग्नि, गुल्म, अरुचि, श्वास, कंठरोग, हृदयरोग यह दूर होते हैं ॥ २७ ॥

चूर्णीकृताःषोडशसूरणस्यभागास्तदर्द्धनचचित्रकस्य ।
महौषधार्द्धमरिचस्यचैकोगुडेनदुर्नामजयायपिण्डी २८

अर्थ-जिमीकंद चूर्णकिया हुआ १६ भाग, चीता आठ भाग, सोंठ २ भाग। काली मिर्च एकभाग यह एकत्र कर गुडके साथ खानेसे बवासीर रोग दूर होता है ॥२८॥

तक्रंसकृष्णंपिबतांनराणांदुर्नामनामश्रवणंकुतःस्यात ।
यथासर्वाणिकुष्ठानिहतःखदिरबीजकौ।
तथैवार्शांसिसर्वाणिवृक्षकारुष्करौहतः॥ २९ ॥

अर्थ-जो मनुष्य मट्ठेमें काली मिर्च डालकर पीते हैं उनको बवासीर नहीं रहती जिस प्रकार खैरसार, विजयसार, सबकुष्ठोंको दूर करतेहैं। इसीप्रकार कुडे और भिलावेका प्रयोग सब प्रकारसे अर्शरोग दूर करता है॥२९॥

हरिद्रायाःप्रयोगेणप्रमेहाइवषोडश ।
क्षाराग्निभ्यांनिवर्त्तनेनथार्शयागुदांकुराः॥३०॥

अर्थ-जैसे हरिद्राके प्रयोगसे सोलह प्रमेह नष्ट होते हैं इसीप्रकार क्षार और अग्निके प्रयोगसे बवासीरके मस्से नष्ट होजाते हैं ॥ ३० ॥

मृत्तिकालिप्तसूरणंकन्दंपक्त्वाग्नौपुटपाकवत् ।
दद्यात्सतैललवणंदुर्नामविनिवृत्तये ॥३१॥

अर्थ–पृथक् २ तीनों दोष तीनों मिलके एक चौथा तथा रक्तसे पांचवा और सहज छठवाँ इस प्रकार बवासीर रोग छः प्रकारका है ॥ २४ ॥

दोषास्त्वङ्मांसमेदांसिसंदूष्यविविधाकृतीन् ।
मांसांकुरानपानादौकुर्वत्यर्शांसिताञ्जगुः ॥ २५ ॥

अर्थ–त्वचा मांस और मेदको दूषित करके वातादि दोष अनेक प्रकारके मांसके अंकुरोंको गुदाआदिमें उत्पन्न करतेहैं उन अंकुरोंको अर्श कहतेहैं यह नासिका आदिमें भी होता है ॥ २५ ॥

मरिचमहौषधिचित्रकसूरणभागायथोत्तरंद्विगुणाः ।
सर्वसमोगुडभागःप्रोक्तोयंमोदकःप्रसिद्धफलः ॥
ज्वलनंज्वलयतिजाठरमुन्मूलयतिप्रभूतिगुल्मगदान् ।
निःशेषयतिश्लीपदमर्शांसिचनाशयत्याशु ॥ २६ ॥

अर्थ–कालीमिर्च १ भाग सोंठ २ भाग चित्रक ४ भाग जिमीकंद ८ भाग ऐसे एकसे एक दूना लेकर सबके समान १५ भाग गुड लेकर लड्डू बना सेवन करे। यह सूरण मोदक जठराग्निको प्रदीप्त करता है गुल्म और शूलादि श्लीपद और अर्शरोगोंको दूर करता है ॥ २६ ॥

शुण्ठीकणामरिचनागदलत्वगेलं
चूर्णीकृतंक्रमविवर्द्धितमेतदंत्यात् ।
खादेन्नरःसमसितंगुदजाग्निमान्द्य-
गुल्मारुचिश्वसनकण्ठहृदामयेषु ॥ २७ ॥

अर्थ–सोंठ १ भाग पीपल २ भाग कालीमिर्च ३ भाग नागकेशर ४ भाग तेजपात ५ दालचीनी ६ तज ७ इला-

पथ्यापिप्पलिसंयुक्तंचूर्णंसौवर्चलंपिबेत् ।
मस्तुनोष्णोदकेनाथमत्त्वादोपगतिंभिषक् ॥ ३८ ॥

अर्थ-स्वभावसे रस शेष रहनेसे तीनों दोषोंके विकारसे अथवा भोजनके विपरीत पनेसे अजीर्ण होता है, वह अजीर्ण छः प्रकारका है सोंठ, मिरच, पीपल, तीनों एक तोला सेंधानोन २ तोले गंधक ३ तोले इन सबको कूट पीस नींबूके रसमें खरल करै यह क्षुद्बोधन रसहै इसके खानेसे भूख बढ़ती है ३ मासेकी मात्रा है इसे बहुत भूख लगती है बुद्धिमान पेटके ऊपर हींग सोंठ मिरच पीपल सेंधानोन गरम पानीसे पेटके ऊपर लेप करके दिनमें सो रहै तो सब अजीर्ण शान्त होजाता है हरड पीपल सोंचरलोनका चूरन दहीकेपानीसे अथवा गरम पानीसे दोषका बलाबल देख पीनेको दे ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

चतुर्विधमजीर्णंचमंदानलमथारुचिम् ।
आध्मानंवातगुल्मंचशूलंचाशुनियच्छति ॥ ३९ ॥

अर्थ-इससे चारों प्रकार का अजीर्ण मन्दाग्नि अरुचि अफारा वात गुल्म और शूलका शीघ्र ही नाश होताहै ३९

त्रिकटुकमजमोदसैन्धवंजीरकेद्वे
समधरणिधृतानामष्टमोहिंगुभागः ।
प्रथमकवलभुक्तंसर्पिषाचूर्णमेत-
ज्जनयतिजठराग्निंवातरोगान्निहंति ॥ ४० ॥

अर्थ-सोंठ, मिर्च, पीपल, अजमोद, सेंधानमक दोनों जीरे ये समान भाग ले इनसे आठवां भाग भुनी हींग ले यह चूर्ण घृतके साथ पहले ग्रासमें खाय तो जठराग्नि दीप्त होकर वातरोगों को दूर करता है ॥ ४० ॥

अर्थ--जिमीकंदको मिट्टीमें लपेटकर पुटपाककी विधिसे पकावे उसमें तेल और लवण मिलाकर देनेसे गुदाके मस्से नष्ट होते हैं ॥ ३१ ॥

नवनीततिलभ्यासात्केशरनवनीतशर्कराभ्यासात् ।
केशरदधिमथिताभ्यासाद्गुदजाः शाम्यंतिरक्तवहाः ३२

अर्थ--काले तिल और मक्खनके नित्य अभ्याससे तथा नागकेशर मक्खन मिश्रीके नित्य अभ्याससे अथवा दहीके पानी और मट्ठाके नित्य अभ्याससे बवासीरके मस्से शान्त होते हैं ॥ ३२ ॥

देवदालीकषायेणशौचमाचरतांनृणाम् ।
किंवातद्धूमसेवाभिःकुतःस्याद्गुदजांकुरः ॥ ३२ ॥

अर्थ--अथवा बन्दालीके काढेसे शौच करनेसे अथवा इसका धूम देनेसे बवासीरके मस्से नहीं रहते ॥ ३३ ॥

सिन्धूत्थंदेवदाल्याश्चबीजंकांजिकपेपितम् ।
गुदांकुरान्प्रलेपेनपातयेदुल्वणानपि ॥ ३४ ॥

अर्थ--सेंधालवण बन्दालके बीज कांजीके साथ पीसकर लेप करनेसे कठिन बवासीरके मस्से भी नष्ट होजातेहैं ३४

अथाजीर्णम् ।

प्रकृत्यारसशेषाद्रात्रिभिर्दोषैरपाकृतः ।
भवन्तिषडजीर्णानिविषम्याद्शनस्यच ॥ ३५॥
व्योषसिंधूत्थवलिभिरेकद्वित्रिलवैःकृतः ।
निंवाम्बुमर्दितंगाढंनाम्नाक्षुद्बोधनोरसः ॥ ३६ ॥
सपादटंकमात्रोयंभुक्तःक्षुत्कारकोभृशम् ।
आलिप्यजठरंप्राज्ञोहिंगुत्र्यूषणसैन्धवैः । ॥

समस्ताजीर्णशूलघ्नंसद्यःक्षुद्वृद्धिकारकम् ।
विडंगंनागरंकृष्णापथ्यावह्निविभीतकाः ॥४६॥

अर्थ-यह सम्पूर्ण अजीर्ण शूल दूर कर भूंख बढाताहै ॥ वायविडंग, सोंठ, पिप्पली, चीता, हरड, बहेडा ॥ ४६ ॥

वचागुडूचीभल्लातंविषंचात्रनियोजयेत् ।
एतानिसमभागानिगोमूत्रेणैवपेषयेत् ॥ ४७ ॥
गुंजाभागुटिकाकार्यादद्यादार्द्रकजैरसैः ।
एकामजीर्णयुक्तायद्वेविषूच्यांप्रदापयेत् ॥ ४८ ॥
तिस्रोभुजंगदष्टायचतस्रः सन्निपातिनं ।
गुटिकाजीवनीनाम्नासंजीवयतिमानवम् ॥ ४९ ॥

अर्थ-वच, गिलोय, शुद्ध भिलावा, शुद्ध तेलिया मीठा इनकी समान मात्रा ले गोमूत्रमें खरलकर चोंटली प्रमाण गोली बनावे, अजीर्णवालेको एक गोली अदरखके रसमें दे, विषूचिकावालेको दोन, सर्पकाटे हुएको तीन और सन्निपातवालेको चारगोली दे तो रोग जाय यह संजीवनी गुटिका मनुष्योंको जिवाताहै ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥

पथ्यानागरकृष्णाकरंजबिल्वादिभिःसमंखंडम् ।
वडवानलइवजरयतिबहुगुर्वतिभोजनंचूर्णम् ॥ ५० ॥

अर्थ-हरड, सोंठ, पिप्पली, करंजुआ, बेल इन सबके समान खांड डालकर यह चूर्ण सेवन करनेसे वडवानलकी समान अग्नि प्रज्वलित करताहै ,और भारी अति भोजनको भी पचा देता है ॥ ५० ॥

सिन्धूत्थपथ्यमगधोद्भववह्निचूर्ण-
मुष्णांबुनापिबतियःखलुनष्टवह्निः।
तस्यामिषेणसघृतेनसहान्नपानं
भस्मीभवत्यशितमात्रमपिक्षणेन ॥ ४१ ॥

अर्थ-सेंधानमक, हरड़, पीपल, चीता इनका चूर्ण जो मन्दाग्निवाला गरम जलके साथ पीताहै वह आमिष घृत के साथ महाअन्न भक्षण करै तो भी क्षणमें भस्म होजाताहै यह खातेही गुण देताहै ॥ ४१ ॥

पंचसेरमितोग्राह्यःपक्वजंबीरजोरसः ।
टंकत्रयमितंतत्रभर्जितंरामठंक्षिपेत् ॥ ४२ ॥
राजिकापिप्पलीशुण्ठीयवानीमरिचंतथा ।
लवंगंसैन्धवंचैवविडंचदशटंककम् ॥ ४३ ॥
चत्वारिंशट्टंकमितंतत्रसौवर्चलंक्षिपेत् ।
सर्वमेकत्रसंमेल्यस्थापयेत्काचपात्रके ॥ ४४ ॥

अर्थ-पांचसेर पक्के जम्बीरी नींबूकारस, चार माशे भूनी हींग, राई, पीपली, सोंठ, अजवायन, काली मिर्च, लौंग सेंधानमक, वायविडंग, यह सब दशटंक (चार माशेका एक टंक) डाले और चालीसटंक सौंचल नमक डाले यह सब एकजगह मिलाकर कांचके पात्रमें रक्खे ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

दिनित्वास्थापयेद्धर्मेविंशतिदिनानगन् ।
नाम्नाजंबीरसंधानमिदंभवत्यमृतोपमम् ॥ ४५ ॥

अर्थ-और इसे दिनमें धूपमें बीस दिन रक्खे यह ज-म्बीरसंधान नाम उत्तम औषधिहै ॥ ४५ ॥

सर्पिषाप्रातरुत्थायनरोवह्निप्रदीपनम् ।
विजयापिप्पलीशुंठीत्रिसमंपरिकीर्त्तितम् ॥
अग्निसंदीपनंनृणांत्रिदोषामयनाशनम् ॥५७॥
सैन्धवसमूलमगधाचव्यानलनामहरीतक्यः ॥
क्रमवृद्धाग्निवृद्धिंकरोतिवडवानलंचूर्णम् ॥५८॥

अर्थ-घीके साथ प्रातःकाल उठकर खाय तो अग्नि प्रदीप्त होतीहै,भंग,पीपल,सोंठ यह मनुष्योंके त्रिदोष शान्त करनेवाली हैं और अग्नि दीप्त करती हैं. यह तीनों बराबर लेकर सेवन करे. सैंधानिमक १ भाग,पीपलामूल २ भाग, पीपल ३ भाग,चव्य ४ भाग, चीतेकी छाल ५ भाग और जंगी हरड ६ भाग, इस क्रमसे इन औषधियोंका चूर्ण बनावे. यह वडवानल चूर्ण अग्निको बढाता है ॥ ५७ ॥ ५८ ॥

पथ्यानागरपिप्पलीसरुचकैःश्यामान्वितैःपंचभि-
श्चूर्णंपंचसमंसमस्तरुचिकृत्कामाग्निसंदीपनम् ॥
प्राणोत्साहविवर्द्धनंरुचिकरंप्लीहापहंगुल्मनुत् ।
प्रत्याध्मानगरोदरार्शशमनंचामेनिलेपूजितम् ॥५९

अर्थ-हरड,सोंठ, पीपल, काला नोंन, पीपलमूल यह पांचों वस्तु बराबर ले इनका चूर्ण कर सेवन करनेसे रुचि करनेवाला तथा कामाग्निको दीप्त करनेवाला है. प्राणमें उत्साह बढानेवाला,रुचि करनेवाला,प्लीहा गुल्म हरनेवाला प्रत्याध्मान गर उदर अर्शको शान्त करता आम और वातरोगमें श्रेष्ठहै ॥ ५९ ॥

शुद्धंसूतंगंधकंचपलमानंपृथक्पृथक् ।
हरीतकीचद्विपलानागरस्त्रिपलःस्मृतः ॥६०॥

हिंगुभागोभवेदेकोवचाचाद्विगुणामता ।
पिप्पलीत्रिगुणाज्ञेयाशृंगवेरंचतुर्गुणम् ॥ ५१ ॥
यवानीस्यात्पंचगुणापड्गुणाचहरीतकी ।
चित्रकंसप्तगुणितंकुष्ठंचाष्टगुणंमतम् ॥ ५२ ॥
एतद्वातहरंचूर्णपीतमामप्रशान्तये ।
पिवेद्दधिमस्तुनावासुरयाकोष्णवारिणा ॥ ५३ ॥

अर्थ-हींग एकभाग, वच दो भाग, पीपली तीनभाग, अदरख चारभाग, अजवायन पांचभाग, हरड छःभाग चीता सातभाग, कूठ आठभाग, यह औषधी एकत्र कर चूर्ण बनावे, यह चूर्ण वातहर, आमनाशक है. इसको दही के पानी अथवा गरम जलके साथ ले अथवा सुरा या लह सनके साथ ले ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥

सोदावर्त्तमजीर्णंचप्लीहानमुदरंतथा ।
अंगानियस्यशीर्यन्तेविषंवायेनभक्षितम् ॥ ५४ ॥

अर्थ-उदावर्त अजीर्ण प्लीहा उदररोग नष्ट होते हैं, जिसके अंग विशीर्ण होते हो अथवा जिसने विष भक्षण किया हो ५४

चूर्णमग्निमुखंनामसर्वोपद्रवमाहरेत् ।
हरीतकीभक्ष्यमाणानागरेणगुडेनवा ॥ ५५ ॥

अर्थ-यह अग्निमुखनाम चूर्ण सब उपद्रव दूर करता है। सोंठ और गुडके साथ हरड खानेसे ॥ ५५ ॥

सैन्धवोपहितावापिशीतत्वेनाग्निदीपनी ।
शुंठीचूर्णंसमायुक्तंयवक्षारंसमालिहेत् ॥ ५६ ॥

अर्थ-वा सेंधवके साथ खानेसे शीतमें अग्नि दीप्त करती है। जो सोंठके चूर्णके साथ जवाखार ॥ ५६ ॥

कृष्णाचमरिचंतद्वत्सिंधूत्थंत्रिपलंपृथक् ।
चतुष्पलाचविजयामर्दयेन्निम्बुकद्रवैः ॥ ६१ ॥
पुटानिसप्तदेयानिघर्ममध्येपृथक्पृथक् ।
अजीर्णारिरयंप्रोक्तःसद्योदीपनपाचनः ॥
भक्षयेद्द्विगुणंभक्ष्यंपाचयेद्रेचयेदपि ॥ ६२ ॥

अर्थ-शुद्धपारा४तोले, गंधक५तोले, हरड८तोले सोंठ१२ तोले, पीपल, मिर्च, सैंधानोन प्रत्येक बारह २ तोले भांग १६तोले इन सबका चूर्णकर धूपमें नींबूके रसकी सात पुटदे, यह अजीर्णारि रस दीपन पाचनहै इसके सेवनसे मनुष्य दूना भोजन करनेलगताहै यह दस्तावर भी है॥६०॥६१॥६२॥

अथ विषूचिका।

सूचीभिरिवगात्राणितुदन्संतिष्ठतेऽनिलः ।
यस्याजीर्णेनसावैद्यैर्विषूचीतिनिगद्यते ॥ ६३ ॥

अर्थ-जिस अजीर्णसे अंगमें वायु रहकर सुई छेदनेकीसी पीडा करै, वैद्य उसको विषूचिका कहते हैं. इस रोगमें अपरिमित आहारवाले ग्रसित होते हैं ॥ ६२ ॥

दुष्टंतुभुक्तंकफमारुताभ्यां
प्रवर्त्तते नोर्द्ध्वमधश्चयस्य ।
विलंबिकांतांभृशदुश्चिकित्स्या-
माचक्षतेशास्त्रविदःपुराणाः ॥ ६४ ॥

अर्थ-जिसका खाया अन्न कफ और वायुसे दूषित होता है और न उलटी हो न दस्त हो बीचमें रहकर दुःखदे उससे 'विलंबिका' कहते हैं. यह दुःखसे जीतनेमें आती है ऐसा शास्त्र जाननेवाले कहते हैं ॥ ६४ ॥

कुष्ठसैन्धवयोःकल्कश्चुक्रतैलसमन्वितः।
विपूच्यांमर्दनंकोष्णंखलीशूलनिवारणम् ॥ ६५ ॥

अर्थ-कूठ और सेंधवके कल्कमें चूका और तेल मिलाकर विषूचिका रोगमें गरम २ मर्दन करे, यह खली और शूलका नाशक है ॥ ६५ ॥

मातुलुंगीजटाव्योषनिशाबीजंकरंजकम्।
कांजिकेनांजनंहन्याद्विपूचीमतिदारुणाम् ॥ ६६ ॥

अर्थ--बिजौरेकी जड, सोंठ, मिर्च, पीपल, हलदी, करंजके बीज इनका चूर्णकर कांजीके रसकी भावना दे गोलीकर छायामें सुखाय नेत्रोंमें अंजन करनेसे दारुण विषूचिकारोग शान्त होता है ॥ ६६ ॥

पथ्यावचाहिंगुकलिंगभृंगैः
सौवर्चलैःसातिविषैःसुचूर्णम्।
तुषांबुपीतंविनिहंत्यजीर्णं
शूलंविषूचीमरुचिंचसद्यः ॥ ६७ ॥

अर्थ-हरड, बच, हिंगु, इन्द्रजो, भांगरा, सोंचरलोन और अतीस, धानकी भूसीके जलके साथ इस चूर्णको सेवन करनेसे शूल विषूचिका और अरुचि दूर होती है ६७॥

अथ कृमिः।

ज्वरोविवर्णताशूलंहृद्रोगःश्वसनंभ्रमः।
भक्तद्वेषोतिसारश्चसंजातक्रिमिलक्षणम् ॥ ६८ ॥

अर्थ-देहमें कृमि हुओंका लक्षण कहते हैं:- अंगमें ज्वर शरीरका रंग विरंग, शूल, हृदयमें पीडाके भ्रम, अन्नमें द्वेष तथा अतिसार यह देहमें कृमि होनेके लक्षण हैं ॥ ६८ ॥

दाडिमीत्वक्कृतःक्वाथस्तिलतैलेनसंयुतः ।
त्रिदिनात्पातयत्येवकोष्ठतःक्रिमिजालकम् ॥ ६९॥

अर्थ–दाडिमीके छिलकेका क्वाथ, तिलके तेलसे संयुक्त कर पानकरनेसे तीन दिनमें पेटसे कीडा निकाल देता है ॥६९॥

पारसीकयवानीकाःपीताःपर्युषितवारिणाप्रातः ।
गुडपूर्वाःकृमिजालंकोष्ठगतंपातयंत्याशु ॥७०॥

अर्थ–प्रातःकाल उठकर गुड खाना फिर कुछ देरमें बासी पानीमें बांटकर खुरासानी अजवायन पिये तो कोठेसे उत्पन्न हुए कृमिको गिरा देता है ॥ ७० ॥

पालाशबीजस्यरसंपिबेद्वामधुसंयुतम् ।
लेह्यात्क्षौद्रिणवैडंगंचूर्णवाक्रिमिकृंतनम् ॥ ६१ ॥

अर्थ–पालाशके बीजोंका रस शहदके साथ पिये अथवा बीजोंको बांटकर मट्ठेके साथ पिये तो कृमिरोगका नाश होगा ॥ ७१ ॥

अथ पाण्डुरोगः।

पाण्डुरःश्वासकासार्त्तःपीतत्वङ्नखलोचनः ।
वम्यग्निसादश्वयथुसहितःपांडुरोगवान् ॥ ७२ ॥

अर्थ–श्वास काससे आर्त्तहुआ, पीतशरीर, नख और पीले नेत्रवाला, वमी, अग्निकी मन्दता, शोथयुक्त पुरुष पाण्डुरोगी कहाजाता है, वातादिदोष रक्तमें मासहो त्वचाको पाण्डुरंगको करदेते हैं ॥ ७२ ॥

द्विपञ्चमूलीक्वथितंसविश्वं
क...पा...

ज्वरेतिसारेश्वयथौग्रहण्यां
कासेऽरुचौकंठहृदामयेषु ॥ ७३ ॥

अर्थ-दशमूलको लेकर उसमें सोंठ मिलाय इनका काढा कर कफसे उत्पन्न हुए पाण्डुरोगमें पानकरे तो यह ज्वर, अतिसार, सूजन, संग्रहणी, कास, अरुचि, हृदयादि रोगोंमें हितकारी है ॥ ७३ ॥

त्रिफलायागुडूच्यावादार्व्यानिम्बस्यवारसम् ।
प्रातःप्रातर्मधुयुतंकामलार्त्तःपिबेन्नरः ॥ ७४ ॥

अर्थ-त्रिफला, गिलोय, दारुहलदी, नीमका रस, प्रातः काल शहत मिलाकर पीनेसे कामलारोग नाश होता है ७४

अथ रक्तपित्तम्।

क्षारकट्वम्लतीक्ष्णादेर्दग्धंपित्तंदहत्यसृक् ।
तदूर्द्ध्वाधोविनिर्यातिरक्तपित्तंतदुच्यते ॥ ७५ ॥

अर्थ--कटु अम्ल पदार्थ तथा तीक्ष्णक्षार आदिके सेवन करनेसे दग्ध होकर पित्त रुधिरको जलाता है तब वह रक्त ऊर्ध्व वा अधो अथवा दोनोंमार्गसे निकलने लगता है, ऊर्ध्वगामी नासिका नेत्र कान मुखसे और अधोगामी लिंगयोनि गुदासे निकलता है ॥ ७५ ॥

पक्वोदुंबरकाश्मर्यपथ्याखर्जूरगोस्तनी ।
मधुनाहंतिसंलीढारक्तपित्तंनसंशयः ॥ ७६ ॥

अर्थ-पक्के कटूमरके फलका रस शहदके संग पिये खंभारी, हरड, छुहारा अथवा दाख इनको शहदमें चाटे तो अवश्य रक्तपित्त शान्त होगा इसमें सन्देह नहीं ॥ ७६॥

मध्वाटरूपकरणंयदितुल्यभागो
कृत्वानरःपिबतिपुण्यतरःप्रभाते ॥
तद्रक्तपित्तमतिदारुणमप्यवश्य-
माशुप्रशाम्यतिजलैरिववह्निपुंजः ॥ ७७ ॥

अर्थ-शहद अडूसा इन दोनोंको बराबर भाग लेकर जो मनुष्य प्रातःकालमें पान करता है उसका दारुण रक्तपित्तभी अवश्य शीघ्रतासे शान्त होजाता है, जैसे जलसे अग्नि शान्त होजाती है ॥ ७७ ॥

चन्दनंनलदंलोध्रमुशीरंपद्मकेशरम् ।
नागपुष्पंचबिल्वंचभद्रमुस्तंसशर्करम् ॥ ७८ ॥
ह्रीबेरंचैवपाठाचकुटजोत्पलमेवच ।
शृंगवेरंचातिविषाधातकीसरसांजनम् ॥ ७९ ॥
आम्रास्थिजम्बूसारास्थितथामोचरसोपिच ।
नीलोत्पलंसमंगाचसूक्ष्मैलादाडिमीत्वचम् ॥८०॥
चतुर्विंशतिरेतानिसमभागानिकारयेत् ।
तंडुलोदकसंयुक्तंमधुनासहयोजयेत् ॥ ८१ ॥

अर्थ-लालचन्दन, जटामांसी, लोध, खस कमलफूलकी गिरी, नारियलकी छाल, नागरमोथा, मिश्री, ह्रीबेर, पाठा, कुरैया, नीलकमल, सोंठ, अतीस, धवके फूल रासना रसौत इन चौबीस औषधियोंको बराबर भाग ले और चावलके जलके संग शहदके साथ चाटे ॥ ७८ ॥ ७९॥८०॥८१॥

योगंलोहितपित्तानामर्शसांज्वरिणांतथा ।
मूर्च्छामदोपसृष्टानांतृष्णार्त्तानांप्रदापयेत् ॥ ८२ ॥
अतीसारंतथाछर्दिंस्त्रीणांचापिरजोग्रहे ।

प्रच्युतानांचगर्भाणांस्थापनंपरिशिष्यते ।
अश्विनोःसंमतोयोयोरक्तपित्तनिबर्हणः ॥ ८३ ॥

अर्थ-यह योग रक्तपित्त, अर्श, ज्वर, मूर्च्छा, मद, तृष्णाको दूर करता है, अतिसार, छर्दि, स्त्रियोंको रजोधर्म न होता हो तथा गर्भ गिरताहो तो उसका स्थापन होजाता है, यह रक्तपित्तविनाशी योग रक्तपित्तका नाशकरनेवाला है ॥ ८२ ॥ ८३ ॥

अथ कासः ।

प्राणोह्युदानमन्वेत्ययदोर्द्धमुपसर्प्पति ॥
तदासंजायतेकासःकंठहृन्नाभिकर्षणः ॥ ८४ ॥

अर्थ-जब अपने दोषोंसे कोपको प्राप्तहो प्राण उदानको साथ मिलकर ऊपरको गमन करताहै तब कंठ हृदय नाभिको आकर्षण कर खांसी उत्पन्न होतीहै ॥ ८४ ॥

पंचमूलीकृतःक्वाथःपिप्पलीचूर्णसंयुतः ॥
रसान्नमश्नतोनित्यंवातःकासश्चनश्यति ॥ ८५ ॥

अर्थ-शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, छोटीकटेरी, बडीकटेरी और गोखरू इन पांचोंकी जडको कूट पीपलीका चूर्ण मिलाय खानेसे वातकी खांसी दूर होती है ॥ ८५ ॥

हरीतकीकणाशुंठीमरिचंगुडसंयुतम् ।
कासघ्नोमोदकःप्रोक्तःस्त्वानलस्यदीपनः ॥ ८६ ॥

अर्थ-हरड, पीपल, सोंठ, मिर्च, गुड, इनको बराबर लेकर मोदक बना है यह कासहर मोदक है और अग्निको दीप्त करता है ॥ ८६ ॥

कट्फलंकतृणंभार्ङ्गीमुस्तंधान्यंवचाभया ।
शुंठीपर्पटकंशृंगीसुराह्वंचजलेशृतम् ॥ ८७ ॥

मरिचंकर्षमात्रंस्यात्पिप्पलीकर्षसंमिता ।
अर्द्धकर्षोयवक्षारःकर्षयुग्मंचदाडिमान् ॥ ८८॥
एतच्चूर्णीकृतंयुंज्यादष्टकर्षंगुडेनहि ।
शाणप्रमाणांगुटिकांकृत्वावक्रेविधारयेत् ॥
अस्याःप्रभावात्सर्वैपिकासायांत्येवसंक्षयम् ८९

अर्थ--कायफल, पिठवन, भारंगी, मोथा, धनियाँ, वच, हरड, सोंठ, पित्तपापडा, काकडाशृंगी, देवदारु इन को जलमें औटाकर फिर उसमें मिर्च १ कर्ष, पिप्पली एककर्ष, जवाखार आधा कर्ष, दाडिम दोकर्ष, यह सब चूर्णकर आठकर्ष गुड मिलावै, शाण (४ मासे) प्रमाण गुटिका बनाकर मुखमें धरे, इसके प्रभावसे सब कास क्षय होजाती है ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥

लवंगजातीफलपिप्पलीनां
भागान्प्रकल्प्याक्षसमानमानान् ।
पलार्द्धमेकंमरिचस्यदत्त्वा
पलानिचत्वारिमहौषधस्य ॥ ९० ॥

अर्थ--लौंग, जायफल, पीपल, इनको, बराबर भाग ले उसमें आधे पल काली मिर्च और चार पल सोंठ डाले९०॥

सितासमंचूर्णमिदंप्रसह्य
रोगाननेकान्प्रबलान्निहन्ति ।
कासज्वरारोचकमेहगुल्म-
श्वासाग्निमांद्यग्रहणीप्रदोषान् ॥ ९१ ॥

१ कर्ष एकतोला। २ पल ४ तोला ।

अर्थ-इनकी बराबर मिश्री लेकर चूर्ण बनाले तो यह कास, ज्वर अरोचक, प्रमेह, गुल्म, श्वास, मंदाग्नि, ग्रहणी आदि अनेक प्रबल रोग दूर करता है ॥ ९१ ॥

अथ श्वासः ।

येर्निमित्तैर्भवेद्धिक्काश्वासस्तैरेवजायते ।
हरीतकीकणाशुण्ठीमरिचंगुडसंयुतम् ॥ ९२ ॥
श्वासघ्नोमोदकःप्रोक्तःपरंचानलदीपनः ।
दशमूलीकृतःक्वाथःपौष्करेणावचूर्णितः ॥९३॥

अर्थ-जिन कारणोंसे खांसी होतीहै उन्हींसे श्वास होजाताहै. हरड, पीपल, सोंठ, कालीमिर्च, गुड, यह सम भाग लेकर इनके मोदक बनाकर खानेसे कास दूरकर अग्नि दीप्त होतीहै । अथवा दशमूलका काढाकर पुष्करमूलका चूर्ण डालकर पिये तो ॥ ९२ ॥ ९३ ॥

श्वासकासप्रशमनःपार्श्वशूलनिवारणः ।
गुडशुंठीशिवामुस्तैर्धारयेद्गुटिकांमुखे ॥ ९४ ॥

अर्थ-श्वास, कास, पार्श्वशूल दूर होता है, गुड, सोंठ, हरड, नागरमोथा इनकी गुटिका मुखमें धरे ॥ ९४ ॥

श्वासकासेपुसर्वेषुकेवलंवाविभीतकम् ।
कूष्माण्डकशिफाचूर्णपीतंकोष्णेनवारिणा ॥९५॥

अर्थ-अथवा सब श्वासकासके रोगोंमें केवल मुखमें बहेडा रखना परमहितहै, पेठा और जटामांसीका चूर्ण गरमजलके साथ पीनेसे ॥ ९५ ॥

शीघ्रंशमयतिश्वासंकासंचैवसुदारुणम् ।
सुरसंशृंगवेरस्यमाक्षिकेणसमन्वितम् ॥
पाययेच्छ्वासकासघ्नंप्रतिश्यायकफापहम् ॥९६॥

अर्थ-दारुणकास श्वास शीघ्र नष्ट होजाताहै, अथवा अंदरखका सुरस शहदके साथ पिलानेसे श्वास, कास, प्रतिश्याय, पीनस और कफरोग दूर होतेहैं ॥ ९६ ॥

शृंगीकटुत्रयफलात्रयकंटकारी-
भार्ङ्गीसपुष्करजटालवणानिपंच ।
चूर्णंपिबेदशिशिरेणजलेनहिक्का-
श्वासोर्द्ध्ववातकफमारुतपीनसेषु ॥ ९७ ॥

अर्थ-काकडासींगी और हरड, बहेडा, आमला, सोंठ, मिर्च, पीपल, भटकटैया, भारंगी, पुष्करमूल, जटामांसी इन पांचोंका चूर्ण कर ठंडे जलके साथ लेनेसे हिचकी, श्वास, उर्द्ध्ववात, कफवात, पीनसादि रोग दूर होतेहैं ॥९७॥

गुडंकटुकतैलेनमिश्रयित्वासमंलिहेत् ।
त्रिसप्ताहप्रयोगेणश्वासंनिःशेषतोजयेत् ॥ ९८ ॥

अर्थ-गुड और कडुआ तेल बराबर मिलाकर चाटनेसे यह प्रयोग तीन सप्ताहमें श्वासरोग को सम्पूर्णतासे नष्ट करदेता है ॥ ९८ ॥

रसंगंधंविषंचैवटंकणंचमनःशिला ।
एतानिटंकमात्राणिमरिचंचाष्टटंककम् ॥ ९९ ॥

अर्थ-पारा, गंधक, विष, सुहागा और मनसिलको समान भाग ले अर्थात् एक एक टंक ले और काली मिर्च आठ टंक ले ॥ ९९ ॥

एकैकंमरिचंदत्त्वाखल्वेसूक्ष्मंविमर्दयेत् ।
त्रिकटुंकटुपर्कंचदत्त्वापश्चाद्विचूर्णयेत् ॥ १०० ॥

अर्थ-एक एक मिर्च इसमें डालकर खरलकरताजाय, पीछे त्रिकुटा और पीपल, पीपलामूल, चव्य, सोंठ, चीता, कालीमिर्च, डालकर इसका चूर्ण करे ॥ १०० ॥

सर्वमेकत्रसंयोज्यकाचकुप्यांविनिक्षिपेत् ।
श्वासेकासेचमन्दाग्नौवातश्लेष्मामयेषुच ॥ १ ॥

अर्थ-फिर यह सब एकत्र कर कांचकी सीसीमें रखछोडे, श्वास, कास, मन्दाग्नि, वात श्लेष्मा रोगमें ॥ १ ॥

गुंजामात्रंप्रदातव्यंपर्णखंडेनधीमता ।
सन्निपातेषुमूर्च्छायामपस्मारेतथैवच ॥ २ ॥
अतिमोहत्वमापन्नेनस्यंदद्याद्विचक्षणः ।
रसःश्वासकुठारोऽयंसर्वश्वासगदप्रणुत् ॥ ३ ॥

अर्थ-चोंटलीमात्र पानके साथ देना चाहिये, सन्निपात, मूर्च्छा, अपस्मार अधिक मोह होजाय तो इसकी नास देनी चाहिये, यह श्वासकुठाररस सम्पूर्ण श्वासरोगका दूर करनेवाला है ॥ २ ॥ ३ ॥

अथ हिक्का।

विदाहिगुरुविष्टंभिरूक्षाभिष्यंदिभोजनैः ।
शीतपानाशनस्थानरजोधूमानपानिलैः ॥ ४ ॥
व्यायामकर्मभाराध्ववेगाघातापतर्पणैः ।
हिक्काश्वासश्चकासश्चनृणांसमुपजायते ॥ ५ ॥
मधुनैरंडतैलेनलिंगुंलुंगरसंपिबेत् ।
हिक्कार्तोमधुनालिह्यात्पुंडरीकर्सभान्विताम्॥६॥

अर्थ–जो पदार्थ दाहकारक, भारी, कब्ज करनेवाले तथा रूखे और कफकारक हैं इनके पीने खानेसे तथा बहुत ठंडे स्थानमें बैठनेसे धूरि धुआं घाम और पवनके सेवनसे मेहनत, बोझ उठाना, रस्ता चलना, मलमूत्रादिके वेगको रोकना, तथा उपवासादिके करनेसे मनुष्योंको हुचकी, कास, श्वास यह रोग उत्पन्न होतेहैं. शहद और सॉंचरलोनके साथ बिजौरेनींबूका रस पिये अथवा शहदके साथ सोंठ आमला और पीपलका चूर्ण चाटे॥४॥५॥६॥

तृणामलकशुंठीनांचूर्णमधुसितायुतम् ।
मुहुर्मुहुःप्रयोक्तव्यंहिक्काश्वासनिवारणम् ॥
हिक्काश्वासीपिबेद्भार्ङ्गीसविश्वामुष्णवारिणा ॥ ७ ॥

अर्थ–सुगन्धि तृण, आमले, सोंठ इनका चूर्ण कर मिश्री डाल शहदके साथ चाटे, यह वारंवार चाटनेसे हिक्का और श्वासरोग दूर होताहै. भारंगी और सोंठ गरमजलके साथ सेवन करनेसे हिचकी और श्वासरोग दूर होता है ॥ ७ ॥

अथ क्षयः।

श्लेष्माधिक्याद्व्यवायाद्यैःपीडितोयः प्रशुष्यति।
कासश्वासार्दितोरक्तंवमेच्छुक्लेक्षणोज्वरी ॥ ८ ॥

अर्थ–श्लेष्मा अधिक होनेसे व्यवायादिसे पीडितहो सूखता जाय कासश्वाससे अर्दितहो रक्तकी वमन करै शुक्ल नेत्र हो जाय, ज्वर हो जाय ॥ ८ ॥

अग्निमांद्यतृषायुक्तोरिरंसुर्मांसलोलुपः ।
विस्वरश्छर्दिमान्दीनस्सज्ञेयःक्षयपीडितः॥ ९ ॥
तालीशोपणविश्वपिप्पलितुगाःकर्षाभिवृद्धास्त्रुटिः

कर्पार्द्धत्वगपिप्रकामधवलाद्वात्रिंशकर्षासिता ।
तालीशाद्यमिदंसुचूर्णमरुचाचाध्मानमंदानल-
श्वासच्छर्द्यतिसारशोपकसनप्लीहज्वरेशस्यते ११०

अर्थ-मन्दाग्नि, प्यास, विहारकी इच्छा, मांसलोलुपता स्वरभंग, छर्दिमान, दीनमन, यह लक्षण क्षयवाले मनुष्यके जानने, तालीशपत्र १ कालीमिर्च २ सोंठ ३ पीपल ४ वंशलोचन ५ तोले दालचीनी छःमासे मिश्री ३२तोले यह तालीशादिचूर्ण अफारा, मंदाग्नि, श्वास, छर्दि, अतिसार, शोप, कास, प्लीहा ज्वररोग इसकेचूर्ण सेवन करनेसे दूर होते हैं ॥ ९ ॥ ११० ॥

शर्करामधुसंयुक्तंनवनीतंलिहेत्क्षयी ।
पिबेन्नागबलामूलंसार्द्धकर्षविवर्द्धितम् ॥ ११ ॥
पलक्षीरयुतंमांसंक्षीरवृत्तिरनन्नभुक् ।
एपप्रयोगःपुण्यायुर्बलारोग्यकरःपरः ॥ १२ ॥

अर्थ-अथवा क्षयरोगवाला मिश्री, शहत और मक्खन यह तीन चीजें मिलाकर चाटे तो क्षयरोग जाय छःछः मासे बढाता हुआ कंघहीकी जडका चूर्ण पिये तो जाय अथवा चार तोले दुग्धयुक्त मांस खाय, क्षीरवृत्तिसे रहे, अन्नभोजन नकरे, यह प्रयोग आयु, बल और आरोग्यका करनेवाला है ॥ ११ ॥ १२ ॥

कुकुभत्वङ्नागबलावानरिबीजंसुचूर्णितंपक्वम् ।
भुक्तंमधुघृतयुक्तंससितंयक्ष्मादिकासहरम् ॥ १३ ॥
चूर्णंस्वदंष्ट्राफलवाजिगन्धा-
समन्वितंमाक्षिकसंयुत

क्षीरेणसार्द्धंपरिपीयमानं
क्षयंचकासंविनिहंतिपुंसाम् ॥ १४ ॥
लवंगशुद्धकर्पूरमेलात्वङ्नागकेसरम् ।
जातीफलमुशीरंचनागरंकृष्णजीरकम् ॥ १५ ॥
कृष्णागुरुतुगाक्षीरीमांसीनीलोत्पलंकणा ।
चंदनंतगरंवालंकंकोलंचेतिचूर्णयेत् ॥ १६ ॥
समभागानिसर्वाणिसर्वेभ्योऽर्द्धासिताभवेत् ।
लवंगाद्यमिदंचूर्णराजार्हंवह्निदीपनम् ॥ १७ ॥

अर्थ—कोहवृक्षकी छाल, ककहीकी जड, शूकशिम्बीके बीज, चूर्णकर पक्क करके इनको मधु घृतसे युक्त मिश्रीडालकर खाय तो यक्ष्मा और कासरोग दूर होता है. गोखरू, मैनफलका चूर्ण असगंधका चूर्ण कर इसमें शहद डालकर दूधके साथ पिये तो क्षय और कासरोग दूर होते हैं. लौंग, भीमसेनी कपूर, इलायची, दालचीनी, नागकेशर, जायफल, खस, सोंठ, कालाजीरा, काली अगर, वंशलोचन जटामांसी, नीलाकमल, पीपल, श्वेतचन्दन, तगर, नेत्रवाला और कंकोल इन अठारह औषधियोंको समान भाग लेकर चूर्ण करे, चूर्णसे आधी मिश्री मिलावै, यह लवंगादिचूर्ण है, यह राजोंके योग्य अग्निको प्रदीप्त करनेवाला है ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥

रोचनंतर्पणंवृष्यंत्रिदोषघ्नंबलप्रदम् ।
हृद्रोगंकंठरोगंचकासंहिक्कांचपीनसम् ॥ १८ ॥
यक्ष्माणंतमकंश्वासमतीसारमुरःक्षतम् ।
प्रमेहारुचिगुल्मादिग्रहणीमपिनाशयेत् ॥ १९ ॥

अर्थ—यह रुचिकर, शरीरपुष्टिकरता, स्त्रीभोगकी शक्ति-

देताहै, वात पित्त कफसे दोषोंको दूर कर बलकरताहै, हृदयरोग, कंठरोग, खांसी, हिचकी, पीनस, खई, तमक, श्वास, अतीसार, अरुचि, प्रमेह, गोला, संग्रहणी, सब रोग दूर होते हैं ॥ १८ ॥ १९ ॥

कुमुदेश्वररस।

पारदंशोधितंगन्धमभ्रकंचसमंमतम् ।
तदर्द्धंदरदंदद्यात्तदर्द्धांचमनःशिला ॥ १२० ॥

अर्थ-शुद्धपारा, शुद्ध गंधक, अभ्रकभस्म, यह सब समान भागले इससे आधा हिंगुल, हिंगुलका आधा मनसिल १२०

सर्वार्द्धंमृतलोहंचखल्वमध्येविनिक्षिपेत् ।
द्विःसतभावनादेयाशतावर्य्यारसेनच ॥ २१ ॥
ततः सिद्धोभवत्येपकुमुदेश्वरसंज्ञकः ।
सितयागरिचेनाथगुंजाद्वित्रिप्रमाणतः ॥ २२ ॥
भक्षयेत्प्रातरुत्थायपूजयेत्त्विष्टदेवताम् ।
यक्ष्माणमुग्रंहन्त्येववातपित्तकफामयान् ॥ २३ ॥
ज्वरादीनखिलान्रोगान्यथादैत्याञ्जनार्दनः ।
सतताभ्यासयोगेनवलीपलितनाशनम् ॥ २४ ॥

अर्थ-सबसे आधी लोहभस्म ले, इन सबकी खरलकर शतावरीके रसकी सात भावनादे, इसको दो या तीन चोटली काली मिर्च और मिश्रीके चूर्णसे दे, यह कुमुदेश्वररस राजयक्ष्मा, वातरोग, पित्तरोग, कफरोग और सब ज्वरादिरोगोंका नाश करता है, जैसे दैत्योंको जनार्दन नाश करतेहैं निरन्तर अभ्यास करनेसे वली और पलित रोग नाश होते हैं ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥

रसेनतुल्यंकनकंतयोस्तु
साम्येनयुंज्यान्नवमौक्तिकानि ॥
रसप्रमाणोवलिरंधभागः
क्षारश्चसर्वैतुपवारिणातु ॥ २५ ॥
संमर्द्यघस्रंसुविधायगोलं
दिनेपचेत्तंलवणेमपूर्णे ॥
भाण्डेमृगांकोयमतिप्रगल्भः
क्षयाग्निमांद्यग्रहणीगदेषु ॥ २६ ॥

अर्थ-पारेकी बराबर सोनेके वर्क और दूने मोती पारे
बराबर गंधक और सुहागा जवाखार इन सबको धान्य...
...के जलमें एकदिन खरलकर गोला बनावे फिर एक-
...में निमक भरकर पात्रका मुख बंदकर चुल्हेपर चढावे
स... ...पहरकी आग दे तो यह मृगांकरस बनै, यह क्षय,
भीम... ...संग्रहणीरोगको दूर करे ॥ २५॥ २६ ॥
फल, ...
जटामांस... ...षणाभिर्मधुपिप्पलीभि-
वाला और ... ...येोनतताधिकस्तु ॥
भाग लेकर चू... ...कोमयोज्यं
लवंगादिचूर्ण है, ये ... ॥ १२७ ॥
वाला है ॥ १३ ॥ १४ ...
रोचनंतर्पणंवृष्यंत्रिदो...
हृद्रोगंकंठरोगंचकासांह...
यक्ष्माणंतमकंश्वासमतीसा...
प्रमेहारुचिगुल्मादिग्रहणीमा...
अर्थ-यह रुचिकर, शरीरपुष्टिकरत...

पदार्थ न खाय (बैंगन बेलफल तेल करेले नखाय) स्त्री संग और क्रोधका त्याग करे ॥ २७ ॥

इति श्रीगोस्वामिशिवानंदभट्टविरचिते वैद्यरत्ने पं० ज्वालाप्रसादमिश्र कृत-भाषाटीकायां द्वितीयः प्रकाशः ॥ २ ॥

अथारुचिः।

अरोचकोभवेद्दोषैर्जिह्वाहृदयसंश्रयैः ॥
सन्निपातेनमनसःसन्तापेनचपंचमः ॥ १ ॥

अर्थ-वातादिदोष, जिह्वा और हृदयमें आश्रित हो मनको बिगाडते हैं तब अरुचि होती है अर्थात शोक भय लोभ और क्रोध आहार तथा गंध इन भेदोंसे अरुचि पांचप्रकारकी है ॥ १ ॥

अम्लिकागुडतोयंचत्वगेलामरिचान्वितम् ॥
अभक्तच्छन्दरोगेषुशस्तंवलावधारणम् ॥ २ ॥

अर्थ-इमली और गुडके शरवतमें तज इलायची और काली मिर्चका चूर्ण मिलाकर मुखमें धारण करनेसे अरुचि दूर होती है ॥ २ ॥

कारव्यजाजिमरिचंद्राक्षावृक्षाम्लदाडिमम् ॥
सौवर्चलंगुडंक्षौद्रमेषांकार्यावटीशुभा ॥ ३ ॥

अर्थ-करौंजी, जीरा, मिर्च, मुनक्का दाख, दाडिम, सौंचरलोन गुड और शहद यह सबमकार की अरुचिको दूर करता है ॥ ३ ॥

बदरास्थिमितानास्येधृताऽरोचकनाशिनी ॥

अर्थ-बेरकी मींगीकी बराबर गुटिका मुखमें धरनेसे अरुचि दूर होती है।

रसेनतुल्यंकनकंतयोस्तु
साम्येनयुंज्यान्नवमौक्तिकानि ॥
रसप्रमाणोवलिरंध्रभागः
क्षारश्चसर्वतुपवारिणातु ॥ २५ ॥
संमर्द्यपत्रंसुविधायगोलं
दिनेपचेत्तंलवणेनपूर्णे ॥
भाण्डेमृगांकोयमतिप्रगल्भः
क्षयाग्निमांद्यग्रहणीगदेषु ॥ २६ ॥

अर्थ–पारेकी बराबर सोनेके वर्क और दूने मोती पारेकी बराबर गंधक और सुहागा जवाखार इन सबको धान्यकी भूसीके जलमें एकदिन खरलकर गोला बनावें फिर एक-पात्रमें निमक भरकर पात्रका मुख बंदकर चुल्हेपर चढावे चार पहरकी आग दे तो यह मृगांकरस बने, यह क्षय, मंदाग्नि, संग्रहणीरोगको दूर करे ॥ २५॥ २६ ॥

साज्योपणाभिर्मधुपिप्पलीभि-
र्वल्लोस्यदेयोनततोधिकस्तु ॥
पथ्यंहितंशीतलमेवयोज्यं
त्याज्यंसदापित्तकरंविदाहि ॥ १२७ ॥

इति श्रीगोस्वामिशिवानंदभट्टविरचिते
वैद्यरत्ने द्वितीयःप्रकाशः ॥ २ ॥

अर्थ–चागर्ता काली मिरचके चूर्णके संग घाय अथवा पीपलके चूर्ण और शहदके साथ भक्षण करे और इसके ऊपर पथ्य हलके पदार्थोका भोजन करे पान्न दाह करनेवाले,

पदार्थ न खाय (बैंगन बेलफल तेल करेले नखाय) स्त्री संग और क्रोधका त्याग करे ॥ २७ ॥

इति श्रीगोस्वामिशिवानंदभट्टविरचिते वैद्यरत्ने प० ज्वालाप्रसादमिश्र कृत-भाषाटीकायां द्वितीयः प्रकाशः ॥ २ ॥

अथारुचिः ।

अरोचकोभवेद्दोषैर्जिह्वाहृदयसंश्रयैः ॥
सन्निपातेनमनसःसन्तापेनचपंचमः ॥ १ ॥

अर्थ-वातादिदोष, जिह्वा और हृदयमें आश्रित हो मनको बिगाडते हैं तब अरुचि होतीहै अर्थात् शोक भय लोभ और क्रोध आहार तथा गंध इन भेदोंसे अरुचि पांचप्रकारकी है ॥ १ ॥

अम्लिकागुडतोयंचत्वगेलामरिचान्वितम् ॥
अभक्तच्छन्दरोगेषुशस्तंवलावधारणम् ॥ २ ॥

अर्थ-इमली और गुडके शरबतमें तज इलायची और काली मिर्चका चूर्ण मिलाकर मुखमें धारण करनेसे अरुचि दूर होती है ॥ २ ॥

कारव्यजाजिमरिचंद्राक्षावृक्षाम्लदाडिमम् ॥
सौवर्चलंगुडंक्षौद्रमेषांकार्यावटीशुभा ॥ ३ ॥

अर्थ-करोंजी, जीरा, मिर्च, मुनक्का दाख, दाडिम, सौंचरलोन गुड और शहद यह सबप्रकार की अरुचिको दूर करताहै ॥ ३ ॥

बदरास्थिमितानाम्येधृताऽरोचकनाशिनी ॥

अर्थ-बेरकी मींगीकी बराबर गुटिका मुखमें धरनेसे अरुचि दूर होतीहै।

अथ तृष्णा ।

संततंयःपिवेद्वारिनतृप्तिमधिगच्छति ।
पुनःकांक्षतितोयंचतंतृष्णार्दितमादिशेत् ॥ ४ ॥

अर्थ-जो निरन्तर जलपान करता जाय और उसकी तृप्ति नहो और वारंवार जलकी इच्छा करै उसे तृष्णासे अर्दित जानै ॥ ४ ॥

लाजोदकंमधुयुतंपीतंश्वेताविमिश्रितम् ।
द्राक्षाखर्जूरसंयुक्तंपिवेत्तृष्णार्दितोनरः ॥ ५ ॥

अर्थ-खीलोंके पानीमें शहद और श्वेत कटेरी डालकर पिये अथवा दाख और खजूरके साथ पान करनेसे तृष्णारोग शान्त होताहै ॥ ५ ॥

नीलाब्जकुष्टमधुलाजवटावरोहैः
श्लक्ष्णीकृतैर्विरचितागुटिकासुखस्था ॥
तृष्णांनिवारयतितत्क्षणमेवतीव्रां
मर्त्यस्पृहामिवयतेःपरमार्थचिंता ॥ ६ ॥

अर्थ-नीलोफर, कूठ,शहद, खील, वडके अंकुर इनको कूटकर इनकी गुटिका कर मुखमें रखनेसे तत्काल तीक्ष्ण तृष्णा दूर होतीहै यह यतिके परमार्थकी चिन्ताकी समान तृष्णावाले मनुष्योंको प्रार्थनीय है ॥ ६ ॥

अथ छर्दिः ।

दुष्टैर्दोषैःपृथक्सर्वैर्बीभत्सालोकनादिभिः ।
छर्दयःपंचविज्ञेयास्ताःपृथग्लक्षणैर्मताः ॥ ७ ॥

अर्थ-दुष्टहुए वातादि दोषोंसे पृथक् २ तीन एक त्रिदोषसे और पांचवीं वीभत्स जिसके देखनेसे भयहो यह पांचप्रकारके लक्षणोंवाली छर्दि होती है ॥ ७ ॥

कोमलकरंजपत्रंसलवणमम्लेनसंयुक्तम् ॥
यःखादतिदिनवदनेछर्दिकथातस्यकुत्रेह ॥ ८ ॥

अर्थ-कोमल करंजके पत्ते सेंधानोन यह इमलीके साथ प्रातःकाल प्रतिदिन खानेसे छर्दिका नाम नहीं रहता॥८॥

एलालवंगगजकेसरकोलमज्जा-
लाजाप्रियंगुघनचंदनपिप्पलीनाम् ॥
चूर्णंसितामधुयुतंमनुजोविलिह्य
छर्दिनिहन्तिकफमारुतपित्तजाताम् ॥ ९ ॥

अर्थ-इलायची, लौंग, नागकेशर, बेरकी मींग, खीलें, प्रियंगु, नागरमोथा, लालचन्दन, पीपल इनका चूर्णकर शहद और मिश्रीके साथ मनुष्य चाटे तो कफवातपित्तसे उत्पन्न हुई छर्दि नष्ट होतीहै ॥ ९ ॥

जंव्वाम्रपल्लवशृतंक्षौद्रंदत्त्वासुशीतलंतोयम् ॥
लाजरवचूर्णंपिवेच्छर्द्यतिसारे पलंसिद्धम् ॥ १० ॥

अर्थ-जामुन और आमके पत्तोंका काढा कर उसमें शहद मिलाय ठंडाकर पिये तो या खीलोंका चूर्णकर पिये तो छर्दि अतिसार रोग दूरहो ॥ १० ॥

अथ मूर्च्छा।

सुखदुःखव्यपोहाचनरःपततिकाष्ठवत् ।
मोहोमूर्च्छेतितामाहुःषड्विधासाप्रकीर्त्तिता ॥ ११ ॥

अर्थ-जब चेतनाके वहनेवाली नाडी वातादि दोषसे बंद होती है तब प्राणकी सुखदुःखका दूर करनेवाला तमोगुणमाप्तहोता है उससे न जाननेसे मनुष्य काष्ठकी समान गिरजाता है उसको मोह और मूर्च्छा कहते हैं वह तीन वातादिदोष चौथी रक्त पांचवीं मदिरा और छठी विषसे होती है ॥ ११ ॥

सेकावगाहौमणयःसुहाराः
शीतोपचाराव्यजनानिलाश्च ॥
पुष्पाण्यनेकानिचगंधवन्ति
विसानिशस्तानिचमूर्च्छितेषु ॥ १२ ॥

अर्थ-संपूर्ण मूर्छारोगमें सेचन, स्नान, मणिहार, लेप, पंखेकी पवन, सुगंधियुक्त शीतलपान तथा कमलनाल शीतल यह उपचार श्रेष्ठ हैं ॥ १२ ॥

कोलमज्जोपणोशीरकेसरंशीतवारिणा ।
पीतंमूर्च्छांजयेल्लीढाकृष्णांवामधुसंयुताम् ॥ १३ ॥

अर्थ- बेरकी मींगी, कालीमिर्च, खस, नागकेशर, यह शीतल पानीके साथ पीसकर शहदके और पीपलके चूर्णके साथ चाटनेसे मूर्छा दूर होती है ॥ १३ ॥

नासावदनरोधेननस्यैर्मरिचनिर्मितैः ॥
नरंजागरयेद्भूमौमूर्च्छितंमंदमारुतैः ॥ १४ ॥

अर्थ-मुख और नासिका बंद करनेसे तथा काली मिर्च की नास देनेसे तथा पवन करनेसे मूर्छा दूर होती है ॥ १४ ॥

अथ दाह ।

त्वचंप्राप्तःसमानोष्मापित्तरक्ताभिमूर्छितः ।
दाहंप्रकुरुतेघोरंपित्तवत्तत्रभेषजम् ॥ १५ ॥

अर्थ-समानवायुकी उष्णता पित्तरक्तमें बढकर त्वचामें प्राप्त होकर दाहको उत्पन्न करती है, पित्तकी औषधीकी समान उसका उपचार करना चाहिये ॥ १५ ॥

शतधौतघृताभ्यक्तोसिक्तोऽम्बुभिनानूनम् ।
पीत्वानिगुल्ननकोपं[illegible]मंडैरोशीर[illegible]

रक्तसंपूर्णकोष्ठोत्थंदाहंजयतिदुस्तरम् ।
वाप्यःकमलहासिन्योजलयन्त्रगृहाःशुभाः ।
नार्य्यश्चचंदनार्द्राग्यःपित्तदाहहरामताः ॥ १७ ॥

अर्थ-सौवार पानीसे धोये घृतको शरीरमें मलना अथवा जौकेसत्तू मिश्रीके साथ खाना घृतका सेवन करै अथवा रक्तजदाहमें बांसकी छालका काढाकर शहद मिलाकर पिये तो जिसके कोठेमें रक्त भरनेसे दाह हुआ है वह शान्त होजाताहै काढा ठंडाकर पिये अथवा कमल फूली हुई बावडी और फुहारे छुटते हुए घरोंमें बैठने तथा चन्दनादि लगाये स्त्रियोंके दर्शनसे दाह दूर होताहै १६॥१७

अथोन्मादः।

मदयंत्युद्धतादोपायस्मादुन्मार्गगामिनः ।
मानसोयमतोव्याधिरुन्मादइतिकीर्तितः ॥ १८ ॥

अर्थ-अपने २ कारणों से बढेहुए वातादि दोष जब सरलमार्ग छोडके उन्मार्गी होतेहैं तब मनको उन्मत्त करते हैं इस कारण इस रोगका नाम उन्माद है ॥ १८ ॥

कुष्ठाश्वगंधालवणाजमोदद्वेजीरकेत्रीणिकटूनिपाठा ।
मंगल्यपुष्पीचसमानचूर्णकृत्वाथचूर्णेनवचोद्भवेन १९॥

अर्थ-कूट, असगंध, सेंधानोन, अजमोद, दोनों जीरे, सोंठ मिर्च, पीपल, पाढ इनको बराबर ले और इन सबकी बराबर बच लेय औरोंकी समान शंखाहूलीकी मात्रा ले ॥ १९ ॥

तुल्येनयुक्तंबहुशोरसेनतद्भावितंब्राह्मिविनिर्मितायाः ॥
सर्पिर्मधुभ्यामततोसमात्रंलिह्यान्नरःपट्दिनंहिताशी ॥

अर्थ-इन सबका चूर्ण कर ब्राह्मीके रसकी भावना दे इसको घृत अथवा शहदसे ४ टंक साठदिन तक खाय तो ॥ २० ॥

ऐश्वर्यवान्वामनसश्चधैर्यंमेधांचविंदेद्द्विगुणंचकालम् ।
पठेन्नरःश्लोकसहस्रमह्नातद्व्रत्प्रयोज्योद्विगुणंक्रमेण २१॥

अर्थ--ऐश्वर्यवान् मनमें धीरता प्रबलता हो सहस्र श्लोक १ दिनमें पठन करनेकी शक्ति हो जाती है यह दूनी मात्राभी क्रमसे दी जा सकती है ॥ २१ ॥

सारस्वतंचूर्णमिदंप्रदिष्टंस्वयंभुवालोकहितार्थमुच्चैः ।
दुर्मेधसामुन्मदमानसानामपस्मृतिग्रस्तहृदांसुखाय२२

अर्थ--ब्रह्माने लोकके हित के निमित्त यह सारस्वत चूर्ण बनाया है कुबुद्धिता, उन्माद, अपस्मृति आदि मन के रोगोंमें हितकारी है ॥ २२ ॥

वद्धंसर्पपतैलाक्तमुत्तानंचातपेन्यसेत् ।
कपिकच्छ्वाथवातप्तैर्लोहतैलांबुभिःस्पृशेत् ॥ २३ ॥
कशाभिस्ताडयेद्बद्धंस्थापयित्वाऽजनेगृहे ।
रुन्ध्यात्ततोतिविभ्रांतमेवंव्रजतिसत्सुखम् ॥ २४ ॥

अर्थ-इसमें रोगीको बांधना चाहिये और तेलका मालिश कर धूपमें खड़ा करै कौंचके बीजोंका स्पर्श करावै अथवा तप्तलोह तेल और जलका स्पर्श करावै वा बांधकर मर्मस्थान बचाकर चाबुकसे ताडनकरै बन्दकर रक्खे अप्रिय समाचार सुनावे तो उन्मादी आरोग्य होता है॥ २३ ॥ २४ ॥

अथापस्मारः ।

तमःप्रवेशः संरम्भोदोषोद्रेकोहतस्मृतिः ।
अपस्मारइतिज्ञेयोगदोघोरश्चतुर्विधः ॥ २५ ॥

अर्थ--अकस्मात् अंधकार नेत्रोंके सामने आजाना नेत्र टेढ़ेहोजाना हाथ पांवका कंपना वातादि दोषोंके बढ़नेसे स्मृति

का नाश होना इस प्रकार इस रोगका नाम अपस्मार है यह वात पित्त कफ और सन्निपातके भेदसे चार प्रकारका है २५॥

पुष्योद्धृतंशुनःपित्तमपस्मारघ्नमंजनम् ।
तदेवसर्पिषायुक्तंधूपनंपरमंस्मृतम् ॥ २६ ॥

अर्थ--पुष्य नक्षत्रमें कुत्तेका पित्त निकाल कर अंजन करना अपस्मार रोग दूर करता है इसीको घृतमें मिला-कर धूप देनेसे आरोग्यता होती है ॥ २६ ॥

यः खादेत्क्षीरभक्ताशीमाक्षिकेणवचारजः ।
अपस्मारंमहाघोरंसुचिरोत्थंजयेद्ध्रुवम् ॥
अपस्मारविनाशाययष्ट्याह्वंसंपिबेत्त्र्यहम् २७॥

अर्थ-जो केवल दूधका पान करताहुआ शहदके साथ वचका चूर्ण कर खाय तो महाघोर अपस्मार अवश्य दूर हो जाता है अथवा अपस्मारके नाशकरनेको तीन दिन मुलहटी पान करै ॥ २७ ॥

अथ वातव्याधिः ।

स्वहेतुकुपितोवातोयद्यदंगमहोबली ।
तत्तदाख्योबहुरुजःकुरुतेऽशीतिमामयान् ॥ २८ ॥
माषबलाशुककशिंबीकतृणरास्नाश्वगंधोरुबूकाणाम्
क्वाथोनश्यतिपीतोरामठलवणान्वितःकोष्णः॥२९

अर्थ-अपने कारणसे कोधित हुआ वायु जिस जिस अंगको ग्रहण करै उस रोगका वहाँ वहीं नाम होता है

[illegible] शुककशिंबी
[illegible] रास्ना, [illegible] और
[illegible] २९ ॥

अपहरतिपक्षघातंमन्यास्तंभंसकर्णनादरुजम् ।
दुर्जयमर्दितवातंसप्ताहाज्जयतिचावश्यम् ॥ ३० ॥

अर्थ--पक्षाघात मन्यास्तंभ कर्णनाद अर्द्दितवातादिरो गोंको सात दिनमें अवश्य दूर कर देता है ॥ ३० ॥

सहचरामरदारुसनागरं
कथितमंभसितैलविमिश्रितम् ।
पवनपीडितदेहगतिः पिबन्
द्रुतविलंबितगोभवतीच्छया ॥ ३१ ॥

अर्थ--श्वेतकुटक(पियावासा)देवदारु सौंठ इनका काढा कर उसमें तेलडाल कर वातरोगसे पीडितदेहवाला मनुष्य पान करनेसे शीघ्र रोगरहित हो जाता है ॥ ३१ ॥

हिंग्वम्लत्रिकटूग्रषट्कटुसटीवृक्षाम्लदीप्याह्लका
पाठाजाज्यजगंधमूलहपुषाद्विक्षारसाराभयम् ॥
हिध्माध्मानविबंधवर्ध्मकसनश्वासाग्निसादारुचिप्ली
हार्शोंखिलशूलगुल्मगलहृद्रोधाश्मपांडुप्रणुत्॥३२॥

अर्थ--हींग अलमवेत और सोंठ मिर्च पीपल वच पीपल पीपलामूल चव्य सोंठ चीता कालीमिर्च कचूर आमला अजवायन श्वेतआक पाठ कालाजीरा सफेद जीरा असगंध पीपलामूल हाऊबेर सज्जीखार जवाखार वज्र खार हरड इन सबको बराबरले सबका चूर्णकर सेवन करनेसे हिध्म आध्मान (अफारा) विबंध, वर्ध्मक, कास-श्वास मन्दाग्नि अरुचि, प्लीहा, बवासीर शूल ग्रल्म गल रोग हृदयरोग, अश्म, (पथरी) और पांडुरोगको दूर करता है ॥ ३२ ॥

१ जो औषधी दोबार कही जाय सो दुनी लेनी ।

अर्थ-१ रासना दो तोले २ धमासा ३ खरैटी ४ अंडकी जड ५ देवदारु ६ कपूर ७ वच ८ अडूसका पंचाङ्ग ९सोंठ १० हरडकी छाल ११ चव्य १२ नागरमोथा १३ सोंठकी जड १४ गिलोय १५ विधायरा १६ सौंफ १७ गोखरू १८ असगंध १९ अतीस २० अमलतासका गूदा २१ शतावर २२पीपल छोटी२३पियावासा२४धनियाँ२५-२६छोटीबडी दोनों कटेरी इन छब्बीस औषधोंके काढेमें सोंठका चूर्ण मिलाकर अथवा पीपलका चूर्ण मिलाकर अथवा योगराज गूगलके साथ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥

अजमोदादिनावापिैतलेनैरंडजेनवा ।
सर्वांगकंपकुब्जत्वेपक्षवातेचवाहुके ॥ ४० ॥
गृध्रस्यामामवातेचश्लीपदेचाऽपतानके ।
अंत्रवृद्धौतथाध्मानेजंघाजानुगतेर्दिते ॥ ४१ ॥
शुक्रामयेमेढ्ररोगेवंध्यायोन्यामयेपुच ।
महारास्नादिनाख्यातोत्रह्मणागर्भकारणम् ॥ ४२॥

अर्थ--अथवा अजमोदादि चूर्णके साथ अथवा अण्डीके तेलके साथ इस काढेको पिये तौ सर्वाङ्गकंप कुबडापन पक्षाघात अपवाहुक गृध्रसी आमवात श्लीपद अपतानक वायु अण्डवृद्धि अफारा जंघाजानुपीडा शुक्रदोष लिंगरोग वन्ध्यायोनि गर्भाशयके रोग दूर होते हैं यह महारास्नादि काथ ब्रह्माजीने गर्भस्थापनके कारण बनायाहै।४०।४१।४२

अथ गुग्गुलुः ।

रास्नामृतैरंडसुराह्वविश्वंतुल्येनगाढंपुरुणाविमर्द्य ।
खादेत्समीरीसशिरोगदीचनाडीव्रणीचापिभगंदरीच४३

अर्थ-रास्ना [illegible] सोंठ यह सब ब-

रायर ले अच्छी प्रकार बारीक करके सेवनसे वातरोग शिर-
पीडा नाडीव्रण भगन्दरादि रोग इससे दूर होते हैं ॥ ४३ ॥

अथ तैलानि ।

तैलाढकंसमतुपांवुहयारिहेम
निर्गुण्डिभास्करशिफाशृतसाधुसिद्धम् ।
धत्तूरकुष्ठफलिनीविषहेमदुग्धा-
रास्नाहयारिकटभीमरिचोपचित्राः ॥ ४४ ॥

अर्थ-तिलका तेल ४ सेर इसीकी बराबर भूसीका जल
कनेर धतूरा संभालू आक जटामांसी इनका रस निकाल-
कर तेलमें औटावे जब तेलमात्र रहजाय और रस जल-
जाय तब धतूरा कूठ फूलप्रियंगु विष स्वर्णक्षीरी (पीले
दुग्धकी कटेरी) रास्ना कनेरकी जड मालकांगनी काली
मिरच गूगल मंजीठ ॥ ४४ ॥

मांसीवचादहनसर्षपदेवदार्वी
निशोरुबूजत्रिफलासमंगाः ।
पिष्ट्वाक्षिपेत्पलमिताविषगर्भमेतत्
तैलंसमस्तपवनामयनाशनंस्यात् ॥ ४५ ॥

अर्थ-जटामांसी वच चीता सरसों देवदारु दारुहलदी
अण्डकी जड त्रिफला यह सब बराबर ले पीसकर इसमें
डालदे यह औषधी चार ४ तोले डाले यह विषगर्भतैल
समस्त वातके रोगोंको दूर करता है ॥ ४५ ॥

बिल्वोग्निमन्थःस्योनाकःपाटलापारिभद्रकः ।
प्रसारिण्यश्वगंधाचबृहतीकंटकारिका ॥ ४६ ॥
बलानागबलाचैवश्वदंष्ट्रासपुनर्नवा ।
एषांदशपलान्भागांश्चतुर्द्रोणेंभसापचेत् ॥ ४७ ॥

ललज्जिह्वाश्चबधिराविस्वरामंदमेधसः ।
मंदप्रजाचयानारीयाचगर्भनविंदति ॥ ५५ ॥
वातार्त्तांवृषणायेषामंत्रवृद्धिश्चदारुणा ।
एतन्नारायणतैलंशस्तंसर्वत्रसर्वदा ॥ ५६ ॥

अर्थ--बकरी या गायका चौगुना दूध डालकर मन्द अग्निसे औटावे जब सिद्ध होजाय तब उतारले इस तेलको पिये वा मर्दनकरे भोजनके प्रथम तेलका लेप करे. घोडे हाथीके वातरोग मनुष्यके पंगु पीठभग्न वायुआदि रोग इस तेलसे नाश होतेहैं, अर्थात् नीचेके अंगकी वायु, माथेकी वायु, दन्तशूल हनुस्तंभ जावडास्तम्भ गलग्रहइन्द्री, इन्द्रीक्षीण, नष्टवीर्य, तथा जो मनुष्य ज्वरसे ग्रस्त है, जीभ फूलना, विकलता मंदबुद्धि, स्त्रीके संतान न होना, अण्डकोषमें वातरोग होना, दारुण अंत्रवृद्धि होनी इतने रोगोंमें नारायण तेल सब प्रकारसे श्रेष्ठहै ॥ ५१-५६ ॥

चतुःशेरमितेतैलेतिलानांशोधितेमृदा ।
महानिंबार्कनिर्गुण्डीधत्तूरेरंडकस्नुहाम् ॥ ५७ ॥
भृंगराजहयारीश्वरसंशेरमितंपृथक् ।
निपाच्यसाधितंह्येतत्सर्ववातव्यथापहम् ॥ ५८ ॥

अर्थ--चारसेर तिलोंका तेल लेकर, बकायन आक सँभालू धतूरा अण्ड सेहुंड ॥ ५७ ॥ भाँगरा और कनेर इनके पत्तोंका एकसेर रस निकाले इनको मिलाय अग्निपर धरदे जब रसमात्र जलकर तेल रहजाय तब उतारले यह मालिस करनेसे सम्पूर्ण वातकी व्यथाको दूर करता है ॥ ५८ ॥

पादशेषंपरिस्राव्यतैलपात्रेप्रदापयेत् ।
शतपुष्पादेवदारुमांसीशैलेयकंवलाः ॥ ४८ ॥
चंदनंतगरंकुष्ठमेलापर्णीचतुष्टयम् ।
रास्नातुरगगंधाचसैन्धवंचपुनर्नवा ॥ ४९ ॥
एषांद्विपलिकान्भागान्पेषयित्वाविनिक्षिपेत् ।
शतावरीरसंचैवतैलतुल्यंप्रदापयेत् ॥ ५० ॥

अर्थ–वेल अरिणी अरलू पाढल नीमकी छाल, गंध-प्रसारणी, असगंध, कटेरी, खरेंटी, गंगेरन, गोखरु, सोंठ, यह सब १० पल लेकर ६४ सेर पानीमें औटावै जब चौथाई रहजाय तब १०२४ टंक तेल डाले, सोंठ, देवदारु, बाल-छड, छारछबीला, वच, चन्दन, तगर, कूट, इलायची, शाल-पर्णी मापपर्णी, मुद्गपर्णी, पीलवनी, रास्ना, असगंध, सेंधानोन, यह सब दोदो पल ले पीसकर डाल देवै और शतावरीका रस तेलके बराबर अर्थात् चार सेर डाले ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥

आजकंयदिवागव्यंक्षीरंदत्वाचतुर्गुणम् ।
पानेबस्तौतथाऽभ्यंगेभोज्येनस्येप्रयोजयेत्॥५१॥
अश्वोवावातभग्नोवागजोवायदिवानरः ।
पंगुर्वाभग्नहस्तोवाभग्नपादोथवानरः ॥ ५२ ॥
अधोभागेचयेवाताःशिरामध्यगताश्चये ।
दन्तशूलेहनुस्तम्भेमन्यास्तंभेऽपतंत्रके ॥ ५३ ॥
एकांगग्रहणेवापिसर्वांगग्रहणेतथा ।
क्षीणेन्द्रियानष्टशुक्राज्वरग्रस्ताश्चयेनराः ॥ ५४ ॥

ललजिह्वाश्चबधिराविस्वरामंदमेधसः ।
मंदप्रजाचयानारीयाचगर्भेनविंदति ॥ ९५ ॥
वातार्त्तौवृषणौयेषामंत्रवृद्धिश्चदारुणा ।
एतन्नारायणतैलंशस्तंसर्वत्रसर्वदा ॥ ९६ ॥

अर्थ--बकरी या गायका चौगुना दूध डालकर मन्द अग्निसे औटावे जब सिद्ध होजाय तब उतारले इस तेलको पिये वा मर्दनकरे भोजनके प्रथम तेलका लेप करे. घोडे हाथीके वातरोग मनुष्यके पंगु पीठभग्न वायुआदि रोग इस तेलसे नाश होतेहैं, अर्थात् नीचेके अंगकी वायु, माथेकी वायु, दन्तशूल हनुस्तंभ जावडास्तम्भ गलग्रहइन्द्री, इन्द्रीक्षीण, नष्टवीर्य, तथा जो मनुष्य ज्वरसे ग्रस्त है, जीभ फूलना, विकलता मंदबुद्धि, स्त्रीके संतान न होना, अण्डकोषमे वातरोग होना, दारुण अंत्रवृद्धि होनी इतने रोगोंमें नारायण तेल सब प्रकारसे श्रेष्ठहै ॥ ९१-९६ ॥

चतुःशेरमितेतैलेतिलानांशोधितेमृदा ।
महानिंवार्कनिर्गुण्डीधत्तूरैरंडकस्नुहाम् ॥ ९७ ॥
भृंगराजह्वयायोश्चरसंशेरमितंपृथक् ।
विपाच्यसाधितंह्येतत्सर्ववातव्यथापहम् ॥ ९८ ॥

अर्थ--चारसेर तिलोंका तेल लेकर, बकायन आक सँभालू धतूरा अण्ड सेहुंड ॥ ९७ ॥ भाँगरा और कनेर इनके पत्तोंका एकसेर रस निकाले इनको मिलाय अग्निपर चढादे जब रसमात्र जलकर तेल रहजाय तब उतारले यह मालिस करनेसे सम्पूर्ण वातकी व्यथाको दूर करता है॥ ९८॥

अथ स्वच्छन्दभैरवरसः ।

शुद्धसूतंमृतंलोहंताप्यंगंधकतालकम् ।
पथ्याग्निमंथनिर्गुण्डीत्र्यूषणंटंकणंक्षिपेत् ॥ ५९ ॥
तुल्यांसंमर्दयेत्खल्वेदिनंनिर्गुण्डिकाद्रवैः ।
मुंडीद्रवैर्दिनैकंतुद्विगुंजांचवटीकृताम् ॥ ६० ॥
भक्षयेद्वातरोगार्त्तोनाम्नास्वच्छन्दभैरवः ।
रास्नामृतादेवदारुशुण्ठीवातारिजंशृतम् ।
सगुग्गुलुंपिबेत्कोष्णमनुपानंसुखावहम् ॥ ६१ ॥

अर्थ–शुद्धपारा १ लोहभस्म २ स्वर्णमाक्षिककी भस्म ३ गंधक हरताल जंगीहरड अरणी निर्गुण्डी सोंठ कालीमिर्च पीपल सुहागा यह समान भाग लेकर निर्गुण्डीके रसमें १ दिन खरल करे, दोदो रत्तीकी गोली बनावे, इस को स्वच्छन्दभैरवरस कहते हैं यह रस और रास्ना गिलोय देवदारु सोंठ अंडकी जड इन पांच औषधियोंका काढा करके उसमें गूगल मिलाय सेवन करे तो वातरोग दूर होताहै ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥

अथ वातरक्तम् ।

वाहनाभिरतस्यासृग्दूषयित्वानिलोवली ।
स्पर्शाज्ञत्वंमण्डलानिस्फोटनानिविपूचिकाम् ६२॥

अर्थ–हाथी घोडे ऊंट आदिपर सवारी करनेवालेके, तथा दाहक पदार्थ खानेवालेकेआहार दग्धहोनेपर देहका रुधिर दूषित हो उठता अर्थात् गरम होजाता है तब त्वचाका स्पर्श खरखरा और विपूचिकाकेसे फोडे पडजातेहैं अर्थात् शरीरमें चकत्ते पडजाते हैं ॥ ६२ ॥

करोत्यंगुलिवैकल्यंवातरक्तमिदंस्मृतम्।
कालातिक्रान्तमेतत्तुकुष्ठंभवतिदुर्द्धरम् ॥ ६३ ॥

अर्थ-यही वातरक्त अंगुलीकी विकलता करता है और उपेक्षा करनेसे कालांतरमें दारुण कुष्ठरोग करता है॥६३॥

दार्वीगुडूचीकटुकोग्रगंधा
मंजिष्ठनिंबत्रिफलाकषायः ॥
वातास्रमुच्चैर्नवकार्षिकाख्यो
जयेच्चकुष्ठान्यखिलानिनृणाम् ॥ ६४ ॥

अर्थ-दारुहलदी गिलोय कुटकी वच मँजीठ नीमकी छाल हरड आमला इनका काढाकर पानकरनेसे वातरक्त और सम्पूर्ण कुष्टरोग दूर होते हैं ॥ ६४ ॥

मंजिष्ठारिष्टवासात्रिफलदहनकंद्वेहरिद्रेगुडूची
भूनिम्बोरक्तसारःसखदिरकटुकावाकुचीव्याधिघातः ।
मूर्वादन्तीविशालाकृमिरिपुजटिलावायसीरासपाठा ।
श्यामानंतापटोलीसमरिचमगधासाधितोऽयंकषायः
पीतोहन्यात्समस्तान्सकलतनुगतान्नक्तजातान्विकारा-
न्कंडूविस्फोटकादीनलसकविषमाश्वित्रपामादिदोषान् ।

अर्थ-मँजीठ नीम, अडूसा हरड बहेडा आमला चीता हलदी दारुहलदी गिलोय चिरायता लालचंदन खैरसार कुटकी बाकुची (सोमराजी) अमलतासका गूदा मूर्वा ...रुणी बायविडंग जटामासी काकमाची और धमासा पटोल मिर्च पीपल इन औषधि- ... इनका काढाकर पीये तो सम्पूर्ण शरी- ... कण्डू विस्फोटकादि अलसक कठिन ... विकार दूर होते हैं ॥ ६५ ॥

कनकभुजगवल्लीमालतीपत्रमूर्वा-
रसगदकुनटीभिर्मर्दितस्तैलयोगात् ॥
अपहरतिरसेन्द्रःकुष्ठकण्डूविसर्प्प-
स्फुटितचरणरंध्रस्थामलत्वंनराणाम् ॥ ६६ ॥
अस्यतैलस्यलेपेनवातरक्तंप्रशाम्यति ॥

अर्थ–धतूरेके पत्ते नागवेलके पत्ते, चमेलीके पत्ते मूर्वा इनका रस तथा कूठ और मनशिल इनके संगमें पारा और तेल खूबमर्दन करके लेप करनेसे यह रसेन्द्र कुष्ठ कण्डू विसर्प चरणोंका फटना आदि रोगोंको दूर करता है और शुद्ध शरीर होजाता है ॥ ६६ ॥ इस तैलके लेपकरनेसे वातरक्त रोग शान्त होजाता है ।

अथामवातः ।

वृद्धेनवायुनानुन्नआमोयातिकफाशयम् ॥६७॥
लभ्येतसचनाडीभिरामवातोयमीरितः ॥
कटयूरुजानुजंघासुपृथुशूलरुजाकरः ॥ ६८ ॥

अर्थ–जो मनुष्य प्रकृति वा कालसे विरुद्ध आहार चेष्टा आदिकरताहै उस मनुष्यके स्निग्धादि भोजन करने उपरान्त कसरतादि करनेसे वायुसे प्रेरित हुआ आम कफाशयमें प्राप्त होताहै अर्थात् छाती कंठ मस्तककी सन्धिमें प्राप्तहोताहै और विना पके नाडियोंमें प्राप्त होता है इसको आमवात कहते हैं कटि ऊरु जानु जंघामें सूजन शूल होतेहैं ॥ ६७ ॥ ६८ ॥

रास्नागुडूचीमिरंडंदेवदारुमहौषधम् ।
पिवेत्सर्वांगगेवातेसामेसंध्यस्थिमज्जगे ॥ ६९ ॥

अर्थ–रास्ना गिलोय एरण्डकी मूल देवदारु सोंठका काढा

सर्वांगवात आमवात संधि अस्थि और मज्जामें प्राप्त वातरोगमें पिये ॥ ६९ ॥

विशोध्यैरण्डबीजानिपिष्ट्वातत्पायसंपिबेत्।
आमवातेकटीशूलेगृध्रस्यांचौषधंपरम् ॥ ७० ॥

अर्थ-अण्डके बीज शोधकर इन्हें दूधमें पीसकर पिये तो आमवात कटिशूल और गृध्रसी रोगकी यह परम औषधी है ॥ ७० ॥

एरण्डबीजमज्जासमविश्वःशर्करासहितः।
गुटिकीकृतःप्रभातेभुक्तःसामानिलंजयति ७१

अर्थ-अण्डके बीजकी मींग और सोंठ बराबर ले मिश्री सहित ८ गुटिकाकर प्रभातकालमें पिये तो आमवात रोग दूर होता है ॥ ७१ ॥

नागरस्यपलान्यष्टौघृतस्यपलविंशतिः।
क्षीरद्विप्रस्थसंयुक्ताखण्डस्यार्द्धतुलांन्यसेत् ॥
व्योषत्रिजातकद्रव्यात्प्रत्येकंचपलंपलम् ॥ ७२ ॥

अर्थ-सोंठ आठपल घी २० पल दो सेर दूध और खांड पांचसेर लेकर इसकी चासनी करे और सोंठ,मिर्च,पीपल तज पत्रज इलायची यह प्रत्येक एक एक पल ले ॥ ७२ ॥

निदध्याच्चूर्णितंतत्रखादेदग्निबलंप्रति।
आमवातप्रशमनंबलपुष्टिविवर्द्धनम् ॥
वर्ण्यमायुष्यमोजस्यंवलीपलितनाशनम् ॥ ७३ ॥

अर्थ-इसका चूर्ण कर सेवन करे तो अग्निवृद्धि हो आम वातकी शान्ति और बल पुष्टिकी वृद्धि करनेवाला है सुन्दर वर्ण करनेवाला आयुबढानेवाला वली और पलित नाश करनेवाला है ॥ ७३ ॥

अथ शूलम् ।

दोषैःपृथक्समस्तामद्वन्द्वैःशूलोष्टधाभवेत् ।
सर्वेष्वेतेषुशूलेषुप्रायेणपवनःप्रभुः ॥ ७४ ॥

अर्थ-वातादि दोषसे पृथक् २ तीन सन्निपातसे एक द्वंद्वज तीन आमजन्य एक इस प्रकार आठ प्रकारका शूल है परन्तु आठोंमें वायु सर्वत्र बलवान है बहुधा यह वायुके विना नहीं होता है महादेवके शूलसे इसकी उत्पत्ति है७४

अथ परिणामशूलम् ।

अन्नेजीर्यतियच्छूलंतदेवपरिणामजम् ।
साध्मानाटोपविण्मूत्रविबंधमरुविधंतथा ॥ ७५ ॥

अर्थ-और कोप करानेवाले पदार्थोंसे कुपित हुआ वायु कफ पित्तमें व्याप्त हो शूलरोग उत्पन्न करताहै वह शूल भोजनपचनेके समय होता है इस कारण इसको परिणाम शूल कहते हैं उसमें पेटमें अफारा पेटका गुडगुडाना मल मूत्रका रोध विश्राम न पाना इत्यादि लक्षण होतेहैं॥७५॥

करंजसौवर्चलनागराणांसरामठानांसमभागिकानाम् ।
चूर्णकटूष्णेनजलेनपीतंसमीरशूलंविनिहन्तिसद्यः७६।

अर्थ-करञ्जुआ, काला नोन, सोंठ, और हींग समान भाग लेकर इनका चूर्णकर गरमजलसे ले तो वातशूल शीघ्र नष्ट होता है ॥ ७६ ॥

चूर्णतुम्बुरुरामठत्रिलवणक्षाराजमोदाभया-
वेल्लत्र्यूषणपुष्कराह्वयकृतंकुंभत्रिभागान्वितम् ॥
मन्दोष्णेनजलेनपीतमखिलंशूलंसगुल्मोदरा
ध्मानाजीर्णविबंधमामपवनानाहोंचशीघ्रंजयेत् ७७

अर्थ-तुम्बुरु,हींग,सेंधानोन, [illegible] नोन,विडनोन जवा,

खार, अजमोद, हरड, वायविडंग, सोंठ, मिर्च, पीपल, पुष्करमूल, यह सब समान भाग ले, इन सबका तीसरा भाग निशोथ ले, इसका चूर्णकर गरम जलके साथ ले तो सम्पूर्ण शूल गुल्मोदर अफारा अजीर्ण विबंध आमवात अनाहरोग शीघ्र दूर होजाता है ॥ ७७ ॥

चूर्णसमंरुचकहिंगुमहौषधीनां
शुण्ठचम्बुनाकफसमीरणसंभवासु ।
हृत्पार्श्वपृष्ठजठरार्त्तिविपूचिकासु
पेयंतथायवरसंनचविड्विबन्धे ॥ ७८ ॥

अर्थ--कालानोन, हींग, सोंठ, सफेद कटेरीका चूर्ण जलसे सेवन करनेसे कफवात हृत्पार्श्वशूल पृष्ठशूल जठररोग विपूचिका दूर होती है, यदि मूत्ररोध नहो तो यवके पानीसे इसे सेवन करे ॥ ७८ ॥

तुपवारिविनिष्पिष्टतिलकल्कोष्णपोटली ।
भ्राजिताजठरस्योर्ध्वंमुहुः शूलंविनाशयेत् ॥ ७९ ॥

अर्थ--धानकी भूसीके जलमें तिलका कल्ककर पीसे और उसकी पोटलीकर गरम गरम सेककरे तो पेटका शूल दूर हो ॥ ७९ ॥

नाभिलेपाज्जयेच्छूलंमदनंकांजिकाद्रितम् ।
विल्वैरण्डतिलैर्वाथपिष्टैरम्लेनपोटली ॥ ८० ॥
गिलितंहिंगुसघृतंसद्यः शूलंविनाशयेत् ।
करंजवीजमन्नावाभृष्टाशूलंनिकृन्तति ॥ ८१ ॥

अर्थ-मेनफलको कांजीमें पीसकर नाभिपर लेपकरे अथवा बेलपत्र और अण्डके पत्ते और तिल इनको कां-

उसमें पीस पोटली करे इसका सेककर और हींग और घी खानेसे शीघ्र शूलका नाश करता है करंजुएके बीजोंकी मींगी भूनकर सेवन करे तो शूल को दूरकरता है ॥ ८० ॥ ८१ ॥

कृष्णाभयालोहचूर्णंलिह्यात्समधुशर्करम् ।
परिणामभवंशूलंसद्योहन्तिनसंशयः ॥ ८२ ॥

अर्थ–पीपल हरड और लोहचूर्ण, इसको बारीकपीस मधु और शर्कराके साथ चाटे तो परिणामशूल शीघ्रही नष्ट होजाता है इसमें सन्देह नहीं ॥ ८२ ॥

नागरतिलगुडकल्कंपयसासंसाध्ययःपुमानश्नात् ।
उग्रंपरिणामभवंशूलंसप्ताहाज्जयतिचावश्यम् ॥ ८३

अर्थ–सोंठ, तिल और गुडका कल्क करके दूधमें सिद्ध कर जो नित्य खाय तो सात दिनमें कठिन परिणाम शूल नष्ट होजाता है ॥ ८३ ॥

एरण्डवह्निशम्बूकत्रयंभूगोक्षुरंसमम् ।
अंतर्दग्धापिबेदद्भिरुष्णाभिःपक्तिशूलजित् ॥८४॥

अर्थ–अरण्ड, चीता, शंख (घोंघा) पुनर्नवा, गोखरू यह तीनों औषधि समान ले इनमें घोंघेकी भस्म करके गरम जलसे पान करनेसे पक्तिशूल दूर होताहै ॥ ८४ ॥

रसविषगंधकपर्दक्षारोपणासिंधुपिप्पलीविश्वैः ।
अहिवल्लयंबुनिघृष्टैःशूलेभहरिर्द्विगुंजोऽयम् ॥ ८५ ॥

अर्थ–पारा, गंधक, विष, यह तीनों वस्तु शोधीहुई ले कौडीका चूर्ण जवाखार, पिपलामूल सुहागा, पीपल, सोंठ, यह पानके रसमें खरलकर, दो रत्ती मात्रा देनेसे शूल दूर करता है यह शूलगजकेसरीरस है ॥ ८५ ॥

अथ गुल्मम्।

हृद्वस्त्योरंतरेग्रंथिर्जायतेयश्चलाचलः।
सगुल्मःपंचधादोषैःसर्वैश्चासृग्भवोपिच॥ ८६॥

अर्थ-हृदयकमल, वस्ती और पेडुके बीचमें चलनेवाली अथवा अचल, तथा घटने बढनेवाली जो गांठ होती है उसको गुल्म कहते हैं यह गुल्म पृथक् वातादि दोषसे तीन प्रकारका सन्निपातसे चौथा और केवल स्त्रियोंके रक्तसे पांचवा ऐसे पांच प्रकारका है॥ ८६॥

कुमार्याः पक्वपर्णानिद्रोणार्धानिविनिक्षिपेत्।
जीर्णाद्गुडात्तुलान्तत्रजलद्रोणद्वयंतथा॥ ८७॥

अर्थ-पके घीकुवारके पट्ठेका रस आधे द्रोण पुराणा गुड १०० पल जल दो द्रोण॥ ८७॥

लोहचूर्णंत्रिकटुकंत्रिफलाचयवानिका।
विडंगंमुस्तकंचित्रंचतुःसंख्यापलंपृथक्॥ ८८॥

अर्थ-लोहचूर्ण, सोंठ, मिर्च, पीपल, हरड, बहेडा, आमला, अजवायन,वायविडंग,चीता,दालचीनी,पत्रज, इलायचीके दाने, नागकेशर, यह एक एक पल ले॥८८॥

चूर्णीकृत्यततःक्षौद्रंचतुःषष्टिपलंक्षिपेत्।
घृतभांडेविनिक्षिप्यनिदध्यान्मासमात्रकम्॥८९॥

अर्थ-इन सबका चूर्ण कर ६४ पल शहद भी डाले यह सब औषधी घीके बर्तनमें भरकर एक महीनेपर्यन्त धरा रहने दे॥ ८९॥

कुमार्यासवमेनत्तुपिबेद्वह्निकरंपरम्।
पांडुश्वयथुगुल्मानिजठरान्यर्शांसिरुजान्॥ ९०॥

अर्थ-यह कुमारी आसव एक पल अथवा आधे पल

पीनेसे अग्निदीप्त करताहै पाण्डुरोग शोथ गुल्म जठर रोग गुल्म अर्शरोग ॥ ९० ॥

कुष्ठप्लीहामयंकंडूंकासंश्वासंभगंदरम् ।
अरोचकंचग्रहणीहृद्रोगादींश्चनाशयेत् ॥ ९१ ॥

अर्थ-कुष्ठ प्लीहा आमरोग कण्डु कास श्वास भगन्दर अरोचक ग्रहणी हृद्रोग यह कुमारी आसव दूर करताहै ९१

वचाभयाविडंगशुण्ठीहिंगुकृष्णाग्निदीप्यकान् ।
द्वित्रिषट्चतुरेकाष्टपंचसप्तपलांशकान् ॥ ९२ ॥
चूर्णयेद्वस्त्रगलितंचूर्णचैतद्यथानलम् ।
मद्येनोष्णांबुनावापिपीतंगुल्मानपोहति ॥ ९३ ॥

अर्थ-वच २ भाग हरड ३ भाग वायविडंग ६ भाग सोंठ ४ भाग हींग १ भाग पीपल ८ भाग चीता ५ भाग अजवायन ७ भाग इन सब वस्तुओंका चूर्णकर कपडेसे छान ले मद्य वा गरम जलके साथ पान करनेसे गुल्मरोग दूर होताहै ॥ ९२ ॥ ९३ ॥

शूलार्शःश्वासकासघ्नंग्रहणीदीपनंपरम् ।
हिंगुसैन्धववृक्षाम्लराजिकानागरैः समैः ॥ ९४ ॥
चूर्णगुल्मप्रशमनंस्यादेतद्धिंगुपंचकम् ।
सूक्ष्मगंधकणापथ्यास्तुल्याआरग्वधांबुभिः ॥९५॥

अर्थ-शूल अर्श श्वास कास रोगका दूर करनेवाला ग्रहणीका दूर करनेवाला अग्नि दीप्त करनेवाला है हींग एक भाग सोंचरनोन अम्लवेत अनारदाना राई सोंठ यह सब समान ले चूर्ण करे यह हिंगुपंचक चूर्ण गुल्मरोगको दूर करताहै निर्मली, गंधक, पीपल, हरड़, अमलतासके फलका गूदा यह बराबर ले ॥ ९४ ॥ ९५ ॥

मर्दयेद्व्रज्रदुग्धैश्चतन्मापंमधुनालिहेत् ॥ ९६ ॥
स्त्रीणांजलोदरंहन्तिपथ्यंशाल्योदनंदधि ॥
चिंचाफलरसंचानुपिबेत्संशीलितेरसे ॥ ९७ ॥

अर्थ-इन सबको थूहरके दूधमें खरलकरे एक मासे शहदके साथ चाटे तो यह स्त्रीका जलोदर रोग दूर करता है दही भात खाना इसपर पथ्य है इसके ऊपर इमलीके फलोंका शीतल रस पान करना चाहिये ॥ ९६ ॥ ९७ ॥

अथ हृद्रोगः।

शोषयित्वारसंदोषाविगुणाह्लदयंगताः।
हृदिबाधांप्रकुर्वन्तिहृद्रोगंतंप्रचक्षते ॥ ९८ ॥

अर्थ-वातादि दोष अन्नरसको दूषित करके फिर कुपित हुए हृदयको प्राप्त होकर जो हृदयमें पीडा करते हैं उसको हृद्रोग कहते हैं ॥ ९८ ॥

घृतनदुग्धेनगुडांभसावापिबन्तिचूर्णककुभत्वचोये।
हृद्रोगजीर्णज्वररक्तपित्तंहत्वाभवेयुश्चिरजीविनस्ते ९९

अर्थ-घृत दूध गुड वा जलके साथ जो कोई अर्जुनवृक्षकी छालका चूर्ण खाय उसके हृद्रोग जीर्णज्वर रक्तपित्त दूर होकर वह चिरजीवी होताहै ॥ ९९ ॥

चूर्णपुष्करमूलस्यमधुनासहलेहयेत।
हृल्लासश्वासकासघ्नंहृदामयहरंपरम् ॥ १०० ॥

अर्थ-पुष्करमूलका चूर्ण शहदके साथ चाटे तो हृल्लास कास श्वासादि तथा हृदयरोग दूर होतेहैं ॥ १०० ॥

अथोदरम्।

रुद्ध्वास्वेदांबुवाहीनिदोषाःस्रोतांसिसंचिताः।
प्राणाग्न्यपानान्संदूष्यजनयंत्युदरंनृणाम् ॥ १०१ ॥

अर्थ-संचितहुए वातादि दोष पसीने और जलके बहाने

वाली नसोंको रोककर प्राणवायु जठराग्नि और अपान वायुको दूषित करके उदररोगको उत्पन्न करते हैं ॥१०१॥

आध्मानंगमनेशक्तिर्दौर्बल्यंदुर्बलाग्निता ।
दाहस्तंद्राचसर्वेषुजठरेषुभवंतिहि ॥ २ ॥

अर्थ–पेटमें अफारा चलनेमें अशक्ति दुर्बलता मन्दाग्नि दाह तन्द्रा यह सब लक्षण उदररोगमें होतेहैं ॥ २ ॥

अथ प्लीहोदरम् ।

विदाह्यभिष्यंदिरतस्यजन्तोःप्रदुष्टमत्यर्थमसृक्कफश्च ।
प्लीहाभिवृद्धिंकुरुतःप्रवृद्धौप्लीहोत्थमेतज्जठरंवदन्ति ॥ ३ ॥
सव्यान्यपार्श्वेयकृतिप्रवृद्धेज्ञेयंयकृद्दाल्युदरंतदेव ॥ ३ ॥

अर्थ–जो मनुष्य दाहकारक कफकारक पदार्थोंका अति सेवन करता है उसके रक्त कफ अत्यन्त दूषित होकर बढे हुए प्लीहाकी वृद्धि करते हैं उसको प्लीहोदर कहते हैं यह प्लीहा अर्थात् तापतिल्ली बाईं पसलीके निकट पडती है इसीका भेद यकृद्दाल्युदर है यह दाहिनी और यकृतके दूषित होनेसे यकृतद्दाल्युदरके नामसे होती है ॥ ३ ॥

कुष्ठदन्तीयवक्षारंपाठांत्रिलवणंवचाम् ।
अजाजींदीप्यकंहिंगुंस्वर्जिकांचव्यचित्रकम् ॥ ४ ॥
शुण्ठींनोपणाम्भसापीत्वावातोदररुजापहम् ।
हिंगुत्रिकटुकंकुष्ठंयवक्षारोयसैन्धवम् ॥
मातुलुंगरसोपेतंप्लीहशूलहरंपरम् ॥ ५ ॥
शरपुंखमूलकल्कः पीतस्तक्रेणनाशयत्यचिरात् ॥
निरंतरकालगुल्मप्लीहानंदमयगादम ॥ ६ ॥

अर्थ–[illegible] पाठा [illegible] कालानोंन सं·

चरनोन वच जीरा अजवायन हींग सज्जीखार चव्य चीता और सोंठ यह महीन पीस गरम जलके साथ पीनेसे वातोदर रोग दूर करता है हींग सोंठ मिर्च पीपल कूठ जवाखार सेंधा इनका चूर्ण बिजौरेनींबूके साथ सेवन करनेसे प्लीहा और शूलरोग दूर होताहै यह बहुत दिनोंके प्लीहाको भी दूर करता है ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥

सौवर्चलंयवक्षारंसामुद्रंकाचसैन्धवम् ॥
टंकणंस्वर्जिकाक्षारंतुल्यमेकत्रचूर्णयेत् ॥ ७ ॥

अर्थ–सौचरलोन, जवाखार, समुद्रलोन, कचलोन, सेंन्धा, सुहागा, सज्जी, इन सबको बराबर ले चूर्णकर ॥७॥

अर्कदुग्धैःस्नुहीदुग्धैर्भावयेदातपेत्र्यहम् ॥
ऊर्ध्वाधःस्थैःक्रमात्तस्यतत्तुल्यैरर्कपल्लवैः ॥ ८ ॥
भाण्डेसंस्थाप्यमृल्लिप्तेरुद्ध्वागजपुटेपचेत् ।
स्वांगशीतंतुसंचूर्ण्यचूर्णमेषांतुमेलयेत् ॥ ९ ॥
त्र्यूषणंसविडंगंचराजिकांत्रिफलामपि ॥
चव्यंचहिंगुसंभृष्टंतक्रेणाद्याद्यथाफलम् ॥ १० ॥
वज्रक्षाराभिधंचूर्णमुदराणिविनाशयेत् ॥
शोथंगुल्मंतथाष्टीलांमन्दाग्निमरुचिंतथा ।
प्लीहानंयकृद्दाल्याख्यामुदरंचविशेषतः ॥ ११ ॥

अर्थ–मन्दारके दूधकी तीन भावना देकर धूपमें सुखावे इसी प्रकार सेहुँडके दूधकी तीनभावनादे फिर चूर्णकी बराबर मंदारके पत्ते लेकर थोड़े एक हांडीमें रखकर उसपर यह चूर्ण धरे फिर पत्ते फिर चूर्ण इसप्रकार जमायकर हंडियाका

मुख बंद करके कपरोटी करे और सुखाकर गजपुट दे जब स्वयं ठंडा होजाय तब उसे निकालकर आगे कही औषधीयोंका चूर्ण डाले सोंठ मिर्च पीपल वायविडंग राई हरड आमला बहेडा चवक भूनी हुई हींग इन सबका चूर्णकर क्षारके साथ मिलावे इस वज्रक्षारको शक्तिके अनुसार मट्ठेके साथ पिये तो सब उदररोग गुल्म अष्ठीला मन्दाग्नि अरुचि प्लीहा यकृत दाल्युदरादि रोगोंका नाश करता है॥ ८-११॥

अथ मूत्रकृच्छ्रम् ।

पृथक्समस्तैस्तैःशुक्रवेगरोधातिवाततः ।
अश्मर्याश्चाप्यथेतिस्यान्मूत्रकृच्छ्रोरुजाकरः ॥१२॥

अर्थ—पृथक् पृथक् निदानोंसे कुपित हुए वातादि दोष वा सर्वदोष एक साथ कुपित हुए मूत्राशयमें मासलोके मूत्रके मार्गको पीडित करते हैं तब मनुष्य बडे कष्टसे मूत्र करता है ॥ १२ ॥

मूत्रकृच्छ्रःसयःकृच्छ्रान्मूयत्रेद्वस्तिरोधकृत ।
धात्र्यागोक्षुरबीजानांयवक्षारयुतःसदा ॥
मूत्रकृच्छ्रंसकृन्नातंसद्यःपीतोनिवारयेत् ॥ १३ ॥

अर्थ—यद्यपि इसका वस्तिस्थान रुद्ध होजाता है तब यह बडे कष्टसे मूत्र करता है इसी कारण इसको मूत्रकृच्छ्र कहते हैं अब औषधी लिखते हैं आंवलेका काढा [illegible] [illegible] एक पीनेसे मूत्रकृच्छ्र और कृच्छ्र तत्काल दूर होता है ॥ १३ ॥

[illegible]भेदकशिलाजतुपिप्पलीनां
[illegible]नित्तं [illegible]नलकांस्नानिर्पीना ।

दद्याद्गुडेनसहितान्यवलोक्यधीमा-
नासन्नमृत्युरपिजीवतिमूत्रकृच्छ्री ॥ १४ ॥

अर्थ-इलायची पाषाणभेद शिलाजीत पीपल इनका चूर्ण कर चावलके जलसे पानकरै अथवा गुडके साथ मिलाकरदे जो निकट मृत्यु आई होतो भी मूत्रकृच्छ्रवाला जीसकता है ॥ १४ ॥

सितातुल्योयवक्षारःसर्वकृच्छ्रविनाशनः ।
गुडेनमिश्रितंदुग्धंकदुष्णंकामतःपिवेत् ।
मूत्रकृच्छ्रेषुसर्वेषुशर्करावातरोगजित् ॥ १५ ॥

अर्थ-मिश्रीयुक्त जवाखारके खानेसे सबप्रकारके मूत्रकृच्छ्रोंका नाश होता है गुडके साथ दूध मिलाकर कुछ गरमकर इच्छापूर्वक पिये तो सम्पूर्ण मूत्रकृच्छ्र और वातरोग दूर होते हैं ॥ १५ ॥

गोकंटकंसदलमूलफलंगृहीत्वा
संकुट्यतंपलशतंक्वथितःकषायः ।
पादस्थितेनवजलेनपलानिदत्वा ।
पंचाशतंपरिपचेदपिशर्करायाः ॥ १६ ॥

अर्थ-गोखरू दल मूल और फलके सहित ग्रहण करके और कूटकर सौपलका काढा करै जब चौथाई रहजाय तब ५० पल शक्करकी चासनीमें इसको औटावै ॥ १६ ॥

तस्मिन्घनत्वमुपगच्छतिचूर्णितानि
दद्यात्पलद्वयमितानिसुभेषजानि ॥
शुंठीकणात्रुटियवागजकेसराणि ।
जातीफलंचककुभत्रपुसीफलानि ॥ १७ ॥

धंशीपलाशृकमितिप्रणिगायनित्यं
लिह्यात्सुसिद्धमघृतंपलसंमितंतत्।
हन्याद्धिमूत्रपरिदाहविबंधकृच्छ्रं
मूत्राश्मरीरुधिरमेहमधुप्रमेहान् ॥ १८॥

अर्थ-जब यह गाढा होजाय तो आगे लिखी औषधि दोष-
ल चूर्ण कर डाले सोंठ पीपल छोटी इलायची इन्द्रजो नाग-
केशर जायफल कांहचृक्षकी छाल इन्द्रफला यह सम्पूर्ण औ-
षधि मिलाकर धंशपलाष्टकके इसको सेवन करनेसे अमृतकी
समान फल होता है एक पल इसको लेना चाहिये इससे
मूत्ररोध परिदाह मूत्रकृच्छ्र मूत्राश्मरी रुधिरविकार प्रमेह
मधुमेहादिरोग दूर होते हैं ॥ १७ ॥ १८ ॥

कुशःकाशःशरोदर्भइक्षुश्चेतितृणोद्भवः।
पित्तकृच्छ्रहरंपंचमूलंबस्तिविशोधनम्।
एतत्सिद्धंपयःपीतंमेदहंचातिशोणितम् ॥ १९॥

अर्थ-कुशा और काशकी जड़रामशर डाभ ईख इन पांचों
का काढाकर पीनेसे मूत्रकृच्छ्र रुधिरविकार दूर होता है १९

अथाश्मरी।

निरुध्यमूत्रमार्गंयायातनांजनयेद्भृशम्।
कटिबस्तिप्रदेशेपुसाश्मरीतितिनिगद्यते ॥ १२०॥

अर्थ-जो मूत्रमार्गको रोककर बहुत कष्ट देती है कटि
और बस्तिदेशमें पीडा देती है वह पथरीकी पीडा
जाननी ॥ १२० ॥

पीत्वापापाणभित्क्वाथंसशिलाजतुशर्करम्।
पित्ताश्मरींनिहन्त्याशुवृक्षमिद्राशनिर्यथा ॥ २१॥

अर्थ—पाषाणभेदका क्वाथ शिलाजीत और शर्करा डा·

लकर पीये तो पित्तकी अश्मरी (पथरी) दूर होतीहै जैसे वृक्षको वज्र नष्ट करता है ॥ २१ ॥

यवाक्षारगुडोन्मिश्रंरसंपुष्पफलोद्भवम् ।
पिबेन्मूत्रविबंधघ्नंशर्कराश्मरिनाशनम् ॥ २२ ॥

अर्थ-जवाखार और गुड मिलाकर नारियलके रससे संयुक्त कर पियेतो मूत्रविबंध शर्करा अश्मरी नाश होतीहै ॥ २२ ॥

पाषाणभिद्वरुणगोक्षुरकोरुबूक-
क्षुद्राद्वयेक्षुरकमूलकृतःकषायः ।
दध्नायुतोजयतिमूत्रविबंधमुग्र-
मुग्राश्मरीमपिसशर्करयासमेताम् ॥ २३ ॥

अर्थ-पाषाणभेद वरुणा बसना गोखरू अण्डकी जड भटकटैया, दोनों तालमखाना इनको यथोक्त पीसकर दही के साथ पान करनेसे मूत्रविबंध महाअश्मरी शर्करा आदिरोग दूर होते हैं ॥ २३ ॥

यःपिबेद्रजनींसम्यक्सगुडांतुषवारिणा ।
तस्याशु- पेयात्यस्तंभेद्रशर्करा ॥ २४ ॥

नो तुषके अट (कांजी) मे हल्दीको पथरीभी दूर होती है अर्थात् ॥ २४ ॥

पमा।
थानेविचक्षणः॥२५॥
भी न आप इस स्या-
चाहिये ॥ २६ ॥

शस्त्रवेत्तामसुच्छिद्यशस्त्रेणोर्णोनदेहिनः ।
निष्कासयेत्प्रयत्नेननिर्वातंरक्षितस्त्वच ॥
एवंमयातिदुःसाध्याश्मरीदेहक्षयंकरी ॥ २६ ॥

अर्थ–शस्त्रका जाननेवाला युक्तिसे इसको छेदन करै औ यत्नपूर्वक इसको निकाले निर्वातस्थानमें रक्षित करै इस प्रकारसे देहकी क्षय करनेवाली पथरी दूर होतीहै ॥ २६॥

अथ प्रमेहः ।

दशषड्वापिचत्वारःकफपित्तसमीरजाः ।
साध्यायाप्याअसाध्यास्तेप्रमेहाःक्रमशोनृणाम् २७

अर्थ–कफसे जो दशप्रकारके प्रमेह होते हैं वे साध्य हैं कारण कि इनकी औषधिक्रिया समहै. छःप्रकारके कफके प्रमेह याप्य हैं. कारण कि इनमें औषधिक्रिया विषम है जैसे कि शीतोपचार पित्तशमनकारक और मांसादिकोंके बढानेवाले हैं तथा चार प्रकारके वातप्रमेह असाध्य हैं कारण कि वायु विनाशकारक है जिस्सेकि यह वायु मज्जादिक गंभीर धातुओंके आकर्षण करनेसे बहु व्यापिकारी और शीघ्रकारी है ॥ २७ ॥

चूर्णंफलत्रिकभवंमधुनावलीढं
हन्तिप्रमेहगदमाशुचिरप्रभूतम् ॥ २८ ॥

अर्थ–त्रिफलेका चूर्ण मधुके साथ चाटै तो बहुत दिनोंका प्रमेहरोग दूर होता है ॥ २८ ॥

न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थश्योनाकारग्वधासवम् ॥
आम्रंकपित्थंजंबूंचप्रियालंककुभंधवम् ॥ २९ ॥

लकर पीये तो पित्तकी अश्मरी (पथरी) दूर होतीहै जैसे वृक्षको वज्र नष्ट करता है ॥ २१ ॥

यवाक्षारगुडोन्मिश्रंरसंपुष्पफलोद्भवम् ।
पिबेन्मूत्रविबंधघ्नंशर्कराश्मरिनाशनम् ॥ २२ ॥

अर्थ-जवाखार और गुड मिलाकर नारियलके रससे संयुक्त कर पियेतो मूत्रविबंध शर्करा अश्मरी नाश होतीहै ॥ २२ ॥

पापाणभिद्वरुणगोक्षुरकोरुबूक-
क्षुद्राद्वयंक्षुरकमूलकृतःकपायः ।
दध्नायुतोजयतिमूत्रविबंधमुग्र-
मुग्राश्मरीमपिसशर्करयासमेताम् ॥ २३ ॥

अर्थ-पापाणभेद वरुणा वसना गोखरू अण्डकी जड भटकटैया, दोनों तालमखाना इनको बारीक पीसकर दही के साथ पान करनेसे मूत्रविबंध महाअश्मरी शर्करा आदिरोग दूर होते हैं ॥ २३ ॥

यःपिबेद्रजनींसम्यक्सगुडांतुषवारिणा ।
तस्याशुचिरगृढापियात्यस्तंभेदृशर्करा ॥ २४ ॥

अर्थ-जो गुडसहित तुषके जल (कांजी)से हल्दीको पिये उसकी चिरकालकी पथरीभी दूर होती है अर्थात् चूर्ण होकर निकल जातीहै ॥ २४ ॥

एतैरुपायैर्नोगच्छेदश्मरीपायमोपमा।
तांस्थानाद्युक्तितोनीत्वाछेद्येस्थानेविचक्षणः॥२५॥

अर्थ-यदि अश्मरी इनके उपायोंसेभी न जाय तब स्थानसे युक्तिपूर्वक लेआकर छेदन करना चाहिये ॥ २५ ॥

शस्त्रवेत्तासमुच्छिद्यशस्त्रेनोक्तेनदेहिनः ।
निष्कासयेत्प्रयत्नेननिर्वातंरक्षितस्यच ॥
एवंप्रयातिदुःसाध्याश्मरीदेहक्षयंकरी ॥ २६ ॥

अर्थ-शस्त्रका जाननेवाला युक्तिसे इसको छेदन करै और यत्नपूर्वक उसको निकाले निर्वातस्थानमें रक्षित करे इस प्रकारसे देहकी क्षय करनेवाली पथरी दूर होतीहै ॥ २६॥

अथ प्रमेहः ।

दशषङ्वापिचत्वारःकफपित्तसमीरजाः ।
साध्यायाप्याअसाध्यास्तेप्रमेहाःक्रमशोनृणाम् २७

अर्थ--कफसे जो दशप्रकारके प्रमह होते हैं वे साध्य हैं कारण कि इनकी औषधिक्रिया समहै. छःप्रकारके कफके प्रमेह याप्य हैं. कारण कि इनमें औषधिक्रिया विषम है जैसे कि शीतोपचार पित्तशमनकारक और मांसादिकोंके बढानेवाले हैं तथा चार प्रकारके वातप्रमेह असाध्य हैं कारण कि वायु विनाशकारक है जिस्सेकि यह वायु मज्जादिक गंभीर धातुओंके आकर्षण करनेसे बहु व्यातिकारी और शीघ्रकारी है ॥ २७ ॥

चूर्णंफलत्रिकभवंमधुनावलीढं
हन्तिप्रमेहगदमाशुचिरप्रभूतम् ॥ २८ ॥

अर्थ-त्रिफलेका चूर्ण मधुके साथ चाटै तो बहुत दिनोंका प्रमेहरोग दूर होता है ॥ २८ ॥

न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थश्योनाकारग्वधासवम् ॥
आम्रंकपित्थंजंबूंचप्रियालंककुभंधवम् ॥ २९ ॥

करंजत्रिफलाशक्रभल्लातकफलानिच ।
एतानिसमभागानिश्लक्ष्णचूर्णानिकारयेत्॥ ३० ॥

अर्थ-बडकी छाल गूलरकी छाल पीपलकी छाल सोनापाठा अमलतास आम कैथ और जामुनकी छाल, चिरौंजी अर्जुनकी छाल नागरमोथा मधुयष्टी (मुलेठी) महुएकी छाल लोधकी छाल वरनाकी छाल कूठ करंजुआ हरड बहेडा आमला कुडा भिलावेके फल यह सब बराबर भाग लेकर बारीक चूर्णकरै ॥ ३० ॥

न्यग्रोधाद्यमिदंचूर्णंमधुनासहलेहयेत् ।
फलत्रयंचानुपिबेत्तेनमूत्रंविशुद्ध्यति ॥ ३१ ॥

अर्थ-यह न्यग्रोधादि चूर्ण है इसको मधुके साथ चाटै पीछे त्रिफलेको पान करै इससे मूत्र शुद्ध होताहै ॥ ३१ ॥

एतेनविंशतिर्मेहामूत्रकृच्छ्राणियानिच ।
प्रशमंयांतियोगेनपिडकानचजायते ॥ ३२ ॥

अर्थ-इससे बीसप्रकारके प्रमेह और मूत्रकृच्छ्र शान्त होजाते हैं और पिडका भी नहीं होतीहै ॥ ३२ ॥

चूर्णंनिशायामधुनासमेतंधात्रीफलानांस्वरसेनमिश्रम् ।
प्रलीढमल्पैर्दिवसैर्निहन्तिप्रमेहसंज्ञानखिलान्विकारान्

अर्थ-हल्दीका चूर्णकर इसमें शहद डाल और इसीमें आमलेका स्वरस मिलाय इसको चाटनेसे थोडेही दिनों में प्रमेहके सब विकार दूर होजाते हैं ॥ ३३ ॥

पीत्वासक्षौद्रममृतारसंजयतिमानवः ।
प्रमेहंविंशतिविधंमृगेन्द्रइवदंतिनम् ॥ ३४ ॥
अर्थ-शहद और गिलोयका रस पान करनेसे वीस प्रकारके प्रमेह ऐसे दूर होजाते हैं जैसे मृगेन्द्र हस्तीको मारता है ॥ ३४ ॥

शाल्मलित्वग्रसःक्षौद्ररजनीक्षौद्रसंयुतः ॥
पीतोनिहन्तिनिखिलान्प्रमेहानल्पवासरैः ॥ ३५॥
अर्थ-सैमलकी छालका रस शहद और हलदीके चूर्णके साथ खानेसे थोडेही दिनोंमें सब प्रमेहरोग दूर होते हैं॥३५॥

शाल्मलित्वग्रसोपेतंसक्षौद्रंरजनीरजः ।
वंगभस्महरेन्मेहान्पंचाननइवद्विपान् ॥ ३६ ॥
अर्थ-सैमलकी छालके रसमें शहद और हल्दीका चूर्णकर वंगकी भस्मके साथ सेवन करे तो सब प्रमेह ऐसे दूर होजाते हैं कि जैसे सिंहके सामने हाथी नहीं ठहरता॥ ३६ ॥

निश्चन्द्रमाभ्रकंभस्मसवरारजनीरजः ॥
मधुनालीढमचिरात्प्रमेहान्विनिकृंतति ॥ ३७ ॥
अर्थ-निश्चन्द्र अभ्रकभस्म त्रिफला और हल्दीके सा शहदसे चाटे तो प्रमेहरोग दूर होतेहैं ॥ ३७ ॥

हेमांभोधरचंदनंत्रिकटुकंधात्रीप्रियालाकुहू ।
मज्जानाह्रिसुगंधिजीरकयुगंशृंगाटकंवंशजम् ॥
जातीकोशलवंगधान्यकयुतंप्रत्येककर्षद्वयम् ।
पूगस्याष्टपलंविचूर्ण्यचपयःप्रस्थत्रयेसर्पिषः ॥३८॥
अर्थ-नागरमोथा चंदन सोंठ मिरच पीपल आंवला चिरोंजी धेरकी मींगी तज इलायची तालीसपत्र काला-

जीरा सफेदजीरा सिंघाडेकी गिरी वंशलोचन जायफल लौंग धनियाँ कपूर दालचीनी यह सब बराबर आठ २ टंक ले सबको कूट पीस कपडछानकर रख छोडे दक्षिणकी चिकनी सुपारी १२८ टंक ले ॥ ३८ ॥

दद्याद्गोःकुडवंसिताद्धकतुलांधात्रीवरीद्वयंजली ।
मन्दाग्नौविपचेद्भिपक्शुभदिनेसुस्निग्धभांडेक्षिपेत् ॥
यःखादेद्दिनशःप्रभातसमयेमेहांश्चजीर्णज्वरम् ।
पित्तंसाम्लमसृक्स्रुतिंगुदहृशोर्वक्राक्षिनासासुच ॥ ३९॥

अर्थ-गौका नवीनधृत टंक ले सफेद मिश्री ८०८टंक पीछे सुपारियोंको खरलमें डाल कूटकर कपरछानकर१२४ टंक दूधमें डालकर मावा करि पीछे उस मावेको घृत मिला कर भूने पूर्वोक्त सुपारीपाककी विधिसे इसे बनाले अर्थात मन्दाग्निमें इसको पकाले और अच्छे दिनमें इसे सुन्दर बर्तन में रखछोडे जो इसे प्रातःकालको खाय उसको प्रमेह जीर्णज्वर पित्त अम्ल रुधिरविकार गुदरोग दृष्टिरोग मुखरोग नेत्ररोग नासारोग दूर होते हैं ॥ ३९ ॥

मन्दाग्निंचविजित्यपुष्टिमतुलांकुर्याच्चशुक्रप्रदम् ।
पूगंगर्भकरंपरंगदहरंस्त्रीणामसृग्दोषजित ॥ ४० ॥

अर्थ-यह मन्दाग्निको जीतकर महापुष्टि वीर्य देताहै यह सुपारीपाक गर्भ करनेवाला रोगहारी तथा स्त्रियोंके रुधिर विकारको दूर करता है ॥ ४० ॥

एलांसकर्पूरमितासधात्रीजातीफलांसमधुरशाल्मलीकम्
मृताभ्रवंगायसभस्मचन्दनत्वंसमंदद्यात्तुल्यलवंमनीषी ४१॥

अर्थ–छोटी इलायची भीमसेनीकपूर मिश्री आमले जायफल गोखरू सेमलकी छाल पारा गंधक वंग लोहभस्म सबको समान भाग ले खूब खरल करै ॥ ४१ ॥

ततोभवत्येपरसःप्रमेहकुठारनामाविदितप्रभावः ।
निष्कार्द्धमात्रोमधुनावलीढोनिहंतिमेहानखिला-
नुदग्रान् ॥ ४२ ॥

अर्थ–तौ यह प्रमेहकुठाररस सिद्ध होवे इसमेंसे दो मासे शहदके साथ सेवन करे तो यह सम्पूर्ण प्रमेहरोगोंको दूर करै ॥ ४२ ॥

अथ मेदः ।

अव्यायामदिवास्वप्नश्लेष्मलाहारसेविनः ।
मधुरान्नरसात्प्रायःस्नेहान्मेदोविवर्द्धते ॥ ४३ ॥

अर्थ–कसरतआदि परिश्रमका न करना दिनको सोना कफकारक आहारोंका सेवन मधुर अन्नरस और स्निग्ध सेवनसे बहुधा मेद बढता है ॥ ४३ ॥

मेदोमांसविवृद्धित्वात्स्थूलस्फिगुदरस्ततः ।
अपथोपचयोत्साहोनरोतिस्थूलउच्यते ॥ ४४ ॥

अर्थ–मेद और मांसके बढनेसे स्थूल स्फिक उदर धातुओंके उपचय होनेसे अर्थात् सब धातुओंके बढनेसे मार्ग बंद होजाते हैं इस कारण और धातु पुष्ट नहीं होते और मेद बढता है इससे मनुष्य सब कामकाज करनेमें असमर्थ होजाता है ॥ ४४ ॥

मस्तुनासक्तवः पीता मेदोवृद्धिविनाशनाः ।
विल्वपत्ररसोवापिगात्रदौर्गन्ध्यनाशनः॥ ४५ ॥

अर्थ-दहीके जलके साथ सत्तु पान करनेसे मेदवृद्धिरोग दूर होताहै और विल्वपत्रका रस गात्रदौर्गंध्यको नाश करताहै ॥ ४५ ॥

तिलसर्षपसठीभार्ङ्गीकुष्ठसमंगाभयाब्दजलैः ।
साम्रत्वग्भिर्लेपोमेदोदौर्गन्ध्यनाशनःपुंसाम् ॥ ४६

अर्थ-तिल सरसों सठी भारंगी कूठ मंजीठ जंगीहरड नागरमोथा सुगंधबाला इनका आमकी छालसहित लेपकर नेसे पुरुषोंका मेद रोग और दुर्गन्धि रोग दूर होता है४६

अथ श्वयथुः ।

रक्तपित्तकफान्वायुःशिराःप्रावाहयेद्बहिः ।
शोथंकरोतिनवधादोपक्ष्वेडाभिघाततः ॥ ४७ ॥

अर्थ-रक्तपित्त और कफको अपने कारणोंसे दूषित होकर वायु बाहरकी नसोंमें प्राप्त करती है यह नौ प्रकारका शोथ होता है,वह दोष ताडन और घातसे होता है ॥ ४७ ॥

गुडपिप्पलिशुण्ठीनांचूर्णंश्वयथुनाशनम् ।
आमाजीर्णप्रशमनंशूलघ्नंवस्तिशोधनम् ॥४८॥

अर्थ-गुड पीपल सोंठ इनका चूर्ण शोथ रोगका नाश करता है तथा आम अजीर्णको दूर करना शूलनाशक और वस्तिशोधक है ॥४८ ॥

गुडार्द्रकंवागुडनागरंवागुडाभयांवागुडपिप्पलींवा ।
कर्षाभिवृद्ध्यात्रिपलप्रमाणंखादेन्नरःपक्षमथापिमासम्

अर्थ-गुड अद्रख वा गुड सोंठ वा गुड जंगीहरड वा गुड पीपली इनको समभाग मिलाकर दोमाशे प्रथम दिन खाने

से दूसरे दिन चार तीसरे दिनछे चौथे दिन आठ इस प्रका
र दो दो तोले नित्य बढाते जांय जब तीन पलकी मात्रा
होजाय तबसे वीसदिन पर्यन्त उतनाही खाते रहना इस
प्रकार एक मास पर्यन्त यह मात्रा पचजाय तब दूधभात
अथवा यूषभात अथवा मांसरस खाय तब सब प्रकारका
शोथ जाय ॥ ४९ ॥

शोफप्रतिश्यायगलास्यरोगान्
सश्वासकासारुचिपीनसादीन् ॥
जीर्णज्वरार्शोग्रहणीविकारान्
हन्यात्तथान्यान्कफवातरोगान् ॥ ५० ॥

अर्थ-सूजन जुखाम गलेके रोग श्वास कास अरुचि
पीनस जीर्णज्वर बवासीर संग्रहणीके विकार तथा दूसरे
कफ वातरोगोंको भी दूर करता है ॥ ५० ॥

कृष्णाग्निविश्वघनजीरककंटकारी
पाठानिशाकरिकणामगधाजटानाम् ॥
चूर्णंकवोष्णसलिलेनविलोड्यपीतम्
नातःपरंश्वयथुरोगहरंनराणाम् ॥ ५१ ॥

अर्थ-पीपल चित्रक सोंठ नागरमोथा जीरा भटकटैया
पाठा हलदी गजपीपल पीपली जटामांसी इनका चूर्ण
कर गरमजलके साथ मिलाकर पीनेसे इससे अधिक
शोथ रोगको दूर करनेवाली और औषधि नहीं है ॥ ५१ ॥

अथ मुष्कवृद्धिः।

अधोगतिर्वंक्षणतोमुष्कौप्राप्यकरोतिहि।
दोषात्रमेदोमूत्रांत्रैः मतयांडोन्नतिमरुत् ॥ ५२ ॥

अर्थ-अपने कारणोंसे कुपितहो नीचेको गमन करनेवाले शोथ और शूलको करनेवाले जांघकी संधीमें मातःहोकर अंडकोशकी चलानेवाली नाडीको पीडितकर उन अंडकोशोंको बढाता है इसको अंडवृद्धि कहते हैं वह वातादि दोषसे तीनप्रकार रक्तसे चौथी मेदसे पांचवीं मूत्रसे छठी आंतोंसे सातवीं है ॥ ५२ ॥

चन्दनंमधुकंपद्ममुशीरंनीलमुत्पलम् ।
क्षीरपिष्टःप्रलेपःस्याद्दाहशोथव्रणापहः॥ ५३ ॥

अर्थ-लालचन्दन महुआ पद्माख खस नीलोफर इनको ले दूधके साथ लेपकरनेसे दाह और शोथ दूर होताहै ५३ ॥

रास्नायष्टचमृतैरंडबलागोक्षुरसाधितः ॥
क्वाथोंत्रवृद्धिहंत्याशुरुबुतैलेनमिश्रितः ॥ ५४ ॥

अर्थ-रास्ना मुलैठी गिलोय एरण्ड खरैटी गोखरू इनका काढाकर अण्डके तेलमें मिलाय अण्डीके तेलके साथ मलनेसे अंत्रवृद्धि दूर करता है ॥ ५४॥

अथ ब्रध्नः ।

वंक्षणेदोषजःशोथोब्रध्नइत्यभिधीयते ।
भृष्टश्चैरंडतैलेनकल्कःपथ्यासमुद्भवः ॥ ५५ ॥
कृष्णासैन्धवसंयुक्तोब्रध्नरोगहरःपरः ।
सद्यो मृतस्यकाकस्यमलेनपरिलेपनात ॥ ५६ ॥

अर्थ-जांघकी संधिमें जो दोषोंसे शोथरोग होजाता है इसे ब्रध्न कहते हैं हरडका कल्क कर अण्डके तेलमें भून ले ॥ ५५ ॥ इसमें पीपल और सैंधा डालकर लेपकरनेसे ब्रध्नरोग दूर होता है अथवा तत्काल मरे काककी बीटका पहरर लेपकरै ॥ ५६ ॥

व्रणरोगःप्रयात्याशुरविणेवतमश्चयः ।
पक्वेव्रदारणंकृत्वाप्रकर्त्तव्याव्रणक्रिया ॥ ५७ ॥

अर्थ-तो तत्काल व्रद्को आराम होजाता है जैसे सूर्यके सामने अंधकार दूर होजाता है और जो पक जाय तो उसे चीर कर व्रणक्रिया करे ॥ ५७ ॥

अथ गलगंडः ।

निबद्धःश्वयथुर्यस्तुमुष्कवल्लंवतेगले ।
महान्वायदिवाह्रस्वोगलगंडंतमादिशेत् ॥ ५८ ॥

अर्थ-जो सूजन बढकर गलेमें अण्डकोशकी समान लटकती है वोह महान् वा ह्रस्व किसीप्रकारका हो उसे गलगण्ड कहते हैं ॥ ५८ ॥

अथ ग्रंथिः ।

वातादयोमांसमसृक्प्रदुष्टाः ।
प्रदूष्यमेदश्चतथाशिराश्च ॥
वृत्तोन्नतंग्रंथिमरुक्सशोफम् ।
कुर्वन्त्यतोग्रंथिरितिप्रदिष्टः ॥ ५९ ॥

अर्थ-अतिशय दुष्ट हुए वातादिदोष मांस रक्त मेद और नसोंको दूषित करके गोल ऊंचा गांठसा बंधा हुआ शोथ उत्पन्न करते हैं वैद्य उसको ग्रंथि कहते हैं ॥ ५९ ॥

अथ गंडमाला ।

कर्कंधुकोलामलकप्रमाणैःकक्षांसमन्यागलवंक्षणेषु ।
मेदःकफाभ्यांचिरमंदपाकैःस्याद्गंडमालाबहुभिस्तुगंडैः

अर्थ-जो मेद और कफ करके कांख कंधे गरदन गल जंघा और कमरकी संधिमें बडे बेर तथा छोटे बेरके प्रम

वा आमले सरीखी बहुत दिनोंमें धीरेधीरे पकनेवाली बहुत सी गाँठें होतीहैं उनको गंडमाला कहतेहैं ॥ ६० ॥

सर्षपाञ्छणबीजानिशिग्रुबीजातसीयवान् ।
मूलकस्यचबीजानितक्रेणाम्लेनपेषयेत् ॥
गंडानिग्रंथयश्चैवगंडमालाः सुदारुणाः ।
प्रलेपनात्प्रशाम्यन्तिविलयंयान्तिचाचिरात्॥६१॥

अर्थ–सरसों सहंजनेके बीज सनके बीज अलसी जव और मूलीके बीज इनको खट्टे मट्टेमें पीसकर लेपकरै तो गलगंड ग्रंथि गंडमाला शीघ्रही शान्त हो जातीहैं ॥ ६१ ॥

अथ श्लीपदः ।

श्लीपदःपादशोथःस्यान्मेदःकफसमुद्भवः ।
नासाकर्णाक्षिहस्तादावप्याहुःकेप्यमुंपुनः ॥ ६२ ॥

अर्थ–अपने २ चिन्होंको प्रगट दिखानेवाले वातादिक दोषोंसे मेदमांसके आश्रित शोथ उत्पन्न होताहै वह चरणमें होनेसे श्लीपद कहाताहै कोई कहतेहैं कि यह नाक कान आंख और हाथमेंभी होताहै ॥ ६२ ॥

धत्तूरैरंडवर्षाभूनिर्गुण्डीशिग्रुसर्षपैः ।
नलेपःश्लीपदंहन्तिचिरोत्थमपिदारुणम् ॥ ६३ ॥

अर्थ–धतूरा एरण्ड संभालू पुनर्नवा और सहँजना इनकी जड और सरसोंका लेप दीर्घकालके हुए दारुण श्लीपदको दूर करताहै ॥ ६३ ॥

अथ विद्रधिः ।

पृथग्दोषैःसमस्तैश्चक्षतेनक्षतजेनच ।
गुल्मवद्विद्रधिःप्रायःस्त्रीस्तनेरक्तविद्रधिः ॥ ६४ ॥

व्रणरोगःप्रयात्याशुरविणेवतमश्चयः।
पक्केव्रदारणंकृत्वाप्रकर्त्तव्याव्रणक्रिया॥ ५७॥
अर्थ-तो तत्काल बदको आराम होजाता है जैसे सूर्यके सामने अंधकार दूर होजाता है और जो पक जाय तो उसे चीर कर व्रणक्रिया करे॥ ५७॥

अथ गलगंडः।

निवद्धःश्वयथुर्यस्तुमुष्कवल्लंवतेगले।
महान्वायदिवाह्रस्वोगलगंडंतमादिशेत्॥ ५८॥
अर्थ-जो सूजन बढकर गलेमें अण्डकोशकी समान लटकती है वोह महान् वा ह्रस्व किसीप्रकारका हो उसे गलगण्ड कहते हैं॥ ५८॥

अथ ग्रंथिः।

वातादयोमांसमसृक्प्रदुष्टाः।
प्रदूष्यमेदश्चतथाशिराश्च॥
वृत्तोन्नतंग्रंथिमरुक्सशोफम्।
कुर्वन्त्यतोग्रंथिरितिप्रदिष्टः॥ ५९॥
अर्थ-अतिशय दुष्ट हुए वातादिदोष मांस रक्त मेद और नसोंको दूषित करके गोल ऊंचा गांठसा बंधा शोथ उत्पन्न करते हैं वैद्य उसको ग्रंथि कहते हैं॥ ५९

अथ गंडमाला।

...मेदःकफाभ्यांचिरमंदपाकैःस्याद्गंडमालावहुभिस्तु...
अर्थ-जो मेद और कफ करके कांख कंधे ... जंघा और कमरकी संधिमें बडे बेर तथा छोटे बेर

रसगंधकयोश्चूर्णंतत्समंमृद्धशंखकम् ।
सर्वतुल्यंतुकंपिल्लंकिंचित्तुत्थसमन्वितम् ॥ ६९ ॥

अर्थ-अथवा पारे और गंधकका चूर्णकर उसकी बराबर मुरदासंग ले इन सबकी बराबर कवीला ले इसमें कुछ तूतिया डाले ॥ ६९ ॥

सर्वंसंमेलयेद्दत्वाघृतंसर्वंचतुर्गुणम् ।
पिचुमुनंप्रदातव्यंदुष्टव्रणविशोधनम् ॥ ७० ॥

अर्थ-इन सबको मिलाकर इससे चौगुना घृत डाले और नीमके पत्ते डालकर यह सिद्ध करले घावपर लगानेसे॥७०॥

नाडीव्रणहरंचैवसर्वव्रणनिषूदनम् ।
येव्रणानप्रशाम्यन्तिभेषजानांशतेनच ॥
अनेनतेप्रशाम्यन्तिसर्पिषास्वल्पकालतः ॥ ७१ ॥

अर्थ-यह नाडीव्रण हरता और सम्पूर्णव्रण दूर करता है जो व्रण शत औषधियोंसभी दूर नहीं होते इस घृतसे यह थोडेही कालमें शान्त होजाते हैं ॥ ७१ ॥

सद्योव्रणः।

नानाधारामुखैःशस्त्रैर्नानास्थाननिपातितैः ।
भवन्तिनानाकृतयोव्रणास्तांस्तान्निबोधमे ॥ ७२ ॥

अर्थ-जो अनेकप्रकारके धारामुखशस्त्र शरीरके अनेक स्थानोंमें लगनेसे इनसे नाना प्रकारके व्रण होते हैं इनका वर्णन सुनो ॥ ७२ ॥

पट्टसूत्रेणसंपीडयनिर्वानभवनेस्थितः ।
लोनिकांस्त्रयित्वातुन्नमितायाःकरोम्गया ॥ ७३॥

अर्थ-अपने कारणोंसे कुपित हुए यातादि त्वचा मांस मेदको दूषितकर वेदनायुक्त गोल अथवा लम्बी सूजन उत्पन्न करतेहैं वैद्य उसको विद्रधि कहतेहैं यह वात पित्त कफ सन्निपात क्षतज और रक्त भेदोंसे छःप्रकारकी है वह गुल्मवत् होतीहै प्रायः स्त्रीके स्तनमें रक्तविद्रधि होतीहै ॥ ६५ ॥

यवगोधूममुद्गैश्चस्विन्नैःपिष्टैःप्रलेपयेत् ।
विलीयतेक्षणेनैवमपक्वश्चैवविद्रधिः । ६५ ॥

अर्थ-जो गेहूं मूंग इन्हें पीस गरम कर लेपकरनेसे क्षणमात्रमें अपक्व विद्रधि नष्टहोजातीहै ॥ ६५ ॥

अथ व्रणः ।

एकदेशोत्थितःशोथोव्रणानांपूर्वलक्षणम् ।
दोषैःपृथक्समस्तैश्चरक्तजागंतुजेश्चपट् ॥ ६६ ॥

अर्थ-जो शोथ देहके किसी अंगमें उत्पन्न होताहै वह व्रणोंका पूर्वरूपहै वात पित्त कफ सन्निपात रक्तज और आगन्तुज इन भेदोंसे छःप्रकारकाहै ॥ ६६ ॥

न्यग्रोधोदुंबराश्वत्थपुक्षवेतसवल्कलैः ।
ससर्पिभिःप्रलेपःस्याच्छोथनिर्वापणःपरः ॥६७॥

अर्थ-वड गूलर पीपल पाकर और वैंत इनकी छाल लेकर पानीमें पीस उसमें घृत मिलाय कुछ गरमकर सुहाता २ लेपकरै तौ व्रण बैठ जायगा ॥ ६७ ॥

तैलेनसर्पिषावापिताभ्यांवासक्तुपिंडिका ।
सुखोष्णःशोथवान्कार्य उपनाहः प्रशस्यते॥६८॥

अर्थ-अथवा सरसोंके तेलसे वा घृतसे या दोनोंसे सत्तूकी पींडी बनाकर कुछ गरमकर लेपकर पसीना लेवै तौ व्रण दूरहो॥ ६८ ॥

आलेपनार्थंमंजिष्ठामधुकंचाम्लपेषितम्।
शतधौतघृतोन्मिश्रंशालिपिष्टंचलेपनम् ॥ ७८ ॥

अर्थ-आलेपनके निमित्त मजीठ, मुलहठी, कांजीसे पीस लगावे अथवा सौबार धोया घृत शालीचावल पीस उसमें घृत मिलाय लेपकरे ॥ ७८ ॥

अथाग्निदग्धव्रणः ।

अग्निदग्धेव्रणेदेयंधातकीचूर्णमुत्तमम् ।
अतसीतैलसंमिश्रंवह्निदग्धव्रणापहम् ॥ ७९ ॥

अर्थ-अग्निदग्धव्रणपर धवका चूर्णकर लगावे अथवा उसको अलसीके तेलमें मिलाकर लगावे तो अग्निदग्ध व्रण रोपण होजाय ॥ ७९ ॥

अंतर्धूमविदग्धत्रिफलाचूर्णविमिश्रितंतैलैः ।
क्षौमैःशीघ्रंशमयत्यग्निव्रणमाशुलेपेन ॥ ८० ॥

अर्थ-घरका धुआं और जलाकर त्रिफलेका चूर्ण कर तेलमें मिलाय और उसमें रेशम मिलाकर अग्निव्रणपर लेप करनेसे शीघ्र व्रण शान्त होता है ॥ ८० ॥

अथ भगंदरः।

गुदस्यद्व्यंगुलेक्षेत्रेपार्श्वतःपिडकार्त्तिकृत् ।
भिन्नोभगंदरो ज्ञेयः स च पंचविधोमतः ॥ ८१ ॥

अर्थ-गुदाके दो अंगुल एक बाजूपर पीडायुक्त फुडिया होतीहै वही फूटनेसे भगन्दर होताहै वह पांच प्रकारका है यह रोग भगाकार, विदीर्ण करता है इससे भगन्दर, कहतेहैं ॥ ८१ ॥

अर्थ-तत्काल व्रण होनेपर पवन रहितस्थानमें स्थितहो उसे सूत्रसे पीडित कर अर्थात् रेशमसे लपेटकर किञ्चित् उष्ण आश्चोतनादिक उपाय करें मैदाकी किञ्चित् गरम पुलटसकर उसपर रक्खै ॥ ७३ ॥

अथवादीप्यलवणपोटल्यास्वेदयेन्मुहुः ।
संतप्तयातप्तलोहपात्रसंयोगतःक्रमात् ॥ ७४ ॥

अर्थ-अथवा अजवायन और लोनकी पोटली कर अग्नि-पर तपेहुए तवेपर उस पोटलीको तपाकर उस व्रणको शोध न करे ॥ ७४ ॥

मुहुर्मुहुर्यथादुःखंनप्राप्नोतिव्रणीनरः ।
दूर्वास्वरससंसिद्धैतैलंकंपिल्लकेनवा ॥ ७५ ॥

अर्थ-और वारंवार इस विधिसे सेकै जिससे व्रणीमनुष्यको दुःख न हो अथवा दूर्वाके रसमें सिद्ध किये तेलमें कवीला मिलाकर ॥ ७५ ॥

दार्वीत्वचश्चकल्केनप्रधानंव्रणरोपणम् ।
तिक्तासिक्थनिशायष्टीनक्ताह्वफलपल्लवैः ॥
पटोलमालतीनिंवपत्रैर्व्रण्यंशृतंघृतम् ॥ ७६ ॥

अर्थ-अथवा दारुहलदी, तजके कल्कसे प्रधान व्रण रोपण होता अर्थात् भरजाता है अथवा कुटकी, मौम, दारुहलदी, मुलहटी, करंजके बीज और पत्ते पटोलपत्र चमेलीके पत्ते नीमके पत्ते इनसे तयार किया घृत व्रणको भर देता है ॥ ७६ ॥

अथ विदीर्णसद्योव्रणः ।

आदौभग्नंविदित्वातुसेचयेच्छीतवारिणा ।
पंकेनालेपनंकुर्याद्बंधनंचकुशान्वितम् ॥ ७७ ॥

अर्थ-प्रथम व्रणको भग्नहुआ देखकर शीतल जलसे सेचन करे उसपर कीचका लेप करे और ...शाका बंधन दे ॥ ७७ ॥

त्रिफलांमापसंयुक्तांसमांशांमधुसंयुताम्।
उपदंशेप्रलेपोयंसद्योरोपयतिव्रणम् ॥ ८६ ॥

अर्थ-त्रिफला उडद बराबर कढाईमें जलाय उसकी राख शहदमें मिलाकर लेप करनेसे उपदंशके व्रण भर जाते हैं ॥ ८६ ॥

करंजनिंबार्जुनशालजंब-
वटादिभिःकल्ककषायसिद्धम् ॥
सर्पिर्निहन्यादुपदंशदोपं ॥
सदाहपाकस्रुतिदाहयुक्तम् ॥ ८७ ॥

अर्थ कांज नीम अर्जुन शाल जामुन वटादि वृक्षोंकी छालका कल्क कर काढा बनाय घृत डालकर सिद्धकर इसके सेवनसे उपदंश दोष दाह पाक स्रुति दाह सब दूर होते हैं ॥ ८७ ॥

रसआकारकरभोलंवंगंमरिचंतथा।
विडंगंमस्तकीचैतत्प्रत्येकंत्रिलवंमतम् ॥ ८८ ॥

अर्थ-पारा और अकरकरा लौंग काली मिरच वाय विडंग मस्तकी यह प्रत्येक ३ तीन भागले ॥ ८८ ॥

अरुष्कराणांदातव्याद्विगुणात्वेकविंशतिः।
दीप्यस्यद्वादशलवागुडस्यापितथामताः ॥ ८९ ॥

अर्थ-और उससे दुगुने भिलावे इक्कीस ले अजवायन बारह भाग और इतनाही गुड ले ॥ ८९ ॥

युक्त्यासंमेल्यगुटिकांखादेत्कर्षद्वयोन्मिनाम्।
पथ्यंदुग्धौदनंरम्यंतांबूलंपरिशीलयेत् ॥
पक्षाणामेकविंशत्यागुच्यतेनूपदंशतः ॥ ९० ॥

वटपत्रेष्टकाशुंठीगुडूच्यःसपुनर्नवाः ।
सुपिष्टाःपिडकोपस्थे लेपः शस्तो भगंदरे ॥ ८२॥

अर्थ-वरगदके कोमलपत्ते पुरानी ईंट सोंठ,गुडूची और पुनर्नवा इनको बारीक पीस भगन्दरकी कच्ची फुनसीपर लेपकरे ॥ ८२ ॥

तिलत्रिवृन्नागदन्तीमंजिष्ठाज्यैःससैन्धवैः ।
सक्षौद्रैश्चप्रलेपोयंभगंदरकुलांतकृत् ॥ ८३ ॥

अर्थ-तिल, निशोथ, नागदन्ती, मजीठ, घृत, सेंधव और शहद यह प्रलेप भगन्दरको नाश करता है ॥ ८३ ॥

करवीरनिशादंतीलांगलीलवणाग्निभिः ।
मातुलिंगार्कवत्साह्वैःपक्वतैलंभगन्दरे ॥ ८४ ॥

अर्थ-श्वेतकनेर हलदी दन्ती कलिहारी सेंधानोन चीता बीजपूर आक इन्द्रायन उनको तेलमें पकाकर भगन्दरपर लेपकरे ॥ ८४ ॥

अथोपदंशः ।

हस्ताभिघातान्नखदंतघातादधावनाद्वात्युपसेवनाच्च ॥
योनिप्रदोषाच्चभवन्तिशिश्ने पंचोपदंशा विविधोपचारैः

अर्थ-उपदंशका लक्षण कहतेहैं कि हाथसे मथन करनेसे जो झटका लगा है उससे तथा नख और दांतके लगनेसे तथा अच्छी प्रकार न धोनेसे अतिमैथुन करनेसे और योनिदोषसे (गरमी प्रदर रोगवाली) रजस्वला ब्रह्मचारिणी प्रसंगसे तथा औरभी अनेक प्रकारसे पांच प्रकारके उपदंश होतेहैं ॥ ८५ ॥

स मुलेटी तगरचन्दन इलायची बडी जटामांसी हल्दी दारुहलदी कूठ सुगंधवाला इनको कूटकर लेप करनेसे विस्फोटक दाहज्वर और विसर्परोग दूर होताहै ॥ ९४ ॥

अमृतवृषपटोलंमुस्तकंसप्तपर्णं
खदिरमतिसवेत्रंनिंबपत्रंहरिद्रे ।
शृतमितिसविसर्पकुष्ठविस्फोटकंडू-
रपनयतिमसूरींशीतापित्तज्वरंच ॥ ९५ ॥

अर्थ-आमला वासा पटोलपत्र नागरमोथा सतपर्ण विजयसार खैर कालावेत नीमके पत्ते दोनों हलदी इनका चूर्ण कर घीमें सान लेपकरे तो विसर्प कुष्ठ विस्फोटक कण्डू मसूरिका शीत पित्तज्वरको दूर करता है ॥ ९५ ॥

अथ स्नायुः ।

शाखासुकुपितादोषाःशोथंकृत्वाविसर्पवत् ।
कुर्युस्तंतुनिभान्कीटान्स्नायवस्तेनिरूपिताः॥९६॥

अर्थ-शाखा (हाथ पैर) में कुपित हो वातादि दोष विसर्पकी समान तन्तुके आकार कीटको उत्पन्न करते हैं उनसे स्नायु होताहै यह स्नायुरोग है ॥ ९६ ॥

बब्बूलबीजंगोमूत्रपिष्टंहंतिप्रलेपनात् ।
स्नायुकानिसमस्तानिनशोथसरुजानिच ॥ ९७ ॥

अर्थ-बबूल के बीज गोमूत्र में पीसकर लेप करे तो सम्पूर्ण स्नायु और शोथरोग दूर होताहै ॥ ९७ ॥

गव्यंसर्पिस्त्र्यहंपीत्वानिर्गुण्डीस्वरसंत्र्यहम् ।
पिबन्स्नायुकमत्युग्रंहंत्यवश्यंननसंशयः ॥ ९८ ॥

अर्थ-इनकी युक्तिसे, गुटिका बनाकर प्रतिदिन एक कर्ष खाय चावल भात इसमें पथ्यहै तथा ताम्बूल भी पथ्य है २१ इक्कीस दिन सेवनसे उपदंश रोग दूर होताहै ॥ ९० ॥

अथ विसर्पः ।

क्षुद्रपामाकृतिर्देहेपरितःपरिसर्पणात् ।
विसर्पोजायतेजंतोस्तोदस्रावरुजाकरः ॥ ९१ ॥

अर्थ-क्षुद्र पामारोगकी समान देहमें सर्वत्र फैलने से विसर्परोग कहलाता है इसमें सुई चुभनेकेसी पीडा और स्राव तथा पीडा होतीहै ॥ ९१ ॥

अग्निदग्धइवस्फोटादेहिनस्स्युर्ज्वराननाः ।
क्वचित्सर्वत्रदेहेपुरक्तपित्तसमुद्भवाः ॥ ९२ ॥

अर्थ-अग्निसे दग्ध हुएकी समान फोडे शरीरमें होते हैं और ज्वरयुक्त रक्तपित्तसे उत्पन्न हुएकभी सर्वदेहमें होतेहैं ९२

विसर्पआदावुचितोस्रसेकोवमिर्विरेकश्चविरूक्षणंच ।
तथापतृप्तिर्नविसर्परोगेसंघेहनंशस्तमितिब्रुवंति ॥९३॥

अर्थ-विसर्पकी आदिमें रक्तका सेक उचित है वमन विरेचन तथा रूक्षापन शरीरमें लाना चाहिये यदि इससे तृप्ति न हो तो स्नेहन क्रिया करनी उचित है ॥ ९३ ॥

प्रच्छर्दनंराटफलंकलिंगंपथ्यान्वितंसर्वविसर्पहारि ।
शिरीपयष्टीनतचंदनैलामांसीहरिद्राद्रुमकुष्ठवालैः ९४ ॥
लेपःससर्पिःप्रणुदत्यवश्यंविस्फोटदाहज्वरकान्विसर्पा-

अर्थ-वमन विसर्पको नाश करती है पटोल कुडा छोटी हरड सदिन लेपकर... विसर्परोग दूर होते हैं शिर-

अर्थ-तीन दिन गौका घी और निर्गुण्डीका स्वरस पान करनेसे अवश्य महाम्नायुरोग दूर होता है इसमें सन्देह नहीं ॥ ९८ ॥

अहिंस्रामूलकल्कस्यप्रलेपःस्नायुकंजयेत ।
पारावतपुरीपस्यमधुनाकल्कितस्यच ॥
गिलितागुटिकाहन्तिस्नायुकामयमुद्धतम् ॥ ९९ ॥

अर्थ-कलोंजी के मूलका कल्क (पीस कर शीतल जल से) लेपना स्नायुरोग को दूर करता है अथवा कबूतरके विष्ठामें मधुका कल्ककर गुटिका सेवन करनेसे स्नायुरोग सर्वथा दूर होताहै ॥ ९९ ॥

अथ मसूरिका ।

मसूराकृतिसंस्थानाःपिडकाःस्युर्मसूरिकाः ।
आसांपूर्वज्वरःकंडूर्गात्रभंगोऽरतिर्भ्रमः ॥ १०० ॥

अर्थ-दुष्ट पवन और जल तथा क्रोधित ग्रहकी दृष्टिसे देहमें बढ़े हुए दोष दुष्टरक्तसे मिलकर मसूरके आकार फफोलोंको उत्पन्न करते हैं इनको मसूरिका कहते हैं इनके होनेके समय ज्वर खुजली शरीरमें ऐंठन अरुचि भ्रम त्वचामें सूजन और भ्रम होता है ॥ १०० ॥

वानीरबिल्वजनितंक्वथितंपर्युषितमुत्तरेदिवसे ।
चैत्रस्यपापरोगोनभवतिपिवतांकचिन्नृणाम् १०१

अर्थ-वेत और बेलका क्वाथ कर उसे बासीकर दूसरे दिन पान करनेसे मनुष्यको कभी मसूरिका रोग नहीं होता ॥ १०१ ॥

चिंचाफलेनसहितांरजनींप्रपेष्य
येशीतलेनसलिलेनसकृत्पिवन्ति ।

अर्थ-हरड पीपल दाख मिश्री जवासा यह शहदके साथ सेवन करनेसे कंठरोग हृदयरोग दाह मूर्छा श्लेष्म और पित्त-रोग दूर करता है गुड पेठा खांड आमलकी वा गुड दुग्ध और पीपलमें सिद्धकिया घृत इसमें प्रयोग करे ॥ ११ ॥ १२ ॥

अथोदर्दः ।

वरटीदंशवद्देहेकंडूलःशीतपित्तजः ।
उदर्दःसपृथक्प्रोक्तउत्कोठोभूरितोदवान् ॥ १३ ॥

अर्थ-शीतपित्तसे शरीरमें ततैयाके काटने की समान ददोरे चमडेके बाहर होजाते हैं उसमें खाज और सुईछे-दनेकीसी पीडा होतीहै उदर्द ॥ १३ ॥

मेथिकांमरिचंरात्रियवानींकारवीमपि ।
अहित्थमेतान्यादायपृथक्पलमितानितु ॥ १४ ॥
वलिंपलद्वयमितंगोसर्पिःक्षीरशोधितम् ।
चूर्णविधायसर्वेषामार्द्रकस्यरसेनतु ॥ १५ ॥
विधायगुटिकामेकांसार्द्धटंकद्वयोन्मिताम् ।
प्रत्यहंप्रातरश्नीयादुदर्दादेर्विनाशिकाम् ॥ १६ ॥

अर्थ-मेथी, कालीमिर्च, हल्दी, अजवायन, कलौंजी, अहिफेन (अफीम) यह पृथक् पृथक् चार २ तोले ले गन्धक दो पल लेकर गौके दूध,वा घीमें शोध कर इन सबका चूर्ण-कर अदरखके रसके साथ इसकी गुटिका बनाय ढाई टंक प्रतिदिन खाय तो उदर्दरोग दूर हो ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥

यःसर्पिःसैंधवाभ्यक्तदेहश्चारक्तकंबली ।
शयीततस्यशाम्यंतिशीतपित्तादयोगदाः ॥ १७ ॥

अर्थ-जो सेंधा, घृत मिलाकर देहमें मल. कालाकम्बल ओढ शयन करे उसके शीतपित्तादि रोग शान्त होतेहैं १७॥

घृतगैरिकसिंधूत्थकुसुम्भकुसुमैःसमैः ।
उद्वर्तनंप्रशंसन्तिकोठोदर्दादिनाशनम् ॥ १८ ॥

अर्थ-घी, गेरू, सेंधानोन कुसुम्भके फूल इनको बराबरले इनका उद्वर्तन करनेसे कुष्ठ उदर्द आदि नाश होजातेहैं १८ ॥

सगुडंदीप्यकंयस्तुकिंचित्कटुकतैलकम् ।
भक्षयेत्तस्यनश्यंतिसोदर्दाःकोठसंज्ञकाः ॥ १९ ॥

अर्थ-जो मनुष्य गुड, अजवायन, कुछ कडवे तैलके साथ भक्षण करे उसके उदर्द कोठ आदि रोग दूर होते हैं ॥ १९ ॥

अथ कुष्ठम् ।

अत्युग्रपातकाहारघर्मश्रमविरेकिनाम् ।
कुष्ठान्यष्टादशनृणांजायंतेचोग्रकर्मणाम् ॥१२०॥

अर्थ-उग्रपातक विरुद्धभोजन गरमी धूपमें रहनेसे श्रम और विरेचन अधिक करनेसे उग्रकर्मवाले मनुष्योंके शरीरमें अठारह प्रकारके कोढ उत्पन्न होते हैं ॥ १२० ॥

पथ्याकरंजसिद्धार्थनिशावल्गुजसैन्धवैः ।
विडङ्गसहितैःपिष्टैर्लेपोमूत्रेणकुष्ठजित् ॥ २१ ॥

अर्थ-हरड, करंजुआ, सरसों, दारुहलदी, लालचन्दन, सेंधव, वायविडंग, इन सबको चूर्णकर गोमूत्रके साथ लेपन करनेसे कोढ दूर होतेहैं ॥ २१ ॥

एलांकुष्ठविडंगानिशताह्वाचित्रकोवला ।
दंतीरसांजनंचेतिलेपः कुष्ठविनाशनः ॥ २२ ॥

अर्थ-बडी इलायची, कूठ, वायविडंग, सौंफ, चित्रक, खरेंटी, दन्ती, रसौत इनका लेप करनेसे कुष्ठ दूर होताहै २२॥

अर्थ-हलदी मूर्वा अमलतास काकमाची देवदारु चकवडेके बीज इनको मट्ठेके साथ पीस कडवा तेल मिलाकर लेपकरनेसे पामा दद्रुरोग दूर होताहै ॥ ३४ ॥

व्योषंमूलकबीजानिप्रपुन्नाटफलानिच।
एतान्यम्लप्रतिष्ठानिकुष्ठेपूद्वर्त्तनंपरम् ॥ ३५ ॥

अर्थ-सोंठ मिरच पीपल मूलीके बीज चकवडेके फूल यह कांजीके साथ कुष्ठरोगमें लेपकरनेसे परम आरोग्यता करते हैं ॥ ३५ ॥

सिध्मानांकिटिभानांचदद्रूणांचविशेषतः।
अर्कपत्ररसेपक्वंरजनीकल्कसंयुतम् ॥
कटुतैलंहरेत्तूर्णंमासात्कच्छूंविचर्चिकाम् ॥ ३६ ॥

अर्थ-सिध्म किटिभ और दादरोगमें विशेषकर आकके पत्रके रसमें हल्दीका कल्ककर कडवे तेलमें पकाले लेप करनेसे एक महीनेमें कच्छू और विचर्चिकारोग दूर होता है ॥ ३६ ॥

गुंजाचित्रकशंखभस्मरजनीदूर्वाभयालांगली-
स्नुक्सिन्धूत्थकुमारिकाजलधरार्कक्षीरधूमैर्शजः ॥
दद्रूभेडगजाविडंगमरिचक्षौद्रैश्चखारीयुतं-
गोमूत्रंगजचर्मदद्रुरकसाकण्डूप्रमुद्वर्त्तनम् ॥ ३७ ॥

अर्थ-चौंटली चीता शंखकी भस्म हलदी दूर्वा हरड कलिहारी सैहुंड संधानोंन यही इलायची घीगुवार या(मालती)नागरमोथा आकका दूध चकवड (चक्रमर्दक) या (दादमर्दक) वायविडंग कालीमिर्च शहद खारीनोंन

एषांत्वचःसमाश्छायाशुष्काःकृत्वाततोभिषक् ।
तैलंपातालयंत्रेणनिष्कास्यप्रत्यहंतुतत् ॥ २९ ॥

अर्थ-इनकी छाल लेकर छायामें सुखावै और इनका पातालयन्त्रसे तेल निकाल ले ॥ २९ ॥

खादेन्मापमितंकुष्टीमंडलादिव्यकायवान् ।
शुद्धसूतसमोगंधोमृतायस्ताम्रगुग्गुलुः ॥ १३० ॥
त्रिफलाचमहानिंवश्चित्रकश्चशिलाजतु ।
इत्येतच्चूर्णितंकुर्यात्प्रत्येकंपलसंमितम् ॥ ३१ ॥
चतुःषष्टिकरंजस्यवीजचूर्णफलानिवै ।
तावदेयंमृतंताम्रंमध्वाज्याभ्यांविलोडयेत् ॥ ३२ ॥
स्निग्धभांडेस्थितंखादेद्विनिष्कंसर्वकुष्ठनुत् ।
रसःकुष्ठकुठारोऽयंगलत्कुष्ठनिवारणः ॥ ३३ ॥

अर्थ-कुष्ठी मापभर इसको खाय तो मण्डलकुष्ठ दूर होकर दिव्यकाया होजातीहै। पारेकी भस्म गंधक लोह-भस्म ताम्रभस्म गूगल हरड बहेडा आमला बकायनकी छाल चीतेकी छाल शिलाजीत यह ग्यारह औषध सोलह २ शाण ले करंजेके बीज ६४ शाण सबका बारीक चूर्णकर अभ्रककी भस्म ६४ शाण लेकर चूर्णमें मिलादेवै, यह कुष्ठ कुठार रस, गलित कुष्ठको दूर करता है ॥ १३०-३३ ॥

अथ कच्छुसिध्मपामादद्रूदारितचर्मादयः।

निशासुधारग्वधकाकमाचीपत्रैःसदार्वीप्रपुनाटवीजैः ॥
तक्रेणपिष्टैःकटुतैलमिश्रैःपामादिपद्रूदर्त्तनमेतादिष्टम् ३४॥

अर्थ-हलदी मूर्वा अमलतास काकमाची देवदारु चक-
वडेके बीज इनको मट्ठेके साथ पीस कडवा तेल मिलाकर
लेपकरनेसे पामा दद्रुरोग दूर होताहै ॥ ३४ ॥

व्योपंमूलकवीजानिप्रपुन्नाटफलानिच ।
एतान्यम्लप्रतिष्ठानिकुष्ठेपूद्वर्त्तनंपरम् ॥ ३५ ॥

अर्थ-सोंठ मिरच पीपल मूलीके बीज चकवडेके फूल
यह कांजीके साथ कुष्ठरोगमें लेपकरनेसे परम आरोग्यता
करते हैं ॥ ३५ ॥

सिध्मानांकिटिभानांचदद्रूणांचविशेषतः ।
अर्कपत्ररसेपक्वंरजनीकल्कसंयुतम् ॥
कटुतैलंहरेत्तूर्णमासात्कच्छूंविचर्चिकाम् ॥ ३६ ॥

अर्थ-सिध्म किटिभ और दादरोगमें विशेषकर आकके
पत्रके रसमें हल्दीका कल्ककर कडवे तेलमें पकाले लेप
करनेसे एक महीनेमें कच्छू और विचर्चिकारोग दूर होता
है ॥ ३६ ॥

गुंजाचित्रकशंखभस्मरजनीदूर्वाभयालांगली-
स्नुक्सिन्धूत्थकुमारिकाजलधरार्कक्षीरधूमैःशजैः ॥
दद्रूघ्नेडगजाविडंगमरिचक्षौद्रैश्चखारीयुत-
गोमूत्रेगंजचर्मदद्रुरकसाकण्डूप्रमुद्वर्त्तनम् ॥ ३७ ॥

अर्थ-चौंटली चीता शंखकी भस्म हलदी दूर्वा हरड
कलिहारी सेहुंड सेंधानोंन यही इलायची घीकुवार या(मा-
लती)नागरमोथा आकका दूध चकवड (चक्रमर्दक) या
(दादमर्दक) वायविडंग कालीमिर्च शहद खारीनोंन

एषांत्वचःसमाश्छायाशुष्काःकृत्वाततोभिषक् ।
तैलंपातालयंत्रेणनिष्कास्यप्रत्यहंतुतत् ॥ २९ ॥

अर्थ-इनकी छाल लेकर छायामें सुखावे और इनका पातालयन्त्रसे तेल निकाल ले ॥ २९ ॥

खादेन्मापमितंकुष्ठीमंडलादिव्यकायवान् ।
शुद्धसूतसमोगंधोमृतायस्ताम्रगुग्गुलुः ॥ १३० ॥
त्रिफलाचमहानिंवश्चित्रकश्चशिलाजतु ।
इत्येतच्चूर्णितंकुर्यात्प्रत्येकंपलसंमितम् ॥ ३१ ॥
चतुःपष्टिकरंजस्यवीजचूर्णफलानिवै ।
तावदेयंमृतंताम्रंमध्वाज्याभ्यांविलोडयेत् ॥ ३२ ॥
स्निग्धभांडेस्थितंखादेद्विनिष्कंसर्वकुष्ठनुत् ।
रसःकुष्ठकुठारोऽयंगलत्कुष्ठनिवारणः ॥ ३३ ॥

अर्थ-कुष्ठी मापभर इसको खाय तो मण्डलकुष्ठ दूर होकर दिव्यकाया होजातीहै। पारेकी भस्म गंधक लोह-भस्म ताम्रभस्म गूगल हरड वहेडा आमला बकायनकी छाल चीतेकी छाल शिलाजीत यह ग्यारह औषध सोलह २ शाण ले करंजेके बीज ६४ शाण सबका बारीक चूर्णकर अभ्रककी भस्म ६४ शाण लेकर चूर्णमें मिलादेवै, यह कुष्ठ कुठार रस, गलित कुष्ठको दूर करता है ॥ १३०-३३ ॥

अथ कच्छुसिध्मपामादद्रूहस्तिचर्मादयः।

निशासुधारग्वधकाकमाचीपत्रैःसदार्वीप्रपुनाटबीजैः ॥
तक्रेणपिष्टैःकटुतैलमिश्रैःपामादिपूद्वर्त्तनमेतदिष्टम् ॥३४॥

अर्थ-हलदी मूर्वा अमलतास काकमाची देवदारु चकवड़के बीज इनको मट्ठेके साथ पीस कडवा तेल मिलाकर लेपकरनेसे पामा दद्रुरोग दूर होताहै ॥ ३४ ॥

व्योपंमूलकबीजानिप्रपुन्नाटफलानिच ।
एतान्यम्लप्रतिष्ठानिकुष्ठेपूद्वर्त्तनंपरम् ॥ ३५ ॥

अर्थ-सोंठ मिरच पीपल मूलीके बीज चकवडेके फूल यह कांजीके साथ कुष्ठरोगमें लेपकरनेसे परम आरोग्यता करते हैं ॥ ३५ ॥

सिध्मानांकिटिभानांचदद्रूणांचविशेपतः ।
अर्कपत्ररसेपक्वंरजनीकल्कसंयुतम् ॥
कटुतैलंहरेत्तूर्णमासात्कच्छूंविचर्चिकाम् ॥ ३६ ॥

अर्थ-सिध्म किटिभ और दादरोगमें विशेषकर आकके पत्रके रसमें हल्दीका कल्ककर कडवे तेलमें पकाले लेप करनेसे एक महीनेमें कच्छू और विचर्चिकारोग दूर होता है ॥ ३६ ॥

गुंजाचित्रकशंखभस्मरजनीदूर्वाभयालांगली-
स्नुक्सिन्धूत्थकुमारिकाजलधरार्कक्षीरधूमेशजैः ॥
दद्रूभेडगजाविडंगमरिचक्षौद्रैश्चखारीयुतै-
र्गोमूत्रेगजचर्मदद्रुरकसाकण्डूभमुद्वर्त्तनम् ॥ ३७ ॥

अर्थ-चोंटली चीता शंखकी भस्म हलदी दूर्वा हरड कलिहारी सेंहुंड सेंधानोन घडी इलायची घीकुवार था(मास्ती)नागरमोथा आकका दूध चकवड (चक्रमर्दक) था

शहद खारीनोन

एषांत्वचःसमाःछायाशुष्काःकृत्वाततोभिषक् ।
तैलंपातालयंत्रेणनिष्काम्यप्रत्यहंनुतत ॥ २९ ॥

अर्थ—इनकी छाल लेकर छायामें सुखावे और इनका पातालयन्त्रसे तेल निकाल ले ॥ २९ ॥

खादेन्मापमितंकुष्टीमंडलादिंव्यकायवान् ।
शुद्धसूतसमोगंधोमृतायस्ताम्रगुग्गुलुः ॥ १२० ॥
त्रिफलाचमहानिंबश्चित्रकश्चशिलाजतु ।
इत्येतच्चूर्णितंकुर्यात्प्रत्येकंपलसंमितम् ॥ २१ ॥
चतुःपष्टिकरंजस्यबीजचूर्णफलानिवै ।
तावदेयंमृतंताम्रंमध्वाज्याभ्यांविलोडयेत् ॥ २२ ॥
स्निग्धभांडेस्थितंखादेद्धिनिष्कंसर्वकुष्ठनुत् ।
रसःकुष्ठकुठारोऽयंगलत्कुष्ठनिवारणः ॥ २३ ॥

अर्थ—कुष्ठी मापभर इसको खाय तो मण्डलकुष्ठ दूर होकर दिव्यकाया होजातीहै। पारेकी भस्म गंधक लोह-भस्म ताम्रभस्म गूगल हरड बहेडा आमला बकायनकी छाल चीतेकी छाल शिलाजीत यह ग्यारह औषध सोलह २ शाण ले करंजेके बीज ६४ शाण सबका बारीक चूर्णकर अभ्रककी भस्म ६४ शाण लेकर चूर्णमें मिलादेवै, यह कुष्ठ कुठार रस, गलित कुष्ठको दूर करता है ॥ १२०—२३ ॥

अथ पाच्छुसिध्मपामादद्रूहस्तिचर्मादयः।

निशासुधारग्वधकाकमाचीपत्रैःसदार्वीप्रपुनाग्गीजैः ॥
तक्रेणपिष्टैःकटुतैलमिश्रैःपाम

दद्रु रक्त वातादि [illegible] गोमूत्रमें मिलाकर लगानेसे दा
ग्रंथि दद्रु [illegible] आदि रोगोंको दूर करताहै ॥ ३७ ॥

मृदूनिताम्रपत्राणितैलाद्यैःशोधितानिच।
तानिगुंजासिन्दूरचूर्णलिप्तानिकारयेत ॥ ३८॥
उपर्यधोनिधायाथरात्रमेकंभिषग्वरः।
तैलंताम्राद्द्विगुणितंनिंबूरसविमर्दितम् ॥ ३९॥
निश्चंद्रिकीकृतंतेनतानिपत्राणिलेपयेत्।
स्थापयित्वातानिवस्त्रैततस्तैर्नवेष्टयेत ॥ ४०॥

अर्थ–कोमल ताम्रपत्र तैलादिमें शोधन करे उनसे चौ
गुना संधा उनके ऊपर नीचे लगाकर एकरात्रितक रहनेदे
फिर ताम्रसे दूने तेल और नींबूके रसमें उसे खरल करे
जबतक कि तेलकी बूंदोंकी चन्द्रिका न मिटे तबतक नींबू
और तेलको खरल करे जब चन्द्रका मिटजाय तब ता
म्रके पत्रपर उसे लपेटे फिर उसके ऊपर कपरौटी देकर
फिर यह तेल उसपर लेपन करे ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥

सप्तवारंतुमृच्छिन्नवस्त्रैःसंवेष्टयेत्ततः ।
विधायगोलकंशुष्कंपक्वंगजपुटेनतत् ॥ ४१ ॥
स्वांगशीतंसमुद्धृत्यगुंजाद्वयमितंनरः ।
सितयाशाणमितयाचतुःपिप्पलियुक्तया ॥ ४२ ॥
युक्तंसंभक्षयेत्प्रातःशाकाम्लरहिताशनः ।
मंडलंवातरक्तंचसभयंचोपदंशकम् ॥
दद्रूकंडूविसर्पंचनिश्चितंनाशयेद्द्रुतम् ॥ ४३ ॥
इतिश्रीगोस्वामिशिवानंदभट्टविरचितेवैद्यरत्नेतृतीयःप्रकाशः ३

अर्थ-वात पित्त कफ और रक्तसे चारप्रकारका नेत्राभिष्यन्द होता है अर्थात् नेत्र दुखने आतेहैं यह नेत्रोंका भयदायी घोर रोग कहा है ॥ ७ ॥

घृतभृष्टंजलपिष्टंवस्त्रानिबिष्टंतिरीटमपहरति ।
दार्वीक्काथपरिस्रुतमाश्च्योतनतोक्षिकोपगदान् ॥८॥

अर्थ-घीमें भून जलमें पीस वस्त्रमें छानकर लोध नेत्रोंपर लगानेसे सबप्रकारके रोग दूर करता है अथवा दारुहल्दीका क्राथकर आश्चोतन करनेसे आंखें अच्छी हों॥८॥

जात्याःपत्रैर्घृतेभृष्टैश्चक्षुष्यमुपनाहनम् ।
अथवानिंबपत्रैःस्यादुपनाहोक्षिरोगजित् ॥ ९ ॥

अर्थ-अथवा चमेलीके पत्ते घीमें भून नेत्रोंमें बूंद डाले अथवा नीमके पत्तोंका लेप करना नेत्ररोग दूर करता है९॥

यष्टीगैरिकसिन्धूत्थदार्वीतार्क्ष्यैःसमांशकैः ।
जलपिष्टैर्बहिर्लेपःसर्वनेत्ररुजापहः॥ १० ॥

अर्थ-अथवा मुलेठी गेरू सेंधानोंन दारुहलदी रसोत इनको बराबर ले जलमें पीस पलकोंपर लेपकरनेसे सबप्रकारका नेत्ररोग दूर होताहै ॥ १० ॥

जातारोगाविनश्यंतिनभवन्तिकदाचन ।
त्रिफलायाःकषायेणप्रातर्नयनधावनात् ॥ ११ ॥

अर्थ-सब रोग दूर होकर फिर कभी नहीं होते हैं अथवा त्रिफलेके काढेसे प्रातःकाल प्रतिदिन नेत्र धोवे ॥ ११ ॥

भुक्त्वापाणितलंघृष्ट्वाचक्षुषोर्यदिदीयते ।
अचिरेणतद्वारितिमिराणिव्यपोहति ॥ १२ ॥

---

१ पोटलीक्रियामें । नेत्रोंको उघाड़कर दो अंगुलके अन्तरसे नेत्रोंमें दूध घाद आदिकी बूंद डालनेको आश्च्योतन कहतेहैं ।

अर्थ-केशरको घृतसे भून उसमें कन्द मिलायकर नास देनेसे वातरक्तविकार भौं कान, नाक, आंखपीडा आधा शिशी दुपहरतक शिरका दर्दघटना फिर बढना आदि अनेकपीडा शान्त होतीहैं ॥ ३ ॥

कृष्णाब्दशुंठीमधुकशताह्वोत्पलनातकैः।
जलपिष्टैःशिरोलेपःसद्यःशूलनिवारणः ॥ ४ ॥

अर्थ-कालाजीरा नागरमोथा सोंठ मुलेठी सोंफ नील कमल असनपर्णी इनको जलमें पीस लेप करनेसे बहुत शीघ्र शिरकी पीडा दूर होती है ॥ ४ ॥

मधुकमधूकाविडंगैःसभृंगराजनागरैर्घृतंसिद्धम्।
षड्बिंदुनस्यदानादेतच्छीर्षामयंहन्ति ॥ ५ ॥

अर्थ-महुआ मुलैठी वायविडंग भृंगराज सोंठ इनको घृतमें सिद्धकर छः बूंद नासिकामें टपकानेसे शिररोग दूर होताहै ॥ ५ ॥

बृहतीफलरसपिष्टंगुंजायाःफलमथापिवामूलम्।
हेमनिघृष्टंलिप्तंव्यपनयतिमहेन्द्रलुप्ताख्यम् ॥
अर्द्धमूर्द्धव्यथाखिन्नःसितांशीतांबुनापिबेत् ॥ ६ ॥

अर्थ-कटेरीके फलोंका रस पीसकर उसमें चौंटलीके फल वा उसकी मूल पीसकर धतूरेके साथ पीसकर लेप करनेसे इन्द्रलुप्तरोग दूर होता है (जो शिरके बाल गिर जाते हैं वह इन्द्रलुप्त कहाता है) जो आधे शिरमें पीडा हो तो मिश्रीडाल शीतलजल पिये ॥ ६ ॥

अथ नेत्ररोगः।

वातात्पित्तात्कफाद्रक्तादभिष्यंदश्चतुर्विधः।
प्रायेणजायतेघोरःसर्वनेत्रामयाकरः ॥ ७ ॥

अर्थ-पीपली त्रिफला लाख लोध सैंधानमक इनको भांगरेके रसमें घिसकर गुटिका बनाय नेत्रोंमें लगावे तो अर्म तिमिर काच कंडू शुक्र फूला अर्जुन तथा अन्यभी नेत्रोंके रोगोंको यह अंजन दूर करता है इसमें संदेह नहीं है ॥ १६ ॥ १७ ॥

अथ कर्णरोगः।

करोतिविगुणोवायुर्मलंसंगृह्यकर्णयोः।
सकफःपाकवाधिर्यशूलस्रावाक्षिकान्गदान् ॥१८॥

अर्थ-कुपित हुई वायु कानमें प्राप्तहो कानोंका मल ग्रहण कर कफसे युक्त हो कर्णपाक बहरापन शूल स्राव तथा नेत्ररोगोंको करती है ॥ १८ ॥

अर्कस्यपत्रंपरिणामपीतमाज्येनलिप्तंशिखिनाचतप्तम्।
आपीड्यतोयंश्रवणेनिषिक्तंनिहंतिशूलंबहुवेदनंच ॥१९

अर्थ-जो जडकी ओरसे पीले होगये हो ऐसे आकके पत्तोंपर घी लगाकर आगके ऊपर सेके फिर इनको मसलकर वह अर्क कानमें डालनेसे कानका शूल और वेदना नष्ट होतीहै ॥ १९ ॥

हिंगुतुम्बुरुशुंठीभिःसिद्धंतैलंतुसार्षपम्।
कर्णशूलेप्रणादेचबाधिर्येपिहितंमतम् ॥ २० ॥

अर्थ-हिंग, तुम्बर, सोंठ इनके साथ सरसोंका तेल सिद्धकर कानमें डालनेसे कानकी पीडा दूर होती है२०॥

समुद्रफेनचूर्णंतुन्यस्तंश्रवसिसस्रवे।
पूयस्रावंव्रणंसार्द्रंहन्तिध्वांतमिवांशुमान् ॥ २१ ॥

अर्थ-यदि कानसे राध बहती हो तो समुद्रफेनका चूर्णकर कानमें डाले इससे कानका पकना और बहना ऐसे दूर होता है जैसे सूर्य अंधकारको दूर करता है ॥ २१ ॥

अर्थ-अथवा भोजनकरके नेत्रोंको हथेलीसे अच्छीतरह
प्रतिदिन मलनेसे वह जल बहुत शीघ्र तिमिररोगको दूर
करता है आचमन कर हथेली घिसके नेत्रोंपर धरे ॥ ११॥

विगतघननिशीथेप्रातरुत्थायनित्यं
पिबतिखलुनरोयोघ्राणरंध्रेणवारि ।
सभवतिमतिपूर्णश्चक्षुषाताक्ष्र्यतुल्यो
वलिपलितविहीनःसर्वरोगैर्विमुक्तः ॥ १२ ॥

अर्थ-जो जब अर्द्धरात्रिके समय बादल नहीं तब जो
मनुष्य प्रतिदिन प्रातःकाल उठकर नासिकाके द्वारसे जल
पीताहै उसके नेत्र गरुडकी समान तीक्ष्ण होते हैं बुद्धि बढती
है वलि और बालोंका पकना यह सब रोग दूर होते हैं ॥१३॥

यस्त्रैफलंचूर्णमपथ्यवर्ज्जीसायंसमश्नातिसमाक्षिकाज्यम्।
समुच्यतेनेत्रगतैर्विकारैर्भृत्यैर्यथाक्षीणधनोमनुष्यः॥१४॥

अर्थ-जो अपथ्यको त्यागकर संध्यासमय घृत और शह-
दके साथ त्रिफलेको खाता है उसके सब नेत्रविकार ऐसे छूट
जाते हैं जैसे क्षीण धनवाले मनुष्यको नौकर छोड जाते हैं १४

वटक्षीरेणसंयुक्तंश्लक्ष्णंकर्पूरजंरजः ।
क्षिप्रमंजनतोहन्तिशुक्रंवापिघनोन्नतम्॥ १५ ॥

अर्थ-वडके दूधके साथ कपूरको घिसकर नेत्रमें लगानेसे
कठिन शुक्ररोग दूर होता है ॥ १५ ॥

पिप्पलीत्रिफलालाक्षालोध्रंसैन्धवसंयुतम् ।
भृंगराजरसेघृष्टंगुटिकांजनमिष्यते ॥ १६ ॥
अर्मसतिमिरंकाचंकंडूंशुक्रंतथार्जुनम् ।
अंजनंनेत्रजान्रोगान्निहंत्येतन्नसंशयः

अर्थ-पाठा दोनों हल्दी मूर्वा पीपल जाईके पत्ते दन्तीमूल, इनसे तेल तयारकर पके पीनसमें नास देनेसे पीनसरोग दूर होता है ॥ २६ ॥

नासाशोपेक्षीरपानंससितंचप्रशस्यते ।
सवचंचूर्णमाघ्रायवाससापोटलीकृतम् ॥
कारवीवस्त्रबद्धावाप्रतिश्यायमपोहति ॥ २७ ॥

अर्थ-नासाके शोषमें मिश्री डालकर क्षीरपान करे अथवा वचका चूर्णकर कपडेकी पोटलीमें रख सूंघे अथवा करोंजी कपडेमें बांध सूंघनेसे जुखाम दूर होता है ॥ २७ ॥

अथ मुखरोगः ।

सरक्तःकुपितःश्लेष्माकरोत्यास्यगदान्बहून् ।
दौर्गंध्यपिडकापाकजिह्वादोषान्समासतः ॥ २८ ॥

अर्थ-रक्तसहित श्लेष्मा कुपित होकर मुखमें अनेक प्रकारके रोग उत्पन्न करता है जैसे दुर्गंध, पिडिका, मुखपाक जिह्वारोग यह संक्षेपसे कहे हैं ॥ २८ ॥

मुखरोगेपुसर्वेपुक्षिपेन्मूलंपुनर्नवा ।
तस्यमूलप्रपातेनमुखरोगःप्रशाम्यति ॥ २९ ॥

अर्थ-सब प्रकारके मुखरोगोंमें पुनर्नवाकी जड मुखमें डालनी चाहिये इसके डालनेसे मुखरोग शान्त होते हैं ॥ २९ ॥

जातीपत्रामृताद्राक्षादेवदारुफलत्रिकैः ।
क्वाथःक्षौद्रयुतःशीतोगण्डूषोमुखपाकजित् ॥ ३० ॥

अर्थ-जाईके पत्ते, गिलोय, दाख, देवदारु, त्रिफला इनका काढाकर शहदके साथ ठंडाकर पिवे तो मुख पकना बंद हो ॥ ३० ॥

सूर्यावर्त्तकरसंरसंवार्सिंदुवारजम् ।
लांगलीमूलतोयंवात्र्यूषणंवापिचूर्णितम् ॥२२॥
एतेयोगास्तुचत्वारःपूरणात्क्रिमिकर्णके ॥
कृमीन्निर्मूलयंत्याशुशतपद्यस्रपादिकान् ॥२३॥

अर्थ-सूर्यआवर्तमें आकका रस या सिन्धुवारका रस या कलिहारीकी जडका रस या त्रिकुटा पीसकर यह चार प्रयोग कानोंमें कृमि पडजाँय तो करना चाहिये यह बहुत शीघ्र कानोंके कीडे निर्मूल करता है तथा शतपदी अस्र पादिको दूर करता है ॥ २२ ॥ २३ ॥

अथ नासारोगः।

अर्शासिपीनसस्रावःक्वचिच्छोणितपूययोः ।
रोगानासोद्भवास्तेपांक्षयोनस्यादिभिर्भवेत् ॥२४॥

अर्थ-अर्श पीनस राद्का निकलना तथा रुधिरका निकलना यह नासारोग हैं नस्यादि देनेसे यह रोग नाशको प्राप्त होते हैं ॥ २४ ॥

गुडमरिचविमिश्रंपीतमाशुप्रकामं
हरतिदधिनराणांपीनसंदुर्निवारम् ।
यदितुसघृतमन्नंश्लक्ष्णगोधूमचूर्णैः
कृतमुपहरतेसौतत्कुतोस्यावकाशः ॥ २५ ॥

अर्थ-गुड और कालीमिरच मिलाकर दही पीनेसे महाकठिन पीनसरोग दूर होता है और यदि घृतसहित गेहूंका चूर्ण प्रतिदिन सेवन किया जाय तो यह किसी प्रकार नहीं ठहर सकती ॥ २५ ॥

पाठाद्विरजनीमूर्व्वापिप्पलीजातिपल्लवैः ।
[illegible] ॥ २६ ॥
दंत्याय [illegible]

अर्थ-पाठा दोनों हल्दी मूर्वा पीपल जाईके पत्ते दन्तीमूल, इनसे तेल तयारकर पके पीनसमें नास देनेसे पीनसरोग दूर होता है ॥ २६ ॥

नासाशोपेक्षीरपानंससितंचप्रशस्यते ।
सवचंचूर्णमाघ्रायवाससापोटलीकृतम् ॥
कारवीवस्त्रबद्धावाप्रतिश्यायमपोहति ॥ २७ ॥

अर्थ-नासाके शोपमें मिश्री डालकर क्षीरपान करे अथवा वचका चूर्णकर कपडेकी पोटलीमें रख सूंघे अथवा करोंजी कपडेमें बांध सूंघनेसे जुखाम दूर होता है ॥ २७ ॥

अथ मुखरोगः ।

सरक्तःकुपितःश्लेष्माकरोत्यास्यगदान्बहून् ।
दौर्गंध्यपिडकापाकजिह्वादोपान्समासतः ॥ २८ ॥

अर्थ-रक्तसहित श्लेष्मा कुपित होकर मुखमें अनेक प्रकारके रोग उत्पन्न करता है जैसे दुर्गंध, पिडिका, मुखपाक जिह्वारोग यह संक्षेपसे कहे हैं ॥ २८ ॥

मुखरोगेषुसर्वेषुक्षिपेन्मूलंपुनर्नवा ।
तस्यमूलप्रपातेनमुखरोगःप्रशाम्यति ॥ २९ ॥

अर्थ-सब प्रकारके मुखरोगोंमें पुनर्नवाकी जड मुखमें डालनी चाहिये इसके डालनेसे मुखरोग शान्त होते हैं ॥ २९ ॥

जातीपत्रामृताद्राक्षादेवदारुफलत्रिकैः ।
क्वाथःक्षौद्रयुतःशीतोगण्डूषोमुखपाकजित् ॥ ३० ॥

अर्थ-जाईके पत्ते, गिलोय, दाख, देवदारु, त्रिफला इनका काढाकर शहदके साथ ठंडाकर दिये तो मुख पकना बंद हो ॥ ३० ॥

सूर्यावर्त्तकरसंरसंवासिंदुवारजम् ।
लांगलीमूलतोयंवाञ्यूषणंवापिचूर्णितम् ॥२२॥
एतेयोगास्तुचत्वारःपूरणात्कृमिकर्णके ॥
कृमीन्निर्मूलयंत्याशुशतपद्यस्रपादिकान् ॥२३॥

अर्थ-सूर्यआयर्तमें आकका रस वा सिन्धुवारका रस वा कलिहारीकी जडका रस वा त्रिकुटा पीसकर यह चार प्रयोग कानोंमें कृमि पडजाँय तो करना चाहिये यह बहुत शीघ्र कानोंके कीडे निर्मूल करता है तथा शतपदी अस्र पादिको दूर करता है ॥ २२ ॥ २३ ॥

अथ नासारोगः ।

अर्शांसिपीनसस्रावःक्वचिच्छोणितपूययोः ।
रोगानासोद्भवास्तेपांक्षयेनस्यादिभिर्भवेत् ॥२४॥

अर्थ-अर्श पीनस रादका निकलना तथा रुधिरका निकलना यह नासारोग हैं नस्यादि देनेसे यह रोग नाशको प्राप्त होते हैं ॥ २४ ॥

गुडमरिचविमिश्रंपीतमाशुप्रकामं
हरतिदधिनराणांपीनसंदुर्निवारम् ।
यदितुसघृतमन्नंश्लक्ष्णगोधूमचूर्णैः
कृतमुपहरतेसौतत्कुतोस्यावकाशः ॥ २५ ॥

अर्थ-गुड और कालीमिरच मिलाकर दही पीनेसे महाकठिन पीनसरोग दूर होता है और यदि घृतसहित गेहूंका चूर्ण प्रतिदिन सेवन किया जाय तो यह किसी प्रकार नहीं ठहर सकती ॥ २५ ॥

[illegible] लीज [illegible] ।
दंत्याय [illegible] ॥ २६ ॥

अर्थ-पाठा दोनों हल्दी मूर्वा पीपल जाईके पत्ते दन्तीमूल, इनसे तेल तयारकर पके पीनसमें नास देनेसे पीनसरोग दूर होता है ॥ २६॥

नासाशोषेक्षीरपानंससितंचप्रशस्यते ।
सवचंचूर्णमाघ्रायवाससापोटलीकृतम् ॥
कारवीवस्त्रबद्धावाप्रतिश्यायमपोहति ॥ २७ ॥

अर्थ--नासाके शोषमें मिश्री डालकर क्षीरपान करे अथवा वचका चूर्णकर कपडेकी पोटलीमें रख सूंघे अथवा करोंजी कपडेमें बांध सूंघनेसे जुखाम दूर होता है॥ २७॥

अथ मुखरोगः ।

सरक्तःकुपितःश्लेष्माकरोत्यास्यगदान्बहून् ।
दौर्गंध्यपिडकापाकजिह्वादोषान्समासतः ॥ २८॥

अर्थ-रक्तसहित श्लेष्मा कुपित होकर मुखमें अनेक प्रकारके रोग उत्पन्न करता है जैसे दुर्गंध, पिडिका, मुखपाक जिह्वारोग यह संक्षेपसे कहे हैं ॥ २८ ॥

मुखरोगेषुसर्वेषुक्षिपेन्मूलंपुनर्नवा ।
तस्यमूलप्रपातेनमुखरोगःप्रशाम्यति ॥ २९ ॥

अर्थ-सब प्रकारके मुखरोगोंमें पुनर्नवाकी जड मुखमें डालनी चाहिये इसके डालनेसे मुखरोग शान्त होते हैं ॥ २९ ॥

जातीपत्रामृताद्राक्षादेववदारुफलत्रिकैः ।
[illegible]ःक्षौद्रयुतःशीतोगण्डूषोमुखपाकजित् ॥ ३० ॥

[illegible]ईके पत्ते, गिलोय, दाख, देवदारु, त्रिफला
[illegible] शहदके साथ ठंडाकर पिये तो मुख
[illegible]३० ॥

कांचनारत्वचःक्वाथःप्रातर्गंडूषकेधृतः ।
जिह्वादारणकंहन्तिस्फोटानपिरुजाकरान् ॥३१॥

अर्थ—श्वेतकचनारकी छालका काढा कर प्रातःकाल ठंढाकर कुल्ला करे तो जिह्वाका फटना फुनसी छाले जो मुखमें होवें सब दूर होते हैं ॥ ३१ ॥

एलामधूच्छिष्टगुडेनपक्वंतैलंघृतंवाविनिहन्तिलेपात् ।
त्वग्भेदपारुष्यरुजोऽधरस्यपूयास्रसंस्रावमपिप्रसह्य ३२

अर्थ—इलायची मोम यह गुडमें पकाकर तेल वा घृत मिलाकर लेपकरनेसे होंठोंका फटना पीडा राधका निकलना रुधिरका निकलनाआदिरोग दूर होते हैं ॥ ३२ ॥

भद्रमुस्ताभयाव्योपविडंगारिष्टपल्लवैः ।
गोमूत्रपिष्टांगुटिकांछायाशुष्कांप्रलेपयेत् ॥ ३३ ॥

अर्थ—और नागरमोथा, हरड, त्रिकुटा वायविडंग, नीमके पत्ते इनको गोमूत्रसे पीस वटीकर छायामें सुखाले ३३

तांनिधायसुखेसुप्याच्चलदंतातुरोनरः ।
नातःपरतरंकिञ्चिच्चलदंतस्यभेषजम् ॥ ३४ ॥

अर्थ—दांत हिलनेमें और दांतोंकी पीडामें इसको मुख में डाले और सोरहे इससे अधिक दांत हिलनेकी पीडा दूर करनेवाली कोई औषधी नहीं है ॥ ३४ ॥

जातीपत्रपुनर्नवागजकणाकोरंगकुष्ठंवचा-
शुंठीदीप्यहरीतकीसमकृतंचूर्णंमुखेधारितम् ।
वातघ्नंकृमिदन्तशूलशमनंदुर्गंधिदोषापहं
शौ[illegible] ३५

अर्थ-जाईके पत्ते पुनर्नवा गजपीपल छोटी इलायची कूठ वच सोंठ अजवायन हरड इनको समान भाग ले चूर्ण कर मुखमें रखनेसे वात, कृमि, दन्तशूल, दुर्गन्धिदोष, शिथिलता, अर्थात् दांतोंका हिलना आदिरोग दूर होते हैं तथा जाईके बीजभी दांतोंको दृढ करतेहैं ॥ ३५ ॥

कृष्णजीरककुष्टेन्द्रयवचर्पणतस्त्र्यहात् ।
मुखपाकव्रणक्लेददौर्गंध्यमुपशाम्यति ॥ ३६ ॥

अर्थ-पीपल जीरा कूठ इन्द्रजौ इनके चबानेसे तीन दिनके मुखपाक मुखव्रण मुखका चिकटापन और दुर्गन्ध यह सब दूर होता है ॥ ३६ ॥

तेजोवतींदारुनिशांसकृष्णां
यवाग्रजंतार्क्ष्यगिरिंचपाठाम् ।
क्षौद्रेणकुर्याद्गुटिकां मुखेन
तांधारयेत्सर्वगलामयघ्नीम् ॥ ३७ ॥

अर्थ-गजपीपल, दारुहलदी, हलदी, पीपली, जवाखार, रसौत, पाठा इनको पीस शहद मिलाकर गुटिका मुखमें रखनेसे, सम्पूर्ण गलेके रोग दूर होतेहैं ॥ ३७ ॥

तांबूलमध्यस्थितचूर्णकेनदग्धंमुखंयस्यभवेत्कथंचित ।
तैलेनगंडूपमसौविदध्यादाम्लारनालेनपुनःपुनर्वा॥३८

अर्थ-जिसका मुख ताम्बूलमें चूना अधिक लगनेसे फटगयाहो यह तेलसे कुल्ला करे अथवा इम्ली सिरकेसे ॥ ३८ ॥

अथ स्त्रीरोगाः । तत्रादौ कुसुमजननविधिः ।

सगुडःश्यामतिलानांक्राथःपीतःसुशीतलोनार्याः ।
जनयतिकुसुमंसहसागतमपिसुचिरंनिरातंकम् ॥ ३९ ॥

अर्थ–अब स्त्रीरोग कहते हैं यदि स्त्री रजोवती न होती हो तो गुडके साथ काले तिलोंका काढा कर ठंडा करके पिये तो बहुतकालसे रजोवती न होनेवाली स्त्रीभी रजोवती होय ॥ ३९ ॥

अथ गर्भस्थितिः ।

त स्यमातुलुंगस्यबीजानिसकलानितु ।
ऋत्वंतेदुग्धपिष्टानिपीत्वाप्नोत्यबलासुतम् ४०॥

अर्थ–अब गर्भस्थिति कहते हैं विजौरे नींबूके बीज दूधमें पीसकर ऋतुके अनन्तर चौथेदिन पीनेसे स्त्रीके गर्भकी स्थिति होती है ॥ ४० ॥

नागकेशरमेकंतुपिष्ट्वाक्षीरेणयाबला ।
पिबेत्सासुतमाप्नोतिऋत्वंतेचिरजीविनम् ॥ ४१ ॥

अर्थ–एक नागकेशरही अतिबलाके संग पीसकर दूधके साथ ऋतुके अन्तमें पीनेसे स्त्री चिरजीवी पुत्रको प्राप्त होतीहै इसमें संदेह नहीं ॥ ४१ ॥

पुष्योद्धृतंलक्ष्मणायामूलंपिष्टंचकन्यया ।
ऋत्वंतेघृतदुग्धाभ्यांपीत्वाप्नोत्यबलासुतम् ॥४२॥

अर्थ–पुष्यनक्षत्रपर लक्ष्मणा ([illegible] कटेरी)
के मूल कन्याके हाथसे उ[illegible]
तुके अन्तमेंभी घी और दू[illegible]
त होतीहै ॥ ४२ ॥

क्वाथेनहय[illegible]
प्रातःस्ना[illegible]

अर्थ-असगंधके काढेके साथ गायका दूध औटाकर उसमें घी डाल ऋतु स्नानकर चौथे दिन स्त्री पानकरै तौ गर्भ धारण करती है इसमें सन्देह नहीं है ॥ ४३ ॥

शिवलिंगीफलमेकमृत्वंतेयाबलागिलति ।
वंध्यापिपुत्ररत्नंलभेतसानात्रसंदेहः ॥ ४४ ॥

अर्थ-जो स्त्री ऋतुके अन्तमें एक शिवलिंगीके फलको निगलले वह वंध्याभी पुत्रको उत्पन्न करै इसमें संदेह नहीं ॥ ४४ ॥

अथ गर्भसंरक्षणम्।

पतंतंस्तंभेयद्गर्भंकुलालकरमृत्तिका ।
कंकतीमूलमाबद्धंकुमारीसूत्रकेर्दृढम् ॥ ४५ ॥

अर्थ-जो कुम्हार बर्तन बनातेसमय हाथ पोंछता जाता है उस मट्टीको पीनेसे गिरता हुआ गर्भ थम जाता है ॥ ४५ ॥

कटिदेशेनितंविन्यागर्भःस्तंभयतिध्रुवम् ।
कुशकाशोरुबूकाणांमूलैर्गोक्षुरकस्यच ॥
शृतंदुग्धंसितायुक्तंगर्भिण्याःशूलनुत्परम् ॥ ४६ ॥

अर्थ-खरेंटीकी जड़ क्वारी कन्याके कते सूतसे कमरमें बांधनेसे गिरताहुआ गर्भ थम जाता है कुश काश लाल एरण्डकी जड़ और गोखरू यह दूधमें औटाकर मिश्री डालकर पिये तौ गर्भिणीकी पीडा दूर हो ॥ ४६ ॥

ह्रीबेरारलुरक्तचंदनबलाधान्याकवत्सादनी-
मुस्तोशीरयवासपर्पटविषाक्वार्थपिबेद्गर्भिणी ।
नानाव्याधियुतातिसारगदकेत्वस्रस्रुतौवाज्वरे
योगोयंमुनिभिःपुरानिगदितःशूलामयेप्युत्तमः ॥ ४७ ॥

अर्थ—ह्रीबेर सोनापाठा लाल चन्दन धरियारा धनिया गिलोय नागरमोथा खस जवासा पित्तपापडा और अतीस इनका काढा गर्भिणी पिये तो अनेक रंगकी पीडासहित अतिसार तथा रक्तप्रवाह ज्वर और सूतिकारोग नाश करनेमें यह उत्तम प्रयोग है ॥ ४७ ॥

अथ सुखप्रसवौषधम् ।

मातुलुंगस्यमूलानिमधुकंमधुसंयुतम् ।
घृतेनसहपातव्यंसुखंनारीप्रसूयते ॥ ४८ ॥

अर्थ—बिजौरेकी जड मुलैठीका चूरन शहद घीके साथ पियावे तो स्त्री सुखसे प्रसूति होगी ॥ ४८ ॥

गुंजामूलस्यखंडानिसप्तसप्तदलानिच ।
खंडितानिकटिस्थानिसुप्रसूतिंप्रकुर्वते ॥ ४९ ॥

अर्थ—चौंटलीकी जडके साथ सात टुकडे और सात पत्ते कमरमें बांधनेसे स्त्री सुखसे प्रसववती होगी ॥ ४९ ॥

बाणपुंखजटाबाथविशल्यंकुरुतेंगनाम् ।
कलापक्षार्कऋतुदिङ्मन्वष्टाष्टादशांबुधीन् ॥ ५० ॥
विलिखेन्नवकोष्ठेषुत्रिंशाख्यंयंत्रमुत्तमम् ।
सुखंप्रसूयतेनारीदृष्ट्वावाचक्रवर्धनम् ॥ ५१ ॥

अर्थ—अथवा उभयतो तीसका यंत्र लिखकर मिट्टीके शरावमें रखकर धूपदेकर दिखावै तो स्त्री सुखसे प्रसूति होगी उसका क्रम यहहै कि क्रमसे नौ कोठोंमें नीचे लिखे पत्रके अनुसार भरै तीसका यंत्र होगा इसीका आधा करनेसे पन्द्रहका यंत्र होजाताहै इसे दिखावै वा चक्रवर्द्धनयंत्र लिखै ॥५०॥५१॥

४	१४	१२
१८	१०	२
८	६	१६

अथ अपरापालनविधिः।

कचवेष्टितयांगुल्याघृष्टेकंठेसुखंपतत्यपरा।
मूलेनलांगलक्याःसंलिप्तेपाणिपादेवा ॥ ५२ ॥

अर्थ-बालोंसे वेष्टन की हुई अंगुलीसे कंठमें घिसने अथवा कलिहारी की जडको पीस हाथ पैरोंमें लगानेसे गर्भ मुक्त होताहै ॥ ५२ ॥

अथ सूतिकारोगः।

अंगमर्दोज्वरःकंपःपिपासागुरुगात्रता।
शोथःशूलातिसारौचसूतिकारोगलक्षणम् ॥ ५३ ॥

अर्थ-अंगमर्द ज्वर कंप पिपासा शरीरका भारीपन शोथ शूल अतिसारका होना यह सूतिकारोगके लक्षण हैं॥५३॥

दशमूलीशृतंतोयंकवोष्णंपिप्पलीयुतम्।
पीतंतत्सूतिकारोगमुदग्रमपिकृंतति ॥ ५४ ॥

अर्थ--दशमूलका काढाकर उसमें पीपल डाल कुछ गरमकर पीनेसे बढा हुआभी सूतिकारोग शान्त हो जाताहै॥५४॥

नागरस्यपलान्यष्टौघृतस्यपलविंशतिः।
क्षीराढकेनसंयुक्तंखंडस्यार्द्धतुलांपचेत ॥ ५५ ॥

अर्थ-सोंठ आठ पल घी वीस पल दूध एक आढक २५६ तोले लेकर इसमें आधी तुला (२०० तोले) बूरा डालकर पकावे ॥ ५५ ॥

शताह्वाजीरकंव्योषंत्रिसुगंधियवानिका।
कारवीमसिचव्याग्निमुस्तानांचपलंपलम् ॥ ५६ ॥
शुद्धाभ्रकायसंयोज्यंत्रिपलंचपृथक्पृथक्।
स्वर्णतारंतलोयोज्यंयथाचाग्निबलंभवेत् ॥ ५७ ॥

लेहीभूतमिदंसिद्धंघृतभाण्डेनिधापयेत् ।
तद्यथाग्निबलंखादेत्सूतिकातुविशेषतः ॥ ५८ ॥
बल्यंवर्ण्यंतथायुष्यंवलीपलितनाशनम् ।
वयसःस्थापनंहृद्यंमन्दाग्निदीपनंपरम् ॥ ५९ ॥
आमवातप्रशमनंसौभाग्यकरमुत्तमम् ।
मक्कल्लशूलशमनंसूतिकारोगनाशनम् ॥ ६० ॥

अर्थ--सौंफ जीरा त्रिकुटा तज पत्रज इलायची अजवायन चिरोंजी निर्गुण्डी चव्य चीता नागरमोथा यह सब एकएक पल ले और शुद्ध अभ्रक ले यह पृथक् २ तीनतीन पल ले यह सब वस्तु उसमें डालदे और जब यह लेहीभूत अर्थात् चाटनेकी समान होजाय तब इसको घृतके पात्रमें रखले इसको सूतिका अपने अग्नि बलके अनुसार खाय तो बल वर्ण बढे आयुकी वृद्धि और वली तथा पलित रोगका नाश होताहै यह अवस्थाका स्थापन करनेवाला दिव्य हृदयको आनंद बल देनेवाला मन्दाग्निको दीप्ति करनेवाला आम वातका दूर करनेवाला सौभाग्य करनेवाला उत्तम मक्कल्लशूलशान्त करनेवाला और सूतिकारोगनाशकहै ५६–६०॥

आर्द्रहेमफलंपिष्ट्वाकटुतैलंचतुर्गुणम् ।
विपचेद्द्वटिकायुग्मंतत्तैलंहेमसुन्दरम् ॥
दुष्टप्रस्वेदशमनंसूतिकारोगनाशनम् ॥ ६१ ॥

अर्थ--गीले धतूरेके फल पीसकर उसमें चौगुना कडवा तेल डालकर पकावे इसप्रकार दोघडीमें यह हेमसुन्दर तेल बनजायगा यह दुष्ट प्रस्वेद (पसीने) का शान्त करने वाला तथा सूतिकारोगको दूर करताहै ॥ ६१ ॥

अथ दर्शाविवर्द्धनम् ।

शतावरीक्षीरपिष्टापीतास्तन्यविवर्द्धिनी ।
कवोष्णंकणयापीतंक्षीरंक्षीरविवर्द्धनम् ॥ ६२ ॥
विदारीकंदस्वरसंपिवेद्वास्तन्यवर्द्धनम् ।
सहारिद्रंकुमार्यास्तुमूलंपानीयपेपितम् ॥
स्तनरोगंहन्तिलेपात्किवाककोंटिकाजटा ॥ ६३

अर्थ-दूधके बढानेको शतावरीको दूधमें पीसकर पिये अथवा गरम दूधके साथ पीपलका चूर्ण पिये अथवा भुल भुलावर भुई कुम्हडा पिये अथवा विदारीकंदका स्वरस पिये हलदीके सहित घीकुवारकी जड पीस स्तनपर लेप करनेसे स्तनरोग दूर होतेहैं ककोंटक जटामांसीका लेप करे तो क्या कहना है ॥ ६२ ॥ ६३ ॥

अथ प्रदरः ।

अतिमार्गातिगमनप्रभूतसुरतादिभिः ।
प्रदरोजायतेस्त्रीणांयोनिरक्तस्रुतिःपृथुः ॥ ६४ ॥

अर्थ-अतिमार्गमें चलनेसे बहुत मैथुन करनेसे स्त्रियोंके प्रदररोग होताहै इसमें योनिमार्गसे रक्त बहताहै ॥ ६४ ॥

रक्तपूगीफलंमाजूफलंचैवरसांजनम् ।
धात्रीपुष्पंमोचरसंतंदुलामूलंगैरिके ॥ ६५ ॥
एतेषांसमभागानांपलार्द्धमितिचूर्णकम् ।
प्रदरार्तापिबेन्नारीप्रत्यहंतंदुलांबुना ॥ ६६ ॥

अर्थ-लालसुपारीफल माजूफल रसौत धायके फूल मोच- [illegible] गेरू इनको बराबर लेकर इनका चूर्ण

गतरे चावलके जलके साथ आधपल प्रतिदिन प्रदररोग वाली स्त्रीको पिलावे तो रोग शान्त हो ॥ ६५ ॥ ६६ ॥

[illegible] ।
[illegible] ॥ ६७ ॥

अर्थ-चौलाईकी जडको चावलोंके पानीके साथ पीस-कर उसमें रसोत और शहद डालकर पिवे तो प्रदर दूर हो ६७

पिष्टंतंडुलतोयेनकुशमूलंससारवम् ।
सरसांजनमापीयप्रदरंत्रिदिनाज्जयेत् ॥ ६८ ॥

अर्थ-चावलके धोवनके जलसे कुशाकी मूल पान कर नेसे तीन दिनमें प्रदररोग दूर हो ॥ ६८ ॥

जीरकप्रस्थमेकंतुक्षीरंद्व्याढकमेवच ।
प्रस्थार्द्धलोध्रगोघृतयोःपचेन्मंदेनवह्निना ॥ ६९ ॥
लेहीभूतेथशीतेत्रसिताप्रस्थंविनिक्षिपेत् ।
चातुर्जातकणाविश्वमजाजीमुस्तवालकम् ॥ ७० ॥
दाडिमंरसजंधान्यरजनीपटवासकम् ।
वंशजंचतवक्षीरीप्रत्येकंशुक्तिसंमितम् ॥ ७१ ॥
जीरकस्यावलेहोयंप्रदरापहरःपरः ।
ज्वरावल्यारुचिश्वासतृष्णादाहक्षयापहः ॥ ७२ ॥
भूम्यामलकमूलंतुपीतंतंडुलवारिणा ।
द्वित्रैरेवदिनैर्नार्याःप्रदरंदुस्तरंजयेत् ॥ ७३ ॥

अर्थ-जीरा सफेद १ प्रस्थ (१ सेर) दूध गायका २ आढक (८ सेर) आधे प्रस्थ गौका घी और लोध इसको मन्दाग्निसे पकावे जब यह गाढा हो जाय तब इसमें सेरभर

मिश्री डाले पीछे तज पत्रज इलायची नागकेशर पीपल सोंठ कालाजीरा नागरमोथा सुगन्धवाला दाडिमीका रस काकजंघा हलदी चिरोंजी अडूसा वंशलोचन तवाखीर यह प्रत्येक एकएक शुक्ति (४ तोले) ले यह जीरक अवलेह प्रदररोगका हरनेवालाहै ज्वर नैर्बल्य अरुचि श्वास तृष्णा दाह क्षयका दूर करनेवालाहै तथा भुईंआमलेकी जड चावलोंके धोवनकेसाथ पीनेसे दोतीन दिनमेंही प्रदररोग दूरहो जायगा ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥

तालीसगैरिकपीतेविडालपदमात्रकैः ।
शीतांबुनाचतुर्थेह्निवंध्यांस्त्रींकुरुतेभृशम् ॥ ७४ ॥

अर्थ--तालीसके पत्ते गेरू यह दोनों दो तोले शीतल जलके साथ चार दिन पीनेसे स्त्री बांझ होतीहै ॥ ७४ ॥

पालाशबीजमध्वाज्यलेपात्सामर्थ्ययोगतः ।
योनिमध्येऋतौगर्भनधत्तेस्त्रीकदाचन ॥ ७५ ॥

अर्थ-ढाकके बीज शहद घृत यह तीनों सम्भु ऋतुके समय स्त्री योनिमें रक्खे तो फिर कभी गर्भ न रहे ॥७५॥

धत्तूरमूलिकापुष्येगृहीताकटिसंस्थिता ।
गर्भनिवारयत्येवरंडाविश्यादियोपिताम् ॥ ७६ ॥

अर्थ-धतूरकी मूली पुष्यनक्षत्रपर लेकर कमरमें बांधनेसे रंडावेश्यादि स्त्रियोंका गर्भ निवारण होनाहै ॥७६॥

गुंजनस्यचबीजानितिलकाराविके अपि ।
गुडेनभुक्तमेनत्तुगर्भपातयतिध्रुवम् ॥ ७७ ॥

अर्थ-गाजरके बीज तिल चिरोंजी यह गुडके साथ खानेसे अवश्य गर्भका पात करताहै ॥ ७७ ॥

अथ स्तनदृढीकरणम्।

श्रीपर्णीरसकल्काभ्यांतिलंसिद्धंतिलोद्भवम्।
तत्तैलंतूलकेनैवस्तनस्योपरिदापयेत्।
पतितावुत्थितौस्यातामंगनायाःपयोधरौ ॥ ७८ ॥

अर्थ–बिजौरेके रस और कल्कके रसके संग इसमें तिलोंका तेल सिद्ध कर रूई उस तेलमें भिजोकर स्तनोंके ऊपर लगावे तो गिरेहुए स्तन उठिआतेहैं ॥ ७८ ॥

अथ योनिसंकोचीकरणम्।

भंगापोटलिकांदत्वाप्रहरंकाममंदिरे।
शतवारंप्रसूतापिपुनर्भवतिकन्यका॥ ७९ ॥

अर्थ–भंगकी पोटली बनाकर योनिमें एक प्रहरतक धरे तो सौवारकी प्रसूता स्त्रीकी योनि कन्याकी समान हो जाय ॥ ७९ ॥

मोचरससूक्ष्मचूर्णंक्षिप्तंयोनौस्थितंप्रहरम्।
शतवारप्रसूतायाअपियोनिःसूक्ष्मरंध्रास्यात्॥८०॥

अर्थ–मोचरसका चूर्णकर योनिमें प्रहरतक लगा रखनेसे सौवार प्रसूता हुई स्त्रीकी योनिभी संकुचित होजाती है ॥ ८० ॥

अथ योनिनिर्लोमीकरणम्।

कर्पूरभल्लातकशंखचूर्णक्षारोयवानीमजमोदकंच।
तैलंविपक्वंहरितालमिश्रंलोमानिनिर्मूलयतिक्षणेन॥८१॥

अर्थ–योनि निर्लोम करनेकी विधि कपूर भिलावा शंखका चूर्ण सज्जीखार अजवायन अजमोद इनको तेलमें पकाकर हरताल मिलाय सिद्ध करै तो क्षण मात्रमें लगानेसे लोम निर्मूल होजाते हैं ॥ ८१ ॥

अथ बालकरोगः।

त्रिविधः कथितो बालःक्षीरान्नोभयवर्त्तकः।
स्वास्थ्यंताभ्यामदुष्टाभ्यांदुष्टाभ्यांरोगसंभवः॥ ८२॥

अर्थ--बालक तीन प्रकारके होतेहैं एक तो केवल दूध पीनेवाले दूसरे दूध और अन्न खानेवाले तीसरे केवल अन्न खानेवाले जो अन्न और दूध शुद्ध हुए तो स्वस्थता होतीहै बालक निरोगी रहताहै और दूषित होनेसे रोगी होताहै ॥ ८२ ॥

भैषज्यंपूर्वमुद्दिष्टंमहतायज्ज्वरादिषु।
देयंतदेवबालेपिमात्राकिंतुकनीयसा॥ ८३ ॥

अर्थ-ज्वरादिकोंमें जो हमने पहले औषधी कही है वही देनी चाहिये परन्तु बालकोंको थोडी मात्राकी औषधी देनी ॥ ८३ ॥

विडंगाफलमात्रंतुजातमात्रस्यभेषजम्।
मासेमासेप्रयोक्तव्यंविडंगानांविवर्द्धनम् ॥८४॥

अर्थ-तुरतके उत्पन्न हुए बालकको विडंगके फलकी बराबर औषधी देनी चाहिये और जितनी जितनी महीनेकी अवस्था उसकी बढती जाय उतनीही मात्रा बढानी चाहिये अर्थात दूसरे महीनेमें दो बायविडङ्ग फलके बराबरदे ॥ ८४ ॥

अब्दादूर्ध्वंकुमाराणांदद्यात्कोलास्थिमात्रकम्।
क्षीरादस्यापथ्यंवान्यांक्षीरान्नादस्यचोभयोः ८५
सर्वनिवार्यंतेबालेनस्तन्यंवार्य्यंतेक्वचित।
नाभिपाकेनिशालोध्रप्रियंगुमधुकैःशृतम्
तैलमभ्यंजनेशस्तमेभिर्वाप्यवचूर्णनम् ॥८६ ॥

बालेयोनिरजातःस्तन्यंगृह्णातिनोतदातस्य ॥
सैन्धवधात्रीमधुघृतपथ्याकल्केनघर्षयेज्जिह्वाम् ८७
पीतंपीतंवमतियःस्तन्यंतन्मधुसर्पिषा ॥
द्विवार्त्ताकीफलरसंपंचकोलंचलेहयेत् ॥ ८८ ॥
सर्शद्रशर्करातिक्तालीढाबालज्वरंजयेत् ॥ ८९ ॥

अर्थ—एक वर्षकी अवस्थामे जिसकी अधिक अवस्था हो उसे बेरकी मींगीके परिमाण औषधि देनी चाहिये जो केवल दूध पीताहो तो इसकी धायकोभी औषधी देनी चाहिये बालकको दूधमें औषधीदे अन्न खाता हो तो अन्न हीके साथ औषधी दे पथ्यमें सर्ववस्तु वर्जितहैं परन्तु माताका दूध वर्जित नहीं है नाभिपकी होय तो हलदी लोध प्रियंगु मूरह इनसे सिद्ध किया तेल उसपर लगाना अथवा इनका चूरन बुरकाना चाहिये जो अल्प कालका उत्पन्न हुआ बालक माताका दूध न पीता होय उसकी जीभपर सैंधा धवईके फूल शहद घी और हरड पीसकर शनैः उंगलीसे लगावे जो बालक माताका दूध पीकर वारंवारवमन करे उसको भटकटैया और वनभाटेका रस पीपल पीपलामूल चव्य चित्रक और सोंठका चूरन शहद और घीके साथ चटावै शहद बूरा यह पाठ संग मिलाकर चाटनेसे वातज्वरको दूर करताहै ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥

शृंग्यब्दकृष्णातिविषांविचूर्ण्य
लेहंविदध्यान्मधुनाशिशूनाम् ।
कासज्वरच्छर्दिभिरर्दितानां
समाक्षिकांवातिविषामथैकाम् ॥ ९० ॥

अर्थ-काकडासींगी नागरमोथा पीपल अतीस इनका चूर्णकर शहदके साथ चाटे अथवा एक अतीसहीका चूरन शहदके साथ चटानेसे बालककी खांसी ज्वर और वांति दूर होती है ॥ ९० ॥

नागरातिविषामुस्तावालकेंद्रयवैःशृतम् ।
कुमारंपाययेत्प्रातःसर्वातीसारनाशनम् ॥ ९१ ॥

अर्थ-सोंठ अतीस नागरमोथा सुगंधवाला इन्द्रजौ इनका काढाकर प्रातःकाल बालकको पिलावै तो सम्पूर्ण अतिसाररोग दूर होते हैं ॥ ९१ ॥

घनकृष्णारुणाशृंगीचूर्णंक्षौद्रेणयोजितम् ।
शिशोर्ज्वरातिसारघ्नंकासश्वासवमीहरम् ॥ ९२ ॥

अर्थ-नागरमोथा पीपल अतीस और काकडासींगी इनका चूरन शहदके साथ बालकको चटावे तो बालकका ज्वर अतिसार कास श्वास और वमन दूर होतीहै ॥ ९२ ॥

पुष्करातिविषायासकणाशृंगीरजोलिहेत् ।
मधुनामुच्यतेबालः कासैःपंचभिरुच्छ्रितैः ॥ ९३॥
तुगाचक्षौद्रसंलीढाकासश्वासौशिशोर्जयेत् ।
चूर्णंकटुकरोहिण्यामधुनासहयोजितम् ॥ ९४ ॥
हिध्मांप्रशमयेत्क्षिप्रंशिशोश्छर्दिंचदुस्तराम् ।
कणोपणासिताक्षौद्रसूक्ष्मैलासैंधवैःकृतः ॥ ९५ ॥
मूत्रग्रहेप्रदातव्याबालानांलेहउत्तमः ।
गुदपाकेत्वतुश्रेष्ठोलेपस्त्वश्वत्थकल्कजः ॥९६ ॥

अर्थ-पुष्करमूल अतीस काकडासींगी पीपल और धमासेका चूरन शहदमें चाटे तो बालककी पांच प्रकारकी खांसी दूरहो तुटकी वंसलोचन शहदके साथ चाटनेसे

बालककी खांसी और श्वासरोग दूर होताहै अथवा कुटकी का चूर्णकर शहदके साथ चाटनेसे बालककी हिचकी और कठिन छर्दि दूर होती है पीपल मिरच मिश्री शहद छोटी इलायची और सेंधा इनका अवलेह करके देनेसे बालकका मूत्रावरोध दूर होताहै बालकके मुखपाकपर पीपलकी छाल पीसकर लेपकरै ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥

मुखपाकेतुबालानामाम्रसारमयोरजः ।
छुच्छुन्दरीमलोमापोहरिद्राविल्वपत्रकम् ॥ ९७ ॥
सगुग्गुलुंयवंचैवधूपनंयःप्रयोजयेत् ।
निहन्तिरोदनंरात्रौबालकस्यनसंशयः ॥ ९८ ॥

अर्थ—अथवा आमका रस वा गोंद उत्तमहै छछूंदरकी वीट उरद हलदी बेलपत्र गूगल इनकी धूपदेनेसे जो बालक रातमें रोवे उसका रोना बंदहो ॥ ९७ ॥ ९८ ॥

अथ ग्रहग्रस्तबालकोपचारः।

क्षणादुद्विजतेबालःक्षणाद्भ्रमतिरोदिति ।
नखैर्दन्तैर्दारयतिधात्रीमात्मनमेवच ॥ ९९ ॥
ऊर्ध्वंनिरीक्षतेदन्तान्खादेत्कूजतिजृंभते ।
क्षामांगोनिशिजागर्त्तिशून्यांगोभिन्नविड्ज्वरः १००

अर्थ—जो बालक क्षणमें डरनेलगे क्षणमें रोनेलगे नखून और दांतोंसे कभी माताको और कभी अपनेको विदीर्ण करनेलगे ऊपरको देखे दांतोंको बजावे रोवै वारंवार जंभाई ले दुबलाहोजाय रातको जागे शून्य शरीर भिन्न-विट ज्वरसे व्याकुलहो ॥ ९९ ॥ १०० ॥

बालककी खांसी और श्वासरोग दूर होताहै अथवा कुटकी का चूर्णकर शहदके साथ चाटनेसे बालककी हिचकी और कठिन छर्दि दूर होती है पीपल मिरच मिश्री शहद छोटी इलायची और सैंधा इनका अवलेह करके देनेसे बालकका मूत्रावरोध दूर होताहै बालकके मुखपाकपर पीपलकी छाल पीसकर लेपकरे ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥

मुखपाकेतुबालानामाम्रसारमयोरजः ।
छुच्छुन्दरीमलोमापोहरिद्राबिल्वपत्रकम् ॥ ९७ ॥
सगुग्गुलुंयवंचैवधूपनंयःप्रयोजयेत् ।
निहन्तिरोदनंरात्रौबालकस्यनसंशयः ॥ ९८ ॥

अर्थ-अथवा आमका रस वा गोंद उत्तमहै छछूंदरकी वीट उरद हलदी बेलपत्र गूगल इनकी धूपदेनेसे जो बालक रातमें रोवे उसका रोना बंदहो ॥ ९७ ॥ ९८ ॥

अथ ग्रहग्रस्तबालकोपचारः ।

क्षणादुद्विजतेबालःक्षणाद्रमतिरोदिति ।
नखैर्दन्तैर्दारयतिधात्रीमात्मनमेवच ॥ ९९ ॥
ऊर्ध्वंनिरीक्षतेदन्तान्वादेत्कूजतिजृंभते ।
क्षामांगोनिशिजागर्त्तिशून्यांगोभिन्नविड्ज्वरः १००

अर्थ-जो बालक क्षणमें डरनेलगे क्षणमें रोनेलगे नखून और दांतोंसे कभी माताको और कभी अपनेको विदीर्ण करनेलगे ऊपरको देखे दांतोंको बजावे रोवे वारंवार जंभाई ले दुबलाहोजाय रातको जागे शून्य शरीर [illegible] विट ज्वरसे व्याकुलहो ॥ ९९ ॥ १०० ॥

शुकनाम्नोबालस्यसर्वग्रहशान्त्यर्थं सर्वग्रहबलिं
करिष्ये ॥ तस्यांसर्वग्रहानावाह्यसर्वग्रहाधिपतये
हुंफट्स्वाहेति मंत्रेणगंधादिकोपचारैःसम्पूज्यनै-
वेद्यसप्तपताकासप्तदीपान्गुडोदकमत्स्यमांस-
सुरास्विन्नगोधूमवटकादिकं बृहद्वंशपात्रेस्था-
प्य ततस्तस्यामग्रेपरिवेष्य ओंनमोभगवते
रुद्रायत्र्यंबकायसत्यसुवसत्यसुवहुंफट्स्वाहेति
मंत्रमुक्त्वाबालकमुष्टिमात्रमन्नंग्राह्यंपूर्वपरिवेपि
तेन्नेत्याजयेत् ॥ ततोन्यमुष्टिमात्रमन्नंगृहीत्वाओं
फट्वैनतेयायनमः ॥ ततोन्यदपिह्रींह्रींशः इति
वारद्वयंबलिंदत्वाबालप्रमाणांपुष्पमालां गृही-
त्वाबालोपरित्रिःपरिभ्राम्य ओंकारिणिसुस्थाप-
यइतिपूर्वस्यांदिशि तांस्थापयित्वाऽपश्यन्नेवगृ-
हमागच्छेत् । ततोधूपेनबालंधूपयेत् ॥ १०४ ॥

अर्थ–चार हाथ भूमिको गोबरसे लीप चावलके चूर्णकी
वेदी बनाय उसपर यथोक्त मूर्तिको स्थापनकर नामगोत्रव
उच्चारण कर कहे मैं अमुक बालग्रहशान्तिके अर्थ ग्रहबलि
करता हूं उसमें सम्पूर्ण ग्रहोंको आवाहन कर सम्पूर्ण ग्रहों
के अधिपतिको हुंफट्स्वाहा पढकर गंधादि उपचारसे पूज
न कर नैवेद्य सात पताका सात दीप गुड उदक मत्स्य मां
सुरास्विन्न गेहूं वटकादि यह बडे बांसके पात्रकी टोकरी
इसके आगे रखकर ओंनमोभगवते गरुडाय [illegible]

अर्थ-एण मृग मोर तीतर लावा और सब जांगल मांसोंके साथ दूध पीना वर्जित है ॥ ४० ॥

अम्लेष्वामलकंशस्तंलवणेषुचसैन्धवम् ।
कषायेष्वभयाशस्ताकटुवर्गेषुनागरम् ॥ ४१ ॥

अर्थ-अम्ल पदार्थोंमें आमला, लवणमें सेंधा कषायोंमें हरड, कटुवर्गमें सोंठ ॥ ४१ ॥

पटोलंतिक्तवर्गेषुमधुरेषुचशर्करा ।
एतैःसहहितंदुग्धमेतदन्यैर्विकारकृत् ॥ ४२ ॥

अर्थ-तिक्त वर्गोंमें पटोल मधुरमें शर्करा इनके साथ दूध पीनेसे विकार नहीं करता इससे अन्योंके साथ विकार करताहै ॥ ४२ ॥

उष्णेनदिव्यसलिलेनवराहगोधा-
मांसेनयातिविकृतिंमधुमूलकैश्च ।
तक्रेणनोष्णमपितुल्यवृतंघृतंच
कांस्येदशाहमुषितंचतथावृतञ्च ॥ ४३ ॥

अर्थ-उष्ण दिव्यजल और वराह गोहके मांसके साथ मधु मूलके विकारको प्राप्त होते हैं और तक्रके साथ गरम घृत या वैसाही घृत खाना वर्जित है और कांसीके बर्तनमें रक्खा हुआ घी दशदिनमें खानेके योग्य नहीं रहता है ४३

गोधातित्तिरलाववर्हिपललान्येरंडनलाग्निना
मत्स्याम्लनवमाषवरस्थपृषद्ग्रामिषान्यामनैः ॥
तैलैःसर्षपजैःकपोतपटलंनिद्रंविरुद्धंतथा

अर्थ-एण मृग मोर तीतर लावा और सब जांगल मांसोंके साथ दूध पीना वर्जित है ॥ ४० ॥

अम्लेष्वामलकंशस्तंलवणेषुचसैन्धवम् ।
कषायेष्वभयाशस्ताकटुवर्गेषुनागरम् ॥ ४१ ॥

अर्थ-अम्ल पदार्थोंमें आमला, लवणमें सेंधा कषायोंमें हरड, कटुवर्गमें सोंठ ॥ ४१ ॥

पटोलंतिक्तवर्गेषुमधुरेषुचशर्करा ।
एतैःसहहितंदुग्धमेतदन्यैर्विकारकृत् ॥ ४२ ॥

अर्थ-तिक्त वर्गोंमें पटोल मधुरमें शर्करा इनके साथ दूध पीनेसे विकार नहीं करता इससे अन्योंके साथ विकार करताहै ॥ ४२ ॥

उष्णेनदिव्यसलिलेनवराहगोधा-
मांसेनयातिविकृतिंमधुमूलकैश्च ।
तक्रेणनोष्णमपितुल्यघृतंघृतंच
कांस्येदशाहमुषितंचतथाघृतञ्च ॥ ४३ ॥

अर्थ-उष्ण दिव्यजल और वराह गोहके मांसके साथ मधु मूलके विकारको प्राप्त होते हैं और तक्रके साथ गरम घृत या वैसाही घृत खाना वर्जित है और कांसीके वर्तनमें रक्खा हुआ घी दशदिनमें खानेके योग्य नहीं रहता है ४३

गोधातित्तिरलाववर्हिपललस्तान्येरंडतैलाग्निना
मत्स्याम्लेक्षवमाषवरत्थपप्पदक्षामिपान्यानवैः ॥
तैलैःसर्षपजैःकपोतपटलंनिष्टंविरुद्धंतथा

दो वा तीन दिन का रक्खा वासी अन्न तथा बहुत अनुष्ण तथा वारंवार गरम हितकारी नहीं है ॥ ४६ ॥

अत्युष्णंवस्तुमूलकयुतंशूलामगुल्मप्रदं
दुग्धंलाकुचमाज्यदुग्धगुडदध्याज्यंसमांशंपृथक् ४७।
सक्तुर्भक्तपयःपलैःसमथितैर्दुष्टःपृथग्वापृथक्
तीक्ष्णक्षौद्रकणागुडैस्सहतथास्यात्काकमाचीभ्रशम्
स्नेहंनिस्तलनेझपस्यतलिताकिंचोपितायामिनीं
कंपिल्लस्तुसतत्रएवमहिमैर्भल्लातमन्नादिभिः ॥४८॥

अर्थ-अत्यन्त गरम वस्तु मूलीके सहित खानेसे शूल आम और गुल्मरोग करती है और वडहरका फल घृत दूध गुड दहीके साथ समांश वा पृथक् २ विरुद्ध है सत्तुओं-के साथमें दूध मिलाकर वा मांसके साथ सत्तु मिलाकर खाना विरुद्ध है जवाखार शहद पीपल विरुद्ध है गुडके साथमें यह तथा काकमाची (मकोय कवैया) विरुद्ध है जिस तेलमें मछली पकाई हो उसमें हलदी विरुद्ध है बा-सी त्याज्य है कवीला तक्रके साथ और कपूरको छोड भिलावा अन्नादिके साथमें विरुद्ध है इस प्रकार विरुद्ध जाने ॥ ४७ ॥ ४८ ॥

रात्रौक्षीरंनसेवेतयदिसेवेतनस्वपेत् ।
यदिस्वपेद्धरत्यायुस्तस्मात्पथ्यंदिवापयः ॥ ४९ ॥

अर्थ-रात्रिमें दुग्ध सेवन करना नहीं और जो सेवन करे तो सोवे नहीं और जो दुग्ध पीकर तत्काल सोता है तो आयु हरता है इसकारण दिनमें दूध पीना पथ्य है ॥ ४९ ॥

अर्थ-जो अत्यन्त सूखी औषधी सुन्दर पीसिके वस्त्रसे छाना होय उसको चूर्णरज और क्षोद कहतेहैं, उसको खानेकी मात्रा एककर्षकी है, जो चूर्णमें गुड मिलाना होयतो चूर्णके समान शक्कर दूनी मिलावै, हींग भूनके मिलानी ॥ ३ ॥

अथ मंडविधिः।

जलेचतुर्दशगुणेसिद्धोमण्डस्त्वासिक्थकः ॥
शुण्ठीसैंधवसंयुक्तःपाचनोदीपनोलघुः ॥ ४ ॥

अर्थ-अच्छे चावलोंको चौदहगुणे जलमें सिद्ध करनेसे मण्ड सिद्ध होता है इसमें सोंठ और सैंधा मिला सेवन करनेसे दीपन पाचन और लघु होता है, चावलोंके सीजनेपर मांड निकाललेना इसको शुद्ध मण्ड कहते हैं ॥ ४ ॥

तण्डुलैरर्द्धमुद्गांशैःकिंचिद्भ्रष्टःसुपाचितः।
धान्यत्रिकटुसिंधूत्थहिंगुतक्रेणयोजितः ॥ ५ ॥
ज्ञेयःसोष्टगुणोमंडोज्वरदीपत्रणापहः।
रक्तक्षुद्वर्धनःप्राणप्रदोवस्तिविशोधनः ॥ ६ ॥

अर्थ-आधे चावल और मूंग मिलाकर कुछ भूनले इसमें धनियाँ सोंठ मिरच पीपल सेंधानिमक मूंग चावल हींग और तक्र यह इसमें मिलावै हींग भूनले चौदह गुने पानीमें डालकर पकावै जब चावल सीज जांय तब उतारकर छानले इसको अष्टगुण मण्ड कहतेहैं, यह ज्वरक्त और क्षुधाको अधिक है ॥५॥६॥
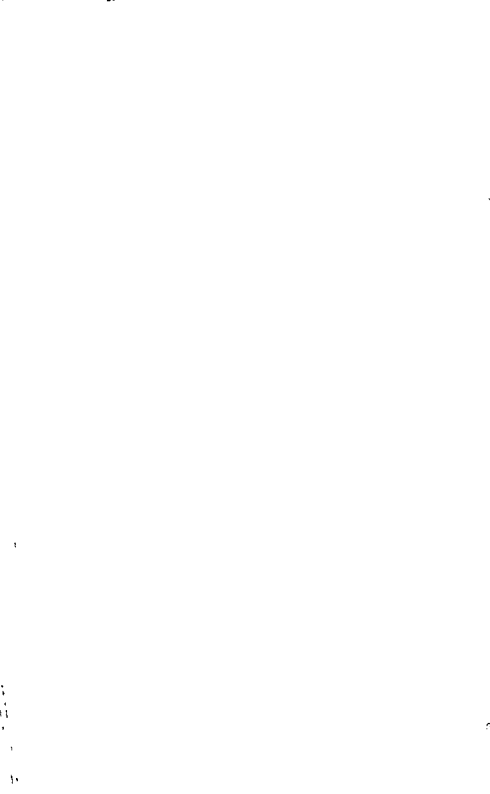
शुद्धसूतंसमंस्वर्णंखल्वेकृत्वातुगोलकम् ।
ऊर्ध्वाधोगंधकंदत्त्वासर्वतुल्यंनिरुद्धयच ॥ ११ ॥
त्रिंशद्वन्योपलैर्देयंपुटमेकंचतुर्दश ।
निरुद्धंहेमभस्मस्याद्वन्धोदयःपुनःपुनः ॥ १२ ॥

अर्थ-उत्तम सुवर्णको अग्निमें तीनवार तपावे जब वह गरम होजाय तब कचनारके रस पुट देता जाय तो सुवर्ण शुद्ध हो जाता है शुद्ध पारा और सोना बराबर लेकर खरल करे फिर उसका गोला करके उस गोलेके समान नीचे ऊपर गंधक रखकर शरावसंपुटमें तीस जंगलीकंडोंकी आँच देना ऐसेही वारंवार मिला मिलाकर चौदह पुट देना तोनिरुद्ध भस्म होगी १० ॥ ११ ॥ १२ ॥

अथ रजतस्य ।

तैलेतक्रेगवांमूत्रेकांजिकेचकुलत्थके ।
त्रिफलाक्काथमध्येतुसंशोध्याःसर्वधातवः ॥ १३ ॥
विधायपर्पटींसूतेनरजतस्याथमेलयेत् ।
तालंगंधंसमंपश्चान्मर्दयेन्निंबुकद्रवैः ॥
द्वित्रैःपुटैर्भवेद्भस्मयोज्यमेतद्रसादिषु ॥ १४ ॥

अर्थ-तेल तक्र गोमूत्र कांजी कुलथी और, त्रिफलेके क्काथमें सम्पूर्ण धातुओंको शोधना चाहिये चांदीके कंटकवेधी पत्र कर अग्निमें तपाकर तेल तक्र गोमूत्र और कुलथीके काढेमें तीन तीन बेर बुझावे तो शुद्ध हो पारेकेसाथ खरल करके पारा और रजतको मिलावे और हरताल तथा गंधक बराबर लेकर नींबूका रस डालकर खरल करे दो तीन पुट देनेसे भस्म हो जाती है इस को रसादिकमें प्रयोग करे ॥ १३ ॥ १४ ॥

अथ वंगस्य।

शुद्धंसतालमर्कस्यपिष्ट्वादुग्धेनतत्पुटेत्।
शुष्काश्वत्थभवैर्वल्कैःसप्तधाभस्मतामियात् ॥२०॥

अर्थ-शुद्ध वंगकी समान हरताल लेकर उसे आकके दूधमें पीसकर रांगेपर लेप करे और सूखे पीपलकी छालको लेकर उससे सातवार दग्ध करनेसे वंगकी भस्म हो जाती है ॥ २० ॥

अथ जसदस्य।

जसदंगिरिजंतस्यदोषाःशोधनमारणे।
वंगस्यैवहियोद्धव्यागुणांस्तुगणयाम्यथ ॥ २१ ॥
जसदंतुवरंतिक्तंशीतलंकफपित्तहृत्।
चक्षुष्यंपरमंमेहान्पाण्डुश्वासंचनाशयेत् ॥ २२ ॥

अर्थ-जस्त पर्वतसे उत्पन्न होनेवाली धातु है उसके दोष शोधन और मारणमें वंगकी समान जानने जस्तके पतले पत्र कर अग्निमें तपाय सात या तीन वार नींबूके रसमें बुझावे फिर उनकी समान गंधकले आकके दूधमें खरलकर उन जस्तके पत्रोंपर लेपकर मिट्टीकी मूसामें रखकर दूसरी मूसासे उसका मुख बंद करदे कपरमिट्टीकर आरने उपलोंमें धर [illegible] ट देनेसे जस्तकी भस्म हो जा- [illegible] [illegible] [illegible] जाननेवाला [illegible] रोग दूर कर-

अर्थ-शीशा वा मनसिलका चूर्ण अडूसेके रसमें खरल कर गजपुटमें फूंकदे तीन पुटमें शीशेकी उत्तम भस्म होती है यह सब प्रकारके प्रमेह दूर करतीहै ॥ २३ ॥

अथ उपधातवः।

अभ्रकंमाक्षिकंतालंशिलानीलांजनंतथा।
तुत्थकंरसकंचैतेप्रोक्ताःसप्तोपधातवः ॥ २४ ॥

अर्थ-अभ्रक सुवर्णमाक्षिक हरताल मनसिल नीलाथोथा सुरमा यह सात उपधातु हैं ॥ २४ ॥

तत्रादौ अभ्रकस्य।

कृष्णाभ्रकंधमेद्वह्नौततः क्षीरेविनिक्षिपेत्।
भिन्नपत्रंतुतत्कृत्वातण्डुलीयाम्रयोर्द्रवैः ॥ २५ ॥
भावयेदष्टयामंतदेवमभ्रंविशुद्ध्यति।
धान्याभ्रकस्यभागैकद्वौभागौटंकणस्यच ॥ २६ ॥
पिष्ठातदंधमूषायांरुद्ध्वातीव्राग्निनापचेत्।
स्वभावशीतलंचूर्णसर्वरोगेषुयोजयेत् ॥ २७ ॥
वरांवुगोघृतंचाभ्रंकलापद्वादिकसमांशकम्।
मृद्वाग्निनापचेल्लेह्यमभृतीकरणात्विदम् ॥ २८ ॥

अर्थ-काले अभ्रकको अग्निमें तपाकर दूधमें बुझावे फिर उसके पत्र अलग कर चौलाई और नींबूके रसमें दोनोंको एकत्र करके उनमें उन पत्रोंको आठ पहर पर्यन्त भिगोदे तो अभ्रक शुद्धहो फिर उस रसमेंसे अभ्रकको निकाल कर उसको धान्याभ्रक (फलनी हुई अभ्रकको ले उसमें चतुर्थांश शालीके धान मिलाकर उसे कम्मलमें पोटली बांध परातमें रक्खे फिर उसपर जल डालता जाय हाथोंसे पोटलीको मर्दता जाय इसप्रकार करनेसे

उस कम्बलमें जितना अभ्रक होगा वह बहकर उस परातके पानीमें आजायगा जब जाने सबअभ्रक परातमें आगया तब परातका पानी निकालकर फेंकदे और उस अभ्रकके चूरेको धूपमें सुखाले इसे धान्याभ्रक कहते हैं) कर उसके दो भाग और दो भाग सुहागा इनको पीसकर अंधमूषामें रखकर बंदकर तीव्र अग्नि देवे जब स्वांगशीतल होजाय तब निकाल पीसकर सब औषधियोंके योगमें दे त्रिफलेका जल १६ पल गौका घृत ८ पल मृतअभ्रक १० पल इनको एकत्रकर लोहेकी कढाईमें मृदुअग्निसे पचावे जब जल घी जल जाय केवल अभ्रक शेषरहै तब यह लेह्य अमृतीकरण नामवाला होता है इसे औषधियोंके साथ दे ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥

अथ स्वर्णमाक्षिकस्य।

माक्षिकस्यत्रयोभागाभागैकंसैंधवस्यच ।
मातुलुंगद्रवैर्वाथजंबीरस्यद्रवैःपचेत् ॥ २९ ॥
चालयेल्लोहजेपात्रेयावत्पात्रंसुलोहितम् ।
भवेत्ततस्तुसंशुद्धिस्वर्णमाक्षिकमृच्छति ॥ ३० ॥

अर्थ--तीनपैसेभर सुवर्णमाक्षिक पैसेभर सेंधानिमक, दोनोंको पीस कडाहीमें डाल चूल्हेपर चढाय नीचे तेज आंचदे कडाहीमें बिजोरे अथवा जंभीरीका रस डालता जाय और छेलीसे चलाता जाय जब स्वर्णमाक्षिक और कडाही दोनोंका लाल रंग होजाय तब सुवर्णमाक्षिक शुद्ध हुआ जानना ॥ २९ ॥ ३० ॥

कर्कोटीमेषशृंग्युत्थैर्द्रवैर्जंबीरजैर्दिनम् ।
भावयेदातपेतीव्रेविमलंशुद्ध्यतिध्रुवम् ॥

गोला बनाकर सुखावे जब वह गोला सूख जाय फिर एक हांडीमें आधी हांडीतक पुनर्नवाका क्षार भरके उसपर वह गोला रखकर ऊपरसे वह क्षार मुखतक भरके हांडीका मुख बंद कर चूल्हेपर चढाय क्रमसे अग्नि बढाताजाय इसप्रकार बरा बर पांचदिन अग्नि प्रदीप्त करे फिर उसको ठंडाकरले अवश्य हरतालकी भस्म होजायगी इस मारे हुए हरता- लकी मात्रा एक रत्तीकी है ॥३२॥३३॥ ३४॥३५॥३६॥३७॥

अथ मनःशिला।

अगस्तिपत्रतोयेनभाविताससवारकम् ।
शृंगवेररसैर्वापिविशुद्ध्यतिमनःशिला ॥३८ ॥

अर्थ–मनशिलको अगस्तियाके पत्तोंके रस अथवा अदर- खके रसकी सात भावना दे तो मनसिल शुद्ध हो॥ ३८ ॥

अथ खर्परस्य।

नृमूत्रेवाथगोमूत्रेसप्ताहंरसकंपचेत् ।
दोलायंत्रेणशुद्धंस्यात्ततःकार्येपुयोजयेत् ॥ ३९ ॥

अर्थ–खपरियाको मनुष्यके मूत्रमें और गोमूत्रमें दोला- यंत्रसे सात दिन पकावे तो शुद्ध हो ॥ ३९ ॥

अथ तुत्थम्।

ओतोर्विष्ठासमंतुत्थंसक्षौद्रंटंकणान्वियुक् ।
त्रिर्धवंपुटितंशुद्धंवांतिभ्रांतिविवर्जितम् ॥ ४० ॥

अर्थ–बिल्लीकी विष्ठाके समान नीला थोथा ले उसमें शहद और सुहागा डालकर खरल करे फिर शरावसंपुटमें रख कपडमिट्टीकर फूंके ऐसे तीन बार करनेसे नीलाथोथा वमन और भ्रांतिरहित शुद्ध होता है॥ ४० ॥

अथ नीलांजनस्य ।

स्रोतोंजनंतुद्विविधंश्वेतकृष्णप्रभेदतः ।
त्रिफलावारिणीस्वेद्यंतद्द्वयंसिद्धिमृच्छति ॥ ४१ ॥

अर्थ—श्वेत और कृष्णके भेदसे सुरमा दो प्रकारका है यह त्रिफलेके जलकी पुट देनेसे दोनों प्रकारका शुद्ध होता है ॥ ४१ ॥

अथ पारदशोधनम् ।

तत्रशोधनबाहुल्यादथवादरदाकृष्टंस्विन्नम् ।
लवणांबुभाजिदोलायांरसमादाययथेच्छंकर्त्त-
व्यस्तेनभेषजेयोगइतिवचनादस्यदरदाकृष्टि-
र्लिख्यते ।
निंबूरसेनसंपिष्टात्प्रहरंदरदाद्दृढम् ।
ऊर्ध्वपातनयंत्रेणसंग्राह्योनिर्मलोरसः ॥ ४२ ॥

अर्थ--पारेका शोधन बहुत प्रकारसे है अथवा शिंगरफसे निकाल अत्यन्त खट्टी कांजीमें उसका स्वेदन करना चाहिये व लवणका जलभरे दोलायंत्रसे रस लेकर यथेच्छ प्रयोगकरे इसका औषधियोंके साथ योग है, इस वचनसे शिंगरफसे पारेके निकालनेकी विधि लिखतेहैं एक पहरतक शिंगरफको नींबूके रससे खरल करै और ऊर्ध्वपातन यन्त्रके द्वारा पारा निकालले यह निर्मल होता है ॥ ४२॥

अथोपरसाः ।

तत्रादौ गंधकशोधनम् ।

सदुग्धभांडस्यपुटेस्थितोयंशुद्धोभवेत्कूर्मपुटेनगंधः ४३

अर्थ—एक हांडीमें सेरभर दूध भरकर वस्त्रसे उसका मुख बांधदे और १६ तोले आमलासार गंधक पीसकर घीमें गलावे गलनेपर उस वस्त्रपर डालदे तो गंधक उस कप-

डेमेंसे टपककर दूधमें जमजायगी उसे निकाल पानीसे धो सुखा रक्खे ॥ ४३ ॥

अथ सिंदूरस्य ।

सिंदूरंनिंबुकद्रावैःपिष्ट्वाघर्मेविशोषयेत् ।
ततस्तंडुलतोयेनतथाभूतंविशुद्ध्यति ॥ ४४ ॥

अर्थ-सिंदूरको नींबूके रसमें घोटकर धूपमें सुखावै पीछे चावलोंके पानीमें घोटकर धूपमें सुखावे तो शुद्धहो॥४४॥

अथ समुद्रफेनस्य ।

समुद्रफेनःसंपिष्टोनिंबूतोयेनशुद्ध्यति ॥ ४५ ॥

अर्थ-निम्बूके अर्कके साथ खरल करनेसे समुद्रफेन शुद्ध होताहै ॥ ४५ ॥

अथ दरदस्य ।

मेषीक्षीरेणदरदमम्लवर्गैश्चभावितम् ।
सप्तवारंप्रयत्नेनशुद्धिमायातिनिश्चितम् ॥ ४६ ॥

अर्थ-भेडीके दूधमें और कोईसीभी खटाई नींबूके रस आदिकी पृथक् पृथक् सात भावना देनेसे हिंगुल शुद्ध होताहै ॥ ४६ ॥

अथ टंकणस्य ।

अतस्तंशोधयेदेवंवह्नावुत्फुल्लितःशुचिः ॥ ४७ ॥

अर्थ-अग्निपर रखनेसे फूलकर सुहागा शुद्ध होजाता है४७॥

अथ शिलाजतुनः ।

अथोष्णकालेरवितापयुक्तेव्यभ्रेनिवातेसमभूमिभागे ॥
चत्वारिपत्राण्यसितायसानिन्यस्यातपेदत्तमनोविधानः
शिलाजतुश्रेष्ठमवाप्यपात्रेप्रक्षिप्यतोयंद्विगुणंततोस्मात्
उष्णंतदर्द्धंभृतमप्सुदत्त्वाविशोषयेत्तन्मृदितंयथावत् ॥

अर्थ-गरमीके दिनोंमें जब कडी धूप निकले आकाश और वायुसे रहितहो उससमय समान भूमिमें चार लोह पात्र स्थापन करे उनमेंसे प्रथम पात्रमें शिलाजीतके टुकडे टुकडे कर डालदे और शिलाजीतसे दूना जल डाले और उससे आधा गरम जल डाल उसे धीरे धीरे हाथसे मल- कर वस्त्रमें छानले उस छने जलको पात्रमें भरकर धूपमें रखदे ॥ ४८ ॥ ४९ ॥

ततस्तुयत्कृष्णमुपैतिचोर्द्धंसंतानिकावद्रविरश्मियोगात
पात्रात्तदन्यत्रततोनिदध्यात्तस्यांतरेकोष्णजलंनिधाय
ततश्चतस्मादपरत्रपात्रेतस्माच्चपात्रादपरत्रतत्र ॥
पुनस्ततोन्यत्रनिधायकृष्णंयत्संस्थितंतत्पुनरादरेच्च५१॥
यदापिशुद्धंजलमच्छमूर्द्धंप्रसन्नभावान्मलमेत्यधस्तात
तदात्यजेत्तत्सलिलंमलंचशिलाजतुस्याज्जलशुद्धमेवम्

अर्थ-जब उसपर मलाई जमजाय तब उसको उतार कर दूसरे पात्रमें रखता जाय जब मलाई जमना बंद होजाय तब दूसरे पात्रमें जो मलाई जमाकी है उसमें गरम जल डालकर धूपमें रखदे उसमें जो मलाई जमती जाय उसे निकाल निकालकर तीसरे पात्रमें रखता जाय इसीप्रकार चौथे पात्रमें भी करे जब इसमेंभी मलाई पडती जाय उसंसे निकाल २ कर प्रथम पात्रमें रक्खे इसीप्रकार चार पांचवार करे जब पात्रमें ऊपर पानी स्वच्छ रहे तब जाने कि शिला- जीत शुद्ध होगया उस जलको फेंक दे शिलाजीतको नि- काल ले ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥

वह्नौक्षिप्तंतुनिर्धूमंपक्त्वालिंगोपमंभवेत ।
तृणाग्रेणांभसिक्षिप्तमधोगलातितंतुवत् ॥

गोमूत्रगंधिमलिनंशुद्धंज्ञेयंशिलाजतु ॥ ५३ ॥

अर्थ-जो शिलाजीत अग्निमें डालनेसे निर्धूम पक होकर लिंगके समान खडा होजाय और तिनके अग्रभाग पर रखकर जलमें डालनेसे तंतुओंके समान फैलकर नीचे बैठ गोमूत्रकीसी दुर्गन्धिदे और मलिनहो ऐसे शिलाजीतको शुद्ध जानना ॥ ५३ ॥

अथ विषाणि।

खंडीकृत्यविषंवस्त्रपरिबद्धंतुदोलया।
अजापयसिसंस्विन्नंयामतःशुद्धिमाप्नुयात्।
अजादुग्धाभावतस्तुगव्यक्षीरेणशोधयेत् ॥ ५४ ॥

अर्थ-विषकी गांठको टुकडे २ कर कपडेकी पोटलीमें बांध बकरीके मूत्रमें एक पहर स्वेदन करे तो शुद्ध हो बकरीके दूधके अभावमें गौके क्षीरमें शोधन करे ॥ ५४ ॥

अथोपविषाणि।

अर्कक्षीरंस्नुहीक्षीरंलांगलीकरवीरकम्।
गुंजाहिफेनोधत्तूरःसप्तोपविषजातयः ॥ ५५ ॥

अर्थ-आकका दूध थूहरका दूध कलियारी कनेर चौंटली अफीम धतूरा यह सात उपविष हैं ॥ ५५ ॥

अथ लांगलीशोधनम्।

लांगलीशुद्धिमायातिदिनंगोमूत्रसंस्थिता।

अर्थ-कलियारीके टुकडोंको एकदिन गोमूत्रमें भिजोवे तो शुद्ध हो ॥

अथ गुंजायाः।

गुंजाकांजिकसंस्विन्नाप्रहरंशुद्ध्यतिध्रुवम् ॥ ५६ ॥

अर्थ-गुंजाको कांजीमें डाल एकपहर दोलायंत्रमें पचावे तो शुद्धहो ॥ ५६ ॥

अथ वमनविधिः ।

शरत्कालेवसंतेचप्रावृट्कालेचदेहिनाम् ।
वमनंरेचनंचैवकारयेत्कुशलोभिषक् ॥ ६१ ॥

अर्थ-चतुर वैद्यको चाहिये कि शरत्काल वसन्त और चौमासेमें वमन विरेचन करावे ॥ ६१ ॥

बलवंतंकफव्याप्तंहृल्लासादिनिपीडितम् ।
तथावमनसात्म्यंचधीरचित्तंचवामयेत् ॥ ६२ ॥

अर्थ-बलवानको कफसे व्याप्तको हृल्लासादिसे निपीडितको वमन करावे और धीर चित्तवालेको वमनकरावे६२

विषदोषेस्तन्यरोगेमंदाग्नौश्लीपदेऽर्बुदे ।
हृद्रोगकुष्ठवीसर्पमेहजीर्णभ्रमेषुच ॥ ६३ ॥
विदारिकापचीकासश्वासपीनसवृद्धिषु ।
अपस्मारज्वरोन्मादेतथारक्तातिसारिषु ॥ ६४ ॥
नासाताल्वोष्ठपाकेचकर्णस्रावेऽथजिह्वके ।
गलशोथातिसारेचपित्तश्लेष्मगदेतथा ॥ ६५ ॥
मेदोगदेरुचौचैववमनंकारयेद्भिषक् ।
पटोलवासानिंबश्चपित्तशीतजलंपिबेत् ॥ ६६ ॥

अर्थ-विषदोषमें स्तन्यरोगमें मन्दाग्नि श्लीपद अर्बुद रोगमें हृद्रोग कुष्ठ विसर्प मेह जीर्णज्वर भ्रम विदारिका अपची श्वास कास पीनसवृद्धि अपस्मार ज्वरोन्माद रक्त अतिसार, नासा तालु ओष्ठ इनोंका, पाक कर्णस्राव जिह्वा-रोग गलशोथ अतिसार पित्तश्लेष्मरोग मेदरोग अरुचिरो-गोंमें वैद्यको वमन कराना चाहिये, पित्त दोषमें पटोलपत्र अडूसा और कटुनिम्बके पत्तोंका चूर्ण कर शीतल जल मिलाकर पिवैतो वमनमें पित्त निकले॥६३॥६४॥६५॥६६॥

अथाहिफेनस्य।

अहिफेनंशृंगवेररसैर्भाव्यंत्रिसप्तधा ।
शुद्धयत्युक्तेषुयोगेषुयोजयेत्तद्विधानतः ॥ ५७ ॥

अर्थ-अफीम अदरखके रसकी २१ भावना देनेसे शुद्ध हो तदनन्तर योगोंमें डालदे ॥ ५७ ॥

अथ धत्तूरस्य।

धत्तूरबीजंगोमूत्रेचतुर्यामोषितंपुनः ।
कंडितंनिस्तुषंकृत्वायोगेषुविनियोजयेत् ॥ ५८ ॥

अर्थ--धतूरेके बीजोंको चारपहर गोमूत्रमें भिजोकर फिर निकाल सुखाकर भूंसी दूर करे तो शुद्धहो पीछे प्रयोगोंमें डालदे ॥ ५८ ॥

अथ विषमुष्टिशोधनम्।

किञ्चिदाज्येनसंभृष्टोविषमुष्टिर्विशुद्धयति ॥ ५९ ॥

अर्थ--कुछ घीके साथ भूननेसे कुचला शुद्ध होताहै वा कांजीके पानीमें कुचलेको दोपहर दोलायंत्रद्वारा स्वेदन कर घृतमें भूने तो शुद्धहो ॥ ५९ ॥

अथ जैपालशुद्धिः।

जैपालंरहितत्वचंकुरुरसज्ञाभिर्मलंमाहिषे
निक्षिप्त्र्यहमुष्णतोयविमलंखल्वेसवासोऽर्दितम्
लिप्तंनूतनखर्परेषुविगतस्नेहंरजःसन्निभं
निम्बूकाम्बुविभावितंचबहुशःशुद्धंगुणाढ्यंभवेत्॥६०॥

अर्थ-जमालगोटेको तीनदिन भैंसके गोबरमें गाड रक्खे वक्कल और जीभको दूर कर गरम पानीमें धो वस्त्र सहित खरलमें डाल मर्दन करे पीछे कोरे ठीकरे पर लगावे तो इसका तेल सूखजाय पीछे नीबूके रसमें बहुत देरतक घोटे तो शुद्ध और गुणोंमें निर्मल हो ॥ ६० ॥

अथ वमनविधिः।

शरत्कालेवसंतेचप्रावृट्कालेचदेहिनाम्।
वमनंरेचनंचैवकारयेत्कुशलोभिषक्॥ ६१॥

अर्थ-चतुर वैद्यको चाहिये कि शरत्काल वसन्त और चौमासेमें वमन विरेचन करावे॥ ६१॥

बलवंतंकफव्याप्तंहृल्लासादिनिपीडितम्।
तथावमनसात्म्यंचधीरचित्तंचवामयेत्॥ ६२॥

अर्थ-बलवानको कफसे व्याप्तको हृल्लासादिसे निपीडितको वमन करावे और धीर चित्तवालेको वमनकरावे६२

विषदोषेस्तन्यरोगेमंदाग्नौश्लीपदेऽर्बुदे।
हृद्रोगकुष्ठवीसर्पमेहजीर्णभ्रमेषुच॥ ६३॥
विदारिकापचीकासश्वासपीनसवृद्धिषु।
अपस्मारेज्वरोन्मादेतथारक्तातिसारिषु॥ ६४॥
नासाताल्वोष्ठपाकेचकर्णस्रावेऽधिजिह्वके।
गलशोथातिसारेचपित्तश्लेष्मगदेतथा॥ ६५॥
मेदोगदेरुचौचैववमनंकारयेद्भिषक्।
पटोलवासानिंबैश्चपित्तशीतजलंपिबेत्॥ ६६॥

अर्थ-विषदोषमें स्तन्यरोगमें मन्दाग्नि श्लीपद अर्बुद रोगमें हृद्रोग कुष्ठ विसर्प मेह जीर्णज्वर भ्रम विदारिका अपची श्वास कास पीनसवृद्धि अपस्मार ज्वरोन्माद रक्त अतिसार, नासा तालु ओष्ठ इनोंका, पाककर्णस्राव जिह्वा-रोग गलशोथ अतिसार पित्तश्लेष्मरोग मेदरोग अरुचिरो-गोंमें वैद्यको वमन कराना चाहिये, पित्त दोषमें पटोलपत्र अडूसा और कटुनिम्बके पत्तोंका चूर्ण कर ...

निकलता होय केवल वातरोगी या छर्दकिये हुए या अजीर्ण से व्यथित इनको वमन न करावे और जो यह करें तो अजीर्ण और विषपीडित मनुष्यको वमन करावे जो कफसे व्याप्त हैं उनको मधुक्वाथका पान कराकर वमन करावे अजीर्ण करने-वाले भारी पदार्थ शीतलपानी दण्ड कसरत मैथुन देहमें मालिस करना तथा क्रोधकरना यह सब कर्म जिसदिन वमनकारी औषधि ले उस दिन त्यागदे ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥

अथ विरेचनविधिः ।

स्निग्धस्विन्नस्यवांतस्यदद्यात्सम्यग्विरेचनम् ।
बहुपित्तोमृदुःप्रोक्तोबहुश्लेष्माचमध्यमः ॥ ७३ ॥
बहुवातःक्रूरकोष्ठोदुर्विरेच्यःसकथ्यते ।
जीर्णज्वरीगरव्याप्तोवातरक्तीभगंदरी ॥ ७४ ॥
अर्शःपांडूदरग्रंथिहृद्रोगारुचिपीडिताः ।
योनिरोगप्रमेहार्त्तगुल्मप्लीहव्रणार्दिताः ॥ ७५ ॥
विद्रधिच्छर्दिविस्फोटविषूचीकुष्ठसंयुताः ।
कर्णनासाशिरोवक्त्रगुदमेढ्रामयान्विताः ॥ ७६ ॥

अर्थ-प्रथम स्नेहपानसे स्निग्ध और स्वेदनसे स्विन्न और वमनसे वान्तमनुष्यको रेचन देना, जो मनुष्य पित्ताधिक है वह मृदु (जिसका कोठा कोमल है) जो कफाधिक है सो मध्यकोष्ठ और जो वाताधिक है सो कठिनकोष्ठ है इसको कठिनतासे रेचन होताहै. जीर्ण ज्वरमें व्याप्त विषमें व्याप्त वातरक्त भगन्दर रोगसे युक्त अर्शरोगी पाण्डुरोगी उदररोगी हृद्रोग अरुचि योनिरोग [illegible]

सश्लेष्मवातपीडायांसक्षीरंमदनंपिबेत्।
अजीर्णेकोष्णपानीयंसिंधुंपीत्वावमेत्सुधीः ॥६७॥
वमिनंपाययित्वातुजानुमात्रासनेस्थितम्।
कंठमेरण्डनालेनस्पृशेत्तंवामयेद्भिषक् ॥ ६८ ॥

अर्थ--तथा कफवायुकी पीडा होय तो मैनफलके चूर्णको दूधमें डालकर पिवै तो वमन होनेसे प्राणीका अजीर्ण दूर हो मनुष्यको वमन कारक औषधी देकर घोटू ऊंचे आसनपर बैठावै और अंडकी नालको लेकर उसको मुखमें डालकर हलके हाथसे जैसे कफको स्पर्शकरे इसप्रकार कंठको सिरावै इसप्रकार भीतर बाहरसे कंठकोसिराय वमनकरावे ॥ ६७ ॥ ६८ ॥

अथ वमनेऽनधिकारिणः।

नवामनीयस्तिमिरीनगुल्मीनोदरीकृशः।
नातिवृद्धोगर्भिणीचनस्थूलोनक्षतातुरः ॥ ६९ ॥

अर्थ--वमनके अयोग्य तिमिररोगी गुल्मरोगी उदररोगी कृश वृद्ध गर्भिणी स्थूल क्षत आतुरको वमन न करावे ६९॥

मदार्त्तोबालकोरूक्षःक्षुधितश्चनिरूहितः।
उदावर्त्त्यूर्द्ध्वरक्तीचदुश्छर्द्यःकेवलानिली ॥ ७० ॥
एतेप्यजीर्णव्यथितावाम्यायेविषपीडिताः।
कफव्याप्ताश्चतेवाम्यामधुकक्काथपानतः ॥ ७१ ॥
अजीर्णपीतपानीयंव्यायामंमैथुनंतथा।
स्नेहाभ्यंगान्प्रकोपंचदिनैकंवर्जयेत्सुधीः ॥ ७२ ॥

अर्थ--मदपीडित बालक रूक्ष भूखा निरूहबस्तिदिया हुआ उदावर्तरोगी जिसके नाक इत्यादि ऊर्ध्वद्वारोंसे रक्त

निकलता होय केवल वातरोगी या छर्दि किये हुए या अजीर्ण से व्यथित इनको वमन न करावे और जो यह करै तो अजीर्ण और विषपीडित मनुष्यको वमन करावे जो कफसे व्याप्त हैं उनको मधुकाथका पान कराकर वमन करावे अजीर्ण करने-वाले भारी पदार्थ शीतलपानी दण्ड कसरत मैथुन देहमें मालिस करना तथा क्रोधकरना यह सब कर्म जिसदिन वमनकारी औषधि ले उस दिन त्यागदे ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥

अथ विरेचनविधिः ।

स्निग्धस्विन्नस्यवांतस्यदद्यात्सम्यग्विरेचनम् ।
बहुपित्तोमृदुःप्रोक्तोबहुश्लेष्माचमध्यमः ॥ ७३ ॥
बहुवातःक्रूरकोष्ठोदुर्विरेच्यःसकथ्यते ।
जीर्णज्वरीगरव्याप्तोवातरक्तीभगंदरी ॥ ७४ ॥
अर्शःपांडूदरग्रंथिहृद्रोगारुचिपीडिताः ।
योनिरोगप्रमेहार्त्तगुल्मप्लीहव्रणार्दिताः ॥ ७५ ॥
विद्रधिच्छर्दिविस्फोटविषूचीकुष्ठसंयुताः ।
कर्णनासाशिरोवक्त्रगुदमेढ्रामयान्विताः ॥ ७६ ॥

अर्थ-प्रथम स्नेहपानसे स्निग्ध और स्वेदनसे स्विन्न और वमनसे वान्तमनुष्यको रेचन देना, जो मनुष्य पित्ताधिक है वह मृदु (जिसका कोठा कोमल है) जो कफाधिक है सो मध्यकोष्ठ और जो वाताधिक है सो कठिनकोष्ठ है इनको कठिनतासे रेचन होताहै. जीर्ण ज्वरसे व्याप्त विषसे व्याप्त वातरक्त भगंदर, रोगसे युक्त अर्शरोगी पाण्डुरोगी उदररोगी ग्रंथिरोग अरुचि योनिरोग प्रमेह—

सश्लेष्मवातपीडायांसक्षीरंमदनंपिबेत् ।
अजीर्णेकोष्णपानीयंसिंधुंपीत्वावमेत्सुधीः ॥६७॥
वमिनंपाययित्वातुजानुमात्रासनेस्थितम् ।
कंठमेरण्डनालेनस्पृशेत्तंवामयेद्भिषक् ॥ ६८ ॥

अर्थ--तथा कफवायुकी पीडा होय तो मैनफलके चूर्णको दूधमें डालकर पिवै तो वमन होनेसे प्राणीका अजीर्ण दूर हो मनुष्यको वमन कारक औषधी देकर थोडे ऊंचे आसनपर बैठावै और अंडकी नालको लेकर उसको मुखमें डालकर हलके हाथसे जैसे कफको स्पर्शकरे इसप्रकार कंठको सिरावै इसप्रकार भीतर बाहरसे कंठको सिराय वमनकरावे ॥ ६७ ॥ ६८ ॥

अथ वमनेऽनाधिकारिणः ।

नवामनीयस्तिमिरीनगुल्मीनोदरीकृशः ।
नातिवृद्धोगर्भिणीचनस्थूलोनक्षतातुरः ॥ ६९ ॥

अर्थ--वमनके अयोग्य तिमिररोगी गुल्मरोगी उदररोगी कृश वृद्ध गर्भिणी स्थूल क्षत आतुरको वमन न करावै६९॥

मदार्त्तोबालकोरूक्षःक्षुधितश्चनिरूहितः ।
उदावर्त्त्यूर्द्ध्वरक्तीचदुश्छर्द्यःकेवलानिली ॥ ७० ॥
एतेप्यजीर्णव्यथितावाम्यायेविषपीडिताः ।
कफव्याप्ताश्चतेवाम्यामधुकक्वाथपानतः ॥ ७१ ॥
अजीर्णपीतपानीयंव्यायामंमैथुनंतथा ।
तैलाभ्यंगान्प्रकोपंचदिनैकंवर्जयेत्सुधीः ॥ ७२ ॥

र्थ--मदपीडित बालक रूक्ष भूखा निरूहबस्तिदिया उदावर्तरोगी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

निकलना होय केवल वातरोगी या छर्दकिये हुए या अजीर्णसे व्यथित इनको वमन न करावे और जो यह कहे तो अजीर्ण और विषपीडित मनुष्यको वमन करावे जो कफसे व्याप्त हैं उनको मधुकाथका पान कराकर वमन करावे अजीर्ण करनेवाले भारी पदार्थ शीतलपानी दण्ड कसरत मैथुन देहमें मालिस करना तथा क्रोधकरना यह सब कर्म जिसदिन वमनकारी औषधि ले उस दिन त्यागदे ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥

अथ विरेचनविधिः ।

स्निग्धंस्विन्नम्यवांतम्यदद्यात्सम्यग्विरेचनम् ।
बहुपित्तोमृदुःप्रोक्तोबहुश्लेष्माचमध्यमः ॥ ७३ ॥
बहुवातःक्रूरकोष्ठोदुर्विरेच्यःसकथ्यते ।
जीर्णज्वरीगरव्याप्तोवातरक्तीभगंदरी ॥ ७४ ॥
अर्शःपांडूदरग्रंथिहृद्रोगारुचिपीडिताः ।
योनिरोगप्रमेहार्त्तगुल्मप्लीहव्रणार्दिताः ॥ ७५ ॥
विद्रधिच्छर्दिविस्फोटविषूचीकुष्ठसंयुताः ।
कर्णनासाशिरोवक्रगुदमेढ्रामयान्विताः ॥ ७६ ॥

अर्थ-प्रथम स्नेहपानसे स्निग्ध और स्वेदनसे स्विन्न और वमनसे शान्तमनुष्यको रेचन देना, जो मनुष्य पित्ताधिक है वह मृदु (जिसका कोठा कोमल है) जो कफाधिक है सो मध्यकोष्ठ और जो वाताधिक है सो कठिनकोष्ठ है इनको कठिनतासे रेचन होताहै. जीर्ण ज्वरमें व्याप्त जिसमें [illegible] व्याप्त [illegible] भगंदर युक्त अर्शरोगी पाण्डुरोगी [illegible]रोगी [illegible] योनिरोग [illegible]

सश्लेष्मवातपीडायांसक्षीरंमदनंपिबेत्।
अजीर्णंकोष्णपानीयंसिंधुंपीत्वावमेत्सुधीः ॥६७॥
वमिनंपाययित्वातुजानुमात्रासनेस्थितम्।
कंठमेरण्डनालेनस्पृशेत्तंवामयेद्भिषक् ॥ ६८ ॥

अर्थ–तथा कफवायुकी पीडा होय तो मैनफलके चूर्णको ... में डालकर पिवै तो वमन होनेसे प्राणीका अजीर्ण दूर ... मनुष्यको वमन कारक औषधी देकर गोडे ऊंचे आस... बैठावे और अंडकी नालको लेकर उसको मुखमें ... कर हलके हाथसे जैसे कफको स्पर्शकरे इसप्रकार ... को सिरावे इसप्रकार भीतर बाहरसे कंठकोसिराय करावे ॥ ६७ ॥ ६८ ॥

अथ वमनेऽनधिकारिणः।

...वामनीयस्तिमिरीनगुल्मीनोदरीकृशः।
...तिवृद्धोगर्भिणीचनस्थूलोनक्षतातुरः ॥ ६९ ॥

...–वमनके अयोग्य तिमिररोगी गुल्मरोगी उदररोगी ... वृद्ध गर्भिणी स्थूल क्षत आतुरको वमन न करावे६९॥

...र्तोबालकोरूक्षःक्षुधितश्चनिरूहितः।
...वर्त्यूर्द्ध्वरक्तीचदुश्छर्द्यःकेवलानिली ॥ ७० ॥
...यजीर्णव्यथिताचाम्यायेविषपीडिताः।
...व्याताश्वतेचाम्यामधुकक्काथपानतः ॥ ७१ ॥
...र्णपीतपानीयंव्यायाममैथुनंतथा।
...यंगान्प्रकोपंचदिनेकंवर्जयेत्सुधीः ॥ ७२ ॥

...दपीडित बालक रूक्ष भूखा निरूहबस्तिदिया ...वर्तरोगी जिसके नाक इत्यादि ऊर्ध्वद्वारोंसे रक्त

निकलता होय केवल वातरोगी वा छर्द्दकिये हुए वा अजीर्ण से व्यथित इनको वमन न करावे और जो यह कहे तो अजीर्ण और विषपीडित मनुष्यको वमन करावे जो कफसे व्याप्त हैं उनको मधुक्काथका पान कराकर वमन करावे अजीर्ण करने-वाले भारी पदार्थ शीतलपानी दण्ड कसरत मैथुन देहमें मालिस करना तथा क्रोधकरना यह सब कर्म जिसदिन वमनकारी औषधि ले उस दिन त्यागदे ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥

अथ विरेचनविधिः ।

स्निग्धंस्विन्नस्यवांतस्यदद्यात्सम्यग्विरेचनम् ।
बहुपित्तोमृदुप्रोक्तोबहुश्लेष्माचमध्यमः ॥ ७३ ॥
बहुवातःक्रूरकोष्ठोदुर्विरेच्यःसकथ्यते ।
जीर्णज्वरीगरव्यातोवातरक्तीभगंदरी ॥ ७४ ॥
अर्शःपांडूदरग्रंथिहृद्रोगारुचिपीडिताः ।
योनिरोगप्रमेहार्त्तगुल्मप्लीहव्रणार्दिताः ॥ ७५ ॥
विद्रधिच्छर्दिविस्फोटविषूचीकुष्ठसंयुताः ।
कर्णनासाशिरोवक्रगुदमेढ्रामयान्विताः ॥ ७६ ॥

अर्थ-प्रथम स्नेहपानसे स्निग्ध और स्वेदनसे स्विन्न और वमनसे वांतमनुष्यको रेचन देना, जो मनुष्य पित्ताधिक है वह मृदु (जिसका कोठा कोमल है) जो कफाधिक है सो मध्यकोष्ठ और जो वाताधिक है सो कठिनकोष्ठ है इसको कठिनतासे रेचन होताहै. जीर्ण ज्वरसे व्याप्त विषसे व्याप्त वातरक्त भगन्दर, रोगसे युक्त अर्शरोगी पाण्डुरोगी

सश्लेष्मवातपीडायांसक्षीरंमदनंपिवेत्।
अजीर्णकोष्णपानीयंसिंधुंपीत्वावमेत्सुधीः ॥६७॥
वमिनंपाययित्वातुजानुमात्रासनेस्थितम्।
कंठमेरण्डनालेनस्पृशेत्तंवामयेद्भिषक् ॥ ६८ ॥

अर्थ-तथा कफवायुकी पीडा होय तो मैनफलके चूर्णको दूधमें डालकर पिवे तो वमन होनेसे प्राणीका अजीर्ण दूर हो मनुष्यको वमन कारक औषधी देकर थोड़ ऊंचे आसनपर बैठावे और अंडकी नालको लेकर उसको मुखमें डालकर हलके हाथसे जैसे कफका स्पर्शकरे इसप्रकार कंठको सिरावे इसप्रकार भीतर बाहरसे कंठकोसिरायवमनकरावे ॥ ६७ ॥ ६८ ॥

अथ वमनेऽनधिकारिणः।

नवामनीयस्तिमिरीनगुल्मीनोदरीकृशः।
नातिवृद्धोगर्भिणीचनस्थूलोनक्षतातुरः ॥ ६९ ॥

अर्थ-वमनके अयोग्य तिमिररोगी गुल्मरोगी उदररोगी कृश वृद्ध गर्भिणी स्थूल क्षत आतुरको वमन न करावे६९॥

मदार्त्तोबालकोरूक्षःक्षुधितश्चनिरूहितः।
उदावर्त्त्यूर्द्ध्वरक्तीचदुश्छर्द्यःकेवलानिली ॥ ७० ॥
एतेप्यजीर्णव्यथितावाम्यायेविषपीडिताः।
कफव्याप्ताश्चतेवाम्यामधुकक्काथपानतः ॥ ७१ ॥
अजीर्णपीतपानीयंव्यायामंमैथुनंतथा।
स्नेहाभ्यंगान्प्रकोपंचादिनेकंवर्जयेत्सुधीः ॥ ७२ ॥

अर्थ-मदपीडित बालक रूक्ष भूखा निरूहयस्तिदिया हुआ उदावर्तरोगी जिसके नाक इत्यादि ऊर्ध्वद्वारोंसे रक्त

निकलता होय केवल वातरोगी वा छर्दकिये हुए वा अजीर्ण से व्यथित इनको वमन न करावे और जो यह कहे तो अजीर्ण और विषपीडित मनुष्यको वमन करावे जो कफसे व्याप्त है इनको मधुकाथका पान कराकर वमन करावे अजीर्ण करनेवाले भारी पदार्थ शीतलपानी दण्ड कसरत मैथुन देहमें मालिस करना तथा क्रोधकरना यह सब कर्म जिसदिन वमनकारी औषधि ले उस दिन त्यागदे ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥

अथ विरेचनविधिः ।

स्निग्धंस्विन्नस्यवांतस्यदद्यात्सम्यग्विरेचनम् ।
बहुपित्तोमृदुप्रोक्तोबहुश्लेष्माचमध्यमः ॥ ७३ ॥
बहुवातःक्रूरकोष्ठोदुर्विरेच्यःसकथ्यते ।
जीर्णज्वरोगरव्याप्तोवातरक्तीभगंदरी ॥ ७४ ॥
अर्शःपांडूदरग्रंथिहृद्रोगारुचिपीडिताः ।
योनिरोगप्रमेहार्त्तगुल्मप्लीहव्रणार्दिताः ॥ ७५ ॥
विद्रधिच्छर्दिविस्फोटविषूचीकुष्टसंयुताः ।
कर्णनासाशिरोवक्त्रगुदमेढ्रामयान्विताः ॥ ७६ ॥

अर्थ-प्रथम स्नेहपानसे स्निग्ध और स्वेदनसे स्विन्न और वमनसे वान्तमनुष्यको रेचन देना, जो मनुष्य पित्ताधिक है वह मृदु (जिनका कोठा कोमल है) जो कफाधिक है सो मध्यकोष्ठ और जो वाताधिक है सो कठिनकोष्ठ है इसको कठिननामसे रेचन होताहै. जीर्ण ज्वरसे व्याप्त विषसे व्याप्त वातरक्त भगन्दर रोगसे युक्त अर्शरोगी ......

सश्लेष्मवातपीडायांसक्षीरंमदनंपिबेत्।
अजीर्णेकोष्णपानीयंसिंधुंपीत्वावमेत्सुधीः ॥६७॥
वमिर्नपाययित्वातुजानुमात्रासनेस्थितम्।
कंठमेरण्डनालेनस्पृशेत्तंवामयेद्भिषक् ॥ ६८ ॥

अर्थ–तथा कफवायुकी पीडा होय तो मैनफलके चूर्णको दूधमें डालकर पिवे तो वमन होनेसे प्राणीका अजीर्ण दूर हो मनुष्यको वमन कारक औषधी देकर घोटू ऊंचे आसनपर बैठावे और अंडकी नालको लेकर उसको मुखमें डालकर हलके हाथसे जैसे कफको स्पर्शकरे इसप्रकार कंठको सिरावे इसप्रकार भीतर बाहरसे कंठकोसिराय वमनकरावे ॥ ६७ ॥ ६८ ॥

अथ वमनेऽनधिकारिणः।

नवामनीयस्तिमिरीनगुल्मीनोदरीकृशः।
नातिवृद्धोगर्भिणीचनस्थूलोनक्षतातुरः ॥ ६९ ॥

अर्थ–वमनके अयोग्य तिमिररोगी गुलमरोगी उदररोगी कृश वृद्ध गर्भिणी स्थूल क्षत आतुरको वमन न करावे६९॥

मदार्त्तोबालकोरूक्षःक्षुधितश्चनिरूहितः।
उदावर्त्त्यूर्द्ध्वरक्तीचदुश्छर्दःकेवलानिली ॥ ७० ॥
एतेप्यजीर्णव्यथितावाम्यायेविषपीडिताः।
कफव्याप्ताश्चतेवाम्यामधुकक्काथपानतः ॥ ७१ ॥
अजीर्णेपीतपानीयंव्यायामंमैथुनंतथा।
स्नेहाभ्यंगान्प्रकोपंचदिनैकंवर्जयेत्सुधीः ॥ ७२ ॥

अर्थ–मदपीडित बालक रूक्ष भूखा निरूहवस्तिदिया हुआ उदावर्तरोगी जिसके नाक इत्यादि ऊर्ध्वद्वारोंसे रक्त

निकलना होय केवल वातरोगी या छर्द किये हुए या अजीर्ण से व्यथित इनको वमन न करावे और जो यह करे तो अजीर्ण और विषपीडित मनुष्यको वमन करावे जो कफसे व्याप्त हैं उनको मधुकाथका पान कराकर वमन करावे अजीर्ण करनेवाले भारी पदार्थ शीतलपानी दण्ड कसरत मैथुन देहमें मालिस करना तथा क्रोधकरना यह सब कर्म जिसदिन वमनकारी औषधि ले उस दिन त्यागदे ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥

अथ विरेचनविधिः।

स्निग्धंस्विन्नस्यवांतस्यदद्यात्सम्यग्विरेचनम् ।
बहुपित्तोमृदुःप्रोक्तोबहुश्लेष्माचमध्यमः ॥ ७३ ॥
बहुवातःक्रूरकोष्ठोदुर्विरेच्यःसकथ्यते ।
जीर्णज्वरीगरव्याप्तोवातरक्तीभगंदरी ॥ ७४ ॥
अर्शःपांडूदरग्रंथिहृद्रोगारुचिपीडिताः ।
योनिरोगप्रमेहार्त्तगुल्मप्लीहव्रणार्दिताः ॥ ७५ ॥
विद्रधिच्छर्दिविस्फोटविषूचीकुष्ठसंयुताः ।
कर्णनासाशिरोवक्त्रगुदमेढ्रामयान्विताः ॥ ७६ ॥

अर्थ-प्रथम स्नेहपानसे स्निग्ध और स्वेदनसे स्विन्न और वमनसे वांतमनुष्यको रेचन देना, जो मनुष्य पित्ताधिक है वह मृदु (जिसका कोठा कोमल है) जो कफाधिक है सो मध्यकोष्ठ और जो वाताधिक है सो कठिनकोष्ठ है उसको कठिनतासे रेचन होताहै. जीर्ण ज्वरसे व्याप्त विषसे व्याप्त वातरक्त भगन्दर रोगसे युक्त अर्शरोगी पाण्डुरोगी ग्रंथरोगी हृद्रोग अरुचि योनिरोग प्रमेहसे व्याप्त गुल्म प्लीह व्रणसे युक्त विद्रधि छर्दि विस्फोटक विषूचिका कुष्ठ कर्ण नासिका शिर मुखगुद मेढ्र रोगसंयुक्त॥७३॥७४॥७५॥७६॥

[illegible] ।
[illegible] ॥ ६७ ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥ ६८ ॥

अर्थ–जब कफवायुकी पीडा होय तो मैनफलके चूर्णको दूधमें डालकर पिवै तो वमन होनेसे [illegible] तो मनुष्यको वमन कारक औषधी देकर घोडे ऊँचे आसनपर बैठावै और अंडकी नालको लेकर उसको दुधमें डालकर हलके हाथसे जैसे कफको स्पर्शकरे इसप्रकार कंठको सिरावे इसप्रकार भीतर बाहरसे कंठकोतिराय वमनकरावै ॥ ६७ ॥ ६८ ॥

अथ वमनेऽनधिकारिणः ।

नवामनीयस्तिमिरीनगुल्मीनोदरीकृशः ।
नातिवृद्धोगर्भिणीचनस्थूलोनक्षतातुरः ॥ ६९ ॥

अर्थ–वमनके अयोग्य तिमिररोगी गुल्मरोगी उदररोगी कृश वृद्ध गर्भिणी स्थूल क्षत आतुरको वमन न करावे६९॥

मदार्त्तोबालकोरूक्षःक्षुधितश्चनिरूहितः ।
उदावर्त्त्यूर्द्ध्वरक्तीचदुश्छर्द्यःकेवलानिली ॥ ७० ॥
एतेप्यजीर्णव्यथितावाम्यायेविषपीडिताः ।
कफव्याप्ताश्चतेवाम्यामधुकक्वाथपानतः ॥ ७१ ॥
अजीर्णपीतपानीयंव्यायाममैथुनंतथा ।
स्नेहाभ्यंगान्प्रकोपंचदिनैकंवर्जयेत्सुधीः ॥ ७२ ॥

अर्थ–मदपीडित बालक रूक्ष भूखा निरूहबस्तिदिया हुआ उदावर्तरोगी जिसके नाक इत्यादि ऊर्ध्वद्वारोंसे रक्त

निकलता होय केवल वातरोगी वा छर्दकिये हुए वा अजीर्ण से व्यथित इनको वमन न करावे और जो यह कहें तो अजीर्ण और विषपीडित मनुष्यको वमन करावे जो कफसे व्याप्त हैं उनको मधुकाथका पान कराकर वमन करावे अजीर्ण करने-वाले भारी पदार्थ शीतलपानी दण्ड कसरत मैथुन देहमें मालिस करना तथा क्रोधकरना यह सब कर्म जिसदिन वमनकारी औषधि ले उस दिन त्यागदे ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥

अथ विरेचनविधिः।

स्निग्धंस्विन्नस्यवांतस्यदद्यात्सम्यग्विरेचनम्।
बहुपित्तोमृदुप्रोक्तोबहुश्लेष्माचमध्यमः ॥ ७३ ॥
बहुवातःक्रूरकोष्ठोदुर्विरेच्यःसकथ्यते।
जीर्णज्वरोगरव्याप्तोवातरक्तीभगंदरी ॥ ७४ ॥
अर्शःपांडूदरग्रंथिहृद्रोगारुचिपीडिताः।
योनिरोगप्रमेहार्त्तगुल्मप्लीहव्रणार्दिताः ॥ ७५ ॥
विद्रधिच्छर्दिविस्फोटविषूचीकुष्ठसंयुताः।
कर्णनासाशिरोवक्त्रगुदमेढ्रामयान्विताः ॥ ७६ ॥

अर्थ-प्रथम स्नेहपानसे स्निग्ध और स्वेदनसे स्विन्न और वमनसे वातमनुष्यको रेचन देना, जो मनुष्य पित्ताधिक है वह मृदु (जिसका कोठा कोमल है) जो कफाधिक है सो मध्यकोष्ठ और जो वाताधिक है सो कठिनकोष्ठ है उसको कठिनतासे रेचन होताहै. जीर्ण ज्वरसे व्याप्त विषसे व्याप्त वातरक्त भगन्दर रोगसे युक्त अर्शरोगी पाण्डुरोगी ग्रंथरोगी हृद्रोग अरुचि योनिरोग प्रमेहसे व्याप्त गुल्म प्लीह व्रणसे युक्त विद्रधि छर्दि विस्फोटक विषूचिका कुष्ठ कर्ण शिर मुखगुद मेढ् रोगसंयुक्त॥७३॥७४॥७५॥७६॥

प्लीहशोथाक्षिरोगार्त्ताःकृमिक्षारानिलार्दिताः।
शूलिनोमूत्रघातार्त्ताविरेकार्हानरामताः॥ ७७॥

अर्थ--प्लीह शोथ अक्षिरोगसे व्याकुल कृमि क्षार अनिल रोगसे अर्दित शूलवाले मूत्राघातरोगसे युक्त यह विरेचनके योग्य मनुष्यहैं ॥ ७७ ॥

मरिचंपिप्पलीशुण्ठीपथ्याधात्रीविभीतकम्।
विडंगंमुस्तकंचैलापत्रमेकैकटंककम् ॥ ७८ ॥
लवंगंटंकदशकंखाङ्धिटंकमितात्रिवृत्।
एषांचूर्णेऽशीतिटंकमितांदद्यात्सितांसिताम् ॥७९॥
आख्ययाभिमतंचूर्णमितंप्रातस्तुभक्षयेत्।
विरेचनमिदंश्रेष्ठमामशुद्धिकरंपरम् ॥ ८० ॥

अर्थ--काली मिरच पीपल सोंठ हरड बहेडा आमला वायविडंग नागरमोथा इलायची पत्रज यह एकएक टंकले लोंग दशटंक और निसोत ७० टंक इनसब वस्तुओंका चूर्णकर उसमें अस्सी टंक मिश्री मिलावे यह आख्यानामक चूर्ण जो प्रातःकाल भक्षणकरे तो इसके शीघ्र विरेचन होताहै और यह परमशुद्धि करनेवालाहै ७८॥७९॥८०॥

अभयामरिचंशुण्ठीविडंगामलकानिच।
पिप्पलीपिप्पलीमूलंत्वक्पत्रंमुस्तमेवच ॥ ८१ ॥
एतानिसमभागानिदन्तीचत्रिगुणाभवेत्।
त्रिवृताष्टगुणाज्ञेयाषड्गुणाचसिताभवेत् ॥ ८२ ॥
मधुनामोदकान्कृत्वाकर्षमात्रान्प्रमाणतः।
एकैकंभक्षयेत्प्रातःशीतंचानुपिबेज्जलम् ॥ ८३ ॥

अर्थ--हरड कालीमिरच सोंठ वायविडंग आमला पीपल पीपलामूल तज पत्रज मोथा यह सब भा[illegible]

दन्तीमूल तीनभाग निसोत आठभाग मिश्री छःभाग इनके शहदद्वारा एकएक तोलेके मोदक बनावै प्रातःकाल एकएक भक्षणकरे और ऊपरसे ठंडा पानी पिये ॥८१॥८२ ॥ ८३ ॥

तावद्विरिच्यतेजंतुर्यावदुष्णंनसेवते ।
पानाहारविहारेषुभवेन्नियंन्त्रितःसदा ॥ ८४ ॥
विषमज्वरमंदाग्निपांडुकासभगंदरान् ।
विदाहप्लीहमेहांश्चयक्ष्माणंनयनामयान् ॥ ८५ ॥
वातरोगांस्तथाध्मानंमूत्रकृच्छ्राणिचाश्मरीम् ।
पृष्ठपार्श्वोरुजघनंजानूदररुजजयेत् ॥ ८६ ॥
सततंशीततादोषपलितानिप्रणाशयेत् ।
अभयामोदकाह्येतेरसायनमनुत्तमम् ॥ ८७ ॥

अर्थ-तबतक विरेचन होता रहैगा जबतक उष्ण जलका पान न करे, पान आहार और विहारमें सदा नियन्त्रित रहै विषमज्वर मन्दाग्नि पाण्डु कास भगन्दर विदाही प्लीहा प्रमेह यक्ष्मारोग नेत्ररोग वातरोग आफरा मूत्रकृच्छ्र पथरी पृष्ठपार्श्व ऊरु जंघा जानु उदररोग निरन्तर शीतता पलित इनको यह अभयामोदक दूर करते हैं यह उत्तम रसायन है ॥ ८४-८७॥

शंभोर्वीजंसटंकंबलिमरिचयुतंशृंगवेरंचतुल्यं
योज्यंनेकुंभवीजंसमशिखिसहितंमर्दितंयामगेकम्।
भुक्तंगुंजाद्रिमात्रंशिशिरजलयुतंत्यक्ततत्त्वमुच-
रिच्छाभेदीरसोयंप्रबलमलहरःसर्वरोगैकहर्त्ता ८८

अर्थ-शुद्ध पारा सुहागा गंधक कालीमिरच यह सब बराबरले और सोंठभी बराबर भागले तथा जमालगोटेके बीज और चित्रक यह इनकी बराबर लेकर एक पहरतक खरल करे, यह एक रत्ती शीतल जलके साथ सेवन करे जबतक

अन्नजलका सेवन न करे मयूरक विरेचन होगा. यह इच्छाभेदीरस प्रबल मलका हरनेवाला तथा सब रोगोंका हरनेवाला है ॥ ८८ ॥

जेपालेनसमःसूतव्योषटंकणगंधकैः ।
नाराचःस्याद्रसोमाषमात्रःसर्पिःसितायुतम् ॥८९॥
हन्तिसंग्रहमानाहमामशूलंनवज्वरम् ।
बलाज्वरंविरेकेणशीतलांबुनिषेवणात् ॥ ९० ॥

अर्थ-शोधे जमालगोटेकी बराबर पारा और सोंठ मिर्च पीपल सुहागा गन्धक यह सब बराबर लेकर खरल करे यह नाराचरस है. एक मासा घृत और मिश्रीके साथ सेवन करे तो संग्रहणी आनाह शूल नवीन ज्वरको दूर करता है. बलाज्वरमें विरेचनके शीतल जलसे सेवन करे ॥ ८९ ॥ ९० ॥

अथ परिभाषा ।

नमानेनविनायुक्तिर्द्रव्याणांजायतेक्वचित् ।
अतःप्रयोगकार्यार्थंमानमत्रोच्यतेमया ॥ ९१ ॥
मानंचद्विविधंप्रोक्तंकालिंगंमागधंतथा ।
कालिंगान्मागधंश्रेष्ठमितिमानविदोविदुः ॥ ९२ ॥

अर्थ-परिमाणके विना औषधोंकी युक्ति कहीं नहीं होती इस कारण औषधि बनानेके लिये तोल आदिकी विधि वर्णन करते हैं. एक कालिंग और एक मागध देशके भेदसे दो प्रकारकी तोल है. कलिंगसे मागध श्रेष्ठ है ऐसा मान जाननेवाले कहते हैं ॥ ९१ ॥ ९२ ॥

त्रसरेणुर्बुधैःप्रोक्तस्त्रिंशतापरमाणुभिः ।
त्रसरेणोस्तुपर्यायैर्नाम्नावंशीनिगद्यते ॥ ९३ ॥

जालांतरगतैः सूर्यकरैर्वंशी विलोक्यते ।
षड्वंशीभिर्मरीचिः स्यात्ताभिः षड्भिश्च राजिका ९४
तिसृभी राजिकाभिश्च सर्षपः प्रोच्यते बुधैः ।
यवोऽष्टसर्षपैः प्रोक्तो गुंजा स्यात्तच्चतुष्टयम् ॥ ९५ ॥
षड्भिश्च गुंजिकाभिः स्यान्माषको हेमधान्यको ।
माषैश्चतुर्भिः शाणः स्याद्धरणो निष्क इत्यपि ॥ ९६॥

अर्थ-तीस परिमाणुका एक त्रसरेणु होता है इसी त्रसरेणुका पर्याय वंशी कहते हैं, झरोखोंमें सूर्यकी किरण पडनेसे जो बडे बारीक कण धूरिके दीखते हैं वह वंशी कहते हैं. छः वंशीकी एक मरीचि (जो रेतली जमीनमें धूरिके बारीक कण सूर्यकी किरणोंसे चमकते हैं) छः मरीचिकी राई और तीन राईकी एक सरसों होती है, आठ सरसोंका एक यव चार जौकी एक चौंटली(रत्ती) छः रत्तीका एक मासो उसको हेम और धान्यक कहते हैं, चार मासेका शाण उसको धरण और निष्क कहते हैं ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥

र्तस्तद्द्वयं कोल उच्यते ।
क्षणः निगद्यते ॥ ९७ ॥
णिमानिका ।
श्चतिन्दुकम॥९८॥
मता ।

शुक्तिभ्यांचपलंज्ञेयंमुष्टिराम्रंचतुर्थिकाम् ॥
प्रकुंचःपोडशीबिल्वपलमेवप्रकीर्त्यते ॥ १ ॥
पलाभ्यांप्रसृतिर्ज्ञेयाप्रसृतंचनिगद्यते ।
प्रसृतिभ्यामंजलिःस्यात्कुडवोर्द्धशरावकम् ॥ २

अर्थ–उसीको टंकभी कहते हैं. दो टंकका एक कोल होताहै इसको क्षुद्रभ वटक और द्रंक्षणभी कहतेहैं (बेरकी बराबर होनेसे इस तोलकी कोल संज्ञा रक्खीहै) दो कोलक एक कर्ष होताहै उसको पाणिमानिका अक्ष पिचु पाणितल किंचित्पाणि तिन्दुक बिडालपदक षोडशिला करमध्य हंसपदक सुवर्ण कवलग्रह उदुम्बर यह सब कर्षके पर्यायहैं. कर्षका एक अर्द्धपल उसीको शुक्ति और अष्टमिका कहतेहैं दो शुक्तिका एकपल उसीको मुष्टि आम्र और चतुर्थिका प्रकुंच षोडशी और बिल्व (बेलका फल) यह पलके पर्याय हैं दो पलकी एक प्रसृति (फैली हुई उंगलियोंवाली) हथेली और प्रसृत होतीहै दो प्रसृतिकी एक अंजली और उसीको कुडव(पावसेर)और अर्धशराव कहतेहैं॥९७–१०२॥

अष्टमानंचसंज्ञेयंकुडवाभ्यांचमानिका ।
शरावोष्टपलंतद्वज्ज्ञेयमत्रविचक्षणैः ॥ ३ ॥
शरावाभ्यांभवेत्प्रस्थश्चतुःप्रस्थैस्तथाढकम् ।
भाजनंकांसपात्रंचचतुःषष्टिपलंचतत् ॥ ४ ॥
चतुर्भिराढकैर्द्रोणःकलशोनल्वणोन्मनौ ।
उन्मानश्चघटोराशिर्द्रोणपर्यायसंज्ञकः ॥ ५ ॥
द्रोणाभ्यांशूर्पकुंभौचचतुःषष्टिशरावकाः ।
शूर्पाभ्यांचभवेद्द्रोणीवाहागोणीचसाम्मता ॥ ६ ॥

अर्थ–और अष्टमानभी कहते हैं. दो कुडवकी एक मानिका होतीहै उसको शराव और अष्ट पलभी कहते हैं एकशरावके १२८ टंक होते हैं दो शरावका १ प्रस्थ (सेर) होताहै चार प्रस्थका एक आढक होताहै उसको भाजन कांसपात्रभी कहते हैं, यह ६४ पलका होताहै चार आढकका एक द्रोण होताहै उसको कलश नल्वण उन्मान घट (घडा) और राशिभी कहतेहैं दो द्रोणका शूर्प होताहै उसको कुंभ कहते हैं शूर्पके ६४ शराव होते हैं दो शूर्पकी द्रोणी होती है उसको वाह और गोणीभी कहतेहैं ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥

खारीप्रमाणम् ।

द्रोणीचतुष्टयंखारीकथितासूक्ष्मबुद्धिभिः ।
चतुःसहस्रपलिकापण्णवत्यधिकाचसा ॥ ७ ॥

अर्थ–चार द्रोणीकी एक खारी होतीहै उसके ४०९६ पल होतेहैं ॥ ७ ॥

भारतुलापरिमाणम् ।

पलानांद्विसहस्रंचभारएकःप्रकीर्तितः ।
तुलापलशतंज्ञेयासर्वत्रैवेपनिश्चयः ॥ ८ ॥
मापटंकाक्षबिल्वानिकुडवःप्रस्थमाढकम् ।
राशिर्गोणीखारिकेतियथोत्तरचतुर्गुणाः ॥ ९ ॥

अर्थ–२००० पलका एक भार होताहै १०० पलकी एक तुला यह केवल मगध देशमें नहीं किन्तु सब देशमें इसी मोलका निश्चय जानना. माससे लेकर खारी पर्यन्त दूसरी मोल चौगुनी जाननी जैसे चार मासेका १ शाण टंकका एक कर्ष चार कर्षका एक बिल्व चार बिल्वकी एक अंजली चार अंजलीका एक प्रस्थ चार प्रस्थका एक आढक चार आढककी एक राशि चार राशिकी एक गोणी चार गोणीकी एक खारी इसप्रकार एकसे दूसरी चौगुनी जाने ८।९.

कलिंगपरिभाषाकेतोल।

यवोद्वादशभिर्गौरसर्षपैःप्रोच्यतेबुधैः ।
यवद्वयेनगुंजास्यात्रिगुंजोवल्लउच्यते ॥११०॥
माषोगुंजाभिरष्टाभिःसप्तभिर्वाभवेत्कचित् ।
स्याच्चतुर्माषकैःशाणःसनिष्कष्टंकएवच ॥ ११ ॥
गद्याणोमाषकैःषड्भिःकर्षःस्याद्दशमाषकः ।
चतुष्कर्षैःपलंप्रोक्तंदशशाणमितंबुधैः ।
चतुष्पलैश्चकुडवंप्रस्थाद्याःपूर्ववन्मताः ॥ १२ ॥

अर्थ-बारह सफेद सरसोंका एक यव दो यवकी एक रत्ती (गुंजा) तीन रत्तीका एक वल्ल (कहीं दो रत्तीका होता है) आठ रत्तीका १ मासा (कहीं सात रत्तीका-भी होता है) चार मासेका १ शाण उसको निष्क और टंकभी कहते हैं, छःमासेका एक गद्याणक दश मासेका एक कर्ष होता है चार कर्षका एक पल उसपलके दश शाण होते हैं चार पलका एक कुडव होता है और प्रस्था दिकी तोल मागधपरिभाषाके समान जाननी ११०-११२

अजीर्णखण्ड।

अजीर्णप्रभवारोगास्तदजीर्णंचतुर्विधम् ।
आमंविदग्धविष्टब्धंरसाजीर्णंचतुर्थकम् ॥ १३ ॥

अर्थ-मनुष्योंको अजीर्ण होनेसे रोग उत्पन्न होते हैं वह चार प्रकारका है आम विदग्ध विष्टब्ध और रसाजीर्ण १३॥

आमेचोष्णोदकंपेयंदग्धेचोदरस्वेदनम् ।
विष्टब्धेरेचनंचैवशयनंरसशेषके ॥ १४ ॥

अर्थ-आमाजीर्णमें तत्ता जल पिये [illegible]

घृताजीर्णेदिनेपंचतैलेद्वादशकस्तथा ।
तिथिसंख्यापयस्युक्तादधिजेविंशतिस्तथा ॥ १५ ॥

अर्थ-घीका अजीर्ण पांचदिनमें पचताहै तेलका बारह दिनमें दूधका पन्द्रह दिनमें और दहीका बीस दिनमें पकताहै॥

पिष्टान्नंसलिलेप्रियालुफलजेपथ्याहितामासजे
खण्डंक्षीरभवेत्तुतक्रमुचितंकोष्णाम्बुकालिंगजे ॥
मत्स्यंचूतफलेत्वजीर्णशमनंमध्वम्बुपानात्यय
तैलेपुष्करजेकटुप्रशमनंशेषांस्तुबुद्ध्याजयेत ॥ १६ ॥

अर्थ-रोटी पूरीके अजीर्णमें जलका पीना हित है खिरनीके अजीर्णमें हरड खाय उदरके अजीर्णमें खांड दूधके अजीर्णमें छाछ नरबूजके अजीर्णमें तत्ताजल मछलीके अजीर्णमें आम चूसना, मद्यके अजीर्णमें शहद मिला जल कमलगट्टेके खानेमें सरसोंका तेल पिये शेष अजीर्णको वैद्य अपनी बुद्धिसे दूर करै ॥ १६ ॥

उष्णोदकंघृताजीर्णेतैलाजीर्णेचकांजिकम् ।
गोधूमेकर्कटीश्रेष्ठाकदल्याम्रफलेघृतम् ॥ १७ ॥

अर्थ-घीके अजीर्णमें गरम जल तेलके अजीर्णमें कांजी गेहूंके अजीर्णमें ककडी कदलीके अजीर्णमें आम्रफल खाय

दाडिमामलकतालतिन्दुकीबीजपूरलवलीफलानिच ॥
बाकुलंफलमतीवपाचयेत्पाकमेतिबकुलंस्वमूलतः १८

अर्थ-अनार आमली तालफल तिन्दुकी बिजौरा आमला इनके अजीर्णमें मौलसिरिके फल खाने चाहियें मौलसिरिके अजीर्णमें मौलसिरिके फल खानेसे पाचन होताहै १८

आम्रातकोदुम्बरपिप्पलीनांफलानिचप्लक्षवटादिकानां
निशीथपथ्यंपिनोदकेनसौवर्चलेनाम्रफलस्यपाकम् १९

अर्थ-आम्रातक गूलर पीपल पाकर यह इनके फल खानेसे अजीर्णमें सोंठको पीसकर पीना योग्य है आमके अजीर्णमें सेंधानोंन खाय ॥ १९ ॥

गोधूममाषौहरिमंथमुद्गौयवासतीनांकिलवोनिहन्ति ॥
यन्मातुलुंगीफलमेतिपाकंक्षणेनसोयंलवणानुभावः २०

अर्थ-गेहूं उड़द चना मूंग जौ मटर इनका अजीर्ण हो तो धतूरेके रससे और बिजोरेका रस सेंधनोंनसे दूर होताहै ॥ २० ॥

नागरंहरतिबिल्वजांववंपाचयेन्मधुरिकाकपित्थजम् ।
सर्वथैवसकलामनिहंत्रीप्रीतयेग्निजननीगदितासा २१॥

अर्थ-बेलफल तथा जामुनके अजीर्णको सोंठ पचाती है कैथके अजीर्णको सोंफ पचाती है यह विशेषकर सब औषधियोंको पचाती है व्याधिनाशक और अग्निवर्द्धकहै॥२१॥

पिशितपनसयोःस्यादाम्रबीजेनपाकः
कृशरमहिषपयोपित्क्षीरयोःसैंधवेन ॥
चिपटपरिणतिःस्यात्पिप्पलीदीप्यकाभ्या
मपहरतितुपाम्बुर्द्वैदलानामजीर्णम् ॥ २२ ॥

अर्थ-मांस और कठहरका अजीर्ण आमकी गुठलीसे नष्ट होताहै उड़द तिल चावलके मिलानेसे खिचड़ी होतीहै भैंसका दूध इनका परिपाक सेंधेनमकसे होता है चिरवाका अजीर्ण पीपल और अजवायनसे नष्ट होताहै और दो दलका अन्न मूंग उड़दआदिका अजीर्ण कांजीसे नष्ट होताहै ॥ २२ ॥

कर्पूरपूगीफलनागवल्लीकाश्मीरजातीफलजातिकोपे ।

अर्थ-कर्पूर पूगीफल सुपारी ताम्बूल केशर जायफल जावित्री कस्तूरी बहेडा नारियल इनका अजीर्ण समुद्र फेनसे दूर होता है ॥ २३ ॥

श्यामाकनीवारकुलत्थषष्टि-
निष्पावकंगुर्दधिमण्डकस्तु ॥
चिंचाकुलत्थौतिलतैलयोगो
जटाब्दनादस्यनिहन्त्यथाभ्रम् ॥ २४ ॥

अर्थ-सनविया तिन्नी कुल्थी साठीचावल वनमूंग कंगनी इनका अजीर्ण दहीके मट्ठेसे दूर होता है इमली कुल्थीका अजीर्ण तिलके तेलसे आमका अजीर्ण चौलाई की जडसे नष्ट होता है ॥ २४ ॥

कशेरुशृंगाटमृणालमृद्वाखर्जूरखंडाह्वापिनागेण ॥
पलाशभस्मांबुतथारजोवारसोनिहन्याद्रसमिक्षुजातम्।

अर्थ-कसेरू सिंघाडे कमलका कन्द दाख खजूर खांड इनका अजीर्ण सोंठसे नष्ट होताहै गन्नेका अजीर्ण ढाककी राखको पानीमें मिलाकर पीनेसे नष्ट होता है ॥ २५ ॥

किमत्रचित्रंबहुमांसमत्स्यभोजीसुखीस्यात्परिपीतमूल-
इत्यद्भुतंकेवलवह्निपक्वमांसेनमत्स्यःपरिपाकमेति २६।

अर्थ-बहुतमांस और मच्छी खानेवाला पुरुष मद्यपान करनेसे सुखी रहता है यह आश्चर्य नहीं है परन्तु केवल आंचसे भुनेमांससे मच्छीका अजीर्ण पचता है यह बड़ा आश्चर्य है ॥ २६ ॥

शाकानिसर्वाण्यपियान्तिपाकंक्षारेणसर्वाण्तिलनालजेन
पंचूर्णमिद्धार्थकवास्तुकानांगायत्रिसारक्वथितेनपाकः॥

अर्थ-सब सागमात्रका अजीर्ण तिलके खारसे नाश हो

ताहै और चुका सरसों बथुआ इनके खानेसे प्रगट अजीर्ण खैरसारके काढेसे परिपाक होय ॥ २७ ॥

पटोलवंशांकुरकारवेल्लीफलान्यलाबूनित्रहूनिजग्ध्वा ॥
क्षारोदकंत्रह्मतरोर्निपीयनोक्तःपुनर्वाञ्छतितावदेव ॥२८

अर्थ-परवल बांसकी कोंपल मीठी तूंबी इनके अजीर्णमें पालाश ढाकके खारको जलमें पीनेसे तत्काल परिपाक हो और उसी समय उतनेही भोजन करनेकी फिर इच्छा होती है ॥ २८ ॥

विपच्यतेसूरणकोगुडेनतथालुकंतंदुलतोयपानात् ।
जम्बीरनीरेणनिशारसेनसुस्तेनचूर्णपरिपाकमेति २९.

अर्थ-जिमीकंदका अजीर्ण गुडसे आलूका चावलोंके धोवनसे हलदीका जंभीरीके रससे लहसनका मोथेके चूर्णसे पचे २९॥

लवणंतंदुलपेयात्सर्पिजंबीरवारिणाचपचेत् ॥
मरिचादपितत्पाकंशीघ्रंयात्येवकांजिकात्तैलम् ॥ ३०॥

अर्थ-लवण तंदुलके पीनेसे घृतका अजीर्ण जम्बीरीके जलसे और कालीमिर्चसेभी इसका पाक होजाताहै कांजीसे तेल पच जाता है ॥ ३० ॥

रसान्नंजीर्यतिव्योपखंडनागरभक्षणात् ।
फलानिसकलान्याशुयवक्षारात्पचन्तिहि ॥
मद्यंरसान्नवासाचहरिमंथेनजीर्यति ॥ ३१ ॥

अर्थ-रसान्न त्रिकुटेसे, खांडका अजीर्ण सोंठ भक्षणसे तथा सब प्रकारके फलोंका अजीर्ण जवाखारसे नष्ट होता है मद्यरसान्नका अजीर्ण अडूसा और हरिमन्थ चनेसे दूर होता है ॥ ३१ ॥

उष्णेनशीतंशिशिरेणचोष्ण-
मम्लेनचक्षारगणोगुणाय ।

स्नेहेनतीक्ष्णंत्रमनातियोगे
सिताहितास्यादितिकाश्यपोक्तिः ॥
स्निग्धेपुरूक्षंचतदध्यनेन
स्निग्धंचरूक्षेणचपाकमेति ॥ ३२ ॥

अर्थ-सरदीके रोग गरम औषधीसे नष्ट होते हैं और गरमीके शीतल औषधीसे नष्ट होते हैं सब खार खट्टी वस्तुसे गुणकारक होती है तीखी मिर्चआदिवस्तु घी तेल आदिसे गुणकारक होय और वमन करता वस्तुका अवगुण मिश्रीसे शान्त होताहै. स्निग्ध पदार्थोंके अजीर्णमें रूखे और रूखोंके अजीर्णमें स्निग्ध प्रयोगकरे ॥ ३२ ॥

ततंततंहेमवातारमग्नौतोयेक्षितंक्षितमंभस्तुतच्च ।
पीत्वाजीर्णंतोयपानंनिहन्यात्
चित्राक्षाद्रंभद्रमुस्तंविशेषात् ॥ ३३ ॥

अर्थ-सुवर्ण अथवा चांदीको वारंवार तपाकर जलमें बुझावे इस जलके पीनेसे बहुत दिनका अजीर्ण जाय अथवा चीता शहद और भद्रमोथा सेवनकरे तो अजीर्ण जाय ३३॥

ताम्बूलजग्धास्थितचूर्णकेनसंदह्यतेयस्यमुखंनरस्य ।
तैलेनवाकेवलकांजिकेनसुखायगंडूपमसौविदध्यात् ३४

अर्थ-जिस मनुष्यका मुख पान खातेही जलने लगे अथवा चूने और कत्थेसे फटजाय वह तेल अथवा सिरकेसे कुल्ला करे तो आराम हो ॥ ३४ ॥

इत्यजीर्णकुलकंडनोगणोनूनमाहमुनिरत्रिसंभवः ।
सम्यगेनमधिगम्ययोजयेन्नक्वचित्स्खलतिजातुतत्त्ववित्

इति श्रीगोस्वामिकेशवानंदभट्टविरचिते वैद्यरत्ने समाप्तोऽयं सप्तमः प्रकाशः ।

अर्थ–इस प्रकार यह अजीर्णकुलका नाशक गण वर्णन किया यह आत्रेयने कहा है जो इसको अच्छी प्रकार जान कर प्रयोग करता है वह तत्त्ववित् किसीप्रकार धोखा नहीं खासक्ता है और रोगोंको जीतता है ॥ ३९ ॥

इति श्रीस्वामिशिवानंदभट्टविरचिते वैद्यरत्ने पण्डितज्वालाप्रसाद–कृतभाषाटीकायां सप्तमः प्रकाशः ॥ ७ ॥

॥ समाप्तोऽयं ग्रंथः ॥

दोहा ।

सम्वद्गुणशरअंकविधु, ज्येष्ठशुक्लगुरुवार ।
तिथिअष्टमीपुनीतअति, पूर्ण्योतिलकविचार ॥१॥
धन्वन्तरिआदिकमहा, सिद्धनकोशिरनाय ।
वैद्यरत्नटीकासकल, भाषालिख्योबनाय ॥ २ ॥
सरितरामगंगानिकट, नगरमुरादाबाद ।
तहांरहतहरिभजनरत, द्विजज्वालापरसाद ॥ ३ ॥
सेठशिरोमणिजगविदित, खेमराजगुणखान ।
तिनकेहितटीकाकियो, सारभूतसुखदान ॥ ४ ॥
नारायणकोसुमरिये, भजियेसीताराम ।
दूरकरहिंभवरोगजो, सिद्धकरहिंसबकाम ॥ ५ ॥

शुभमस्तु ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेंकटेश्वर" छापाखाना–बम्बई.